बाजीराव पेशवा

लेखक
रामनिवास शर्मा

प्रकाशक कृष्ण जनसेवी एण्ड को०,
दाऊजी मंदिर,
बीकानेर–334001

प्रथम संस्करण 1992

मूल्य 70.00 रुपये

मुद्रक जनसेवी प्रिंटर्स
दाऊजी रोड, बीकानेर

पुरावाक्

ससार का रहस्यमय प्राणी मनुष्य अपनी महत्वाकांक्षाओ को अपने अन्तस्थल की गहराइयों म पोषित करता रहता है। उसके हर कार्य गतिविधि म इसी महत्वाकाक्षा को पुष्पित–पल्लवित करने की चाह प्रत्यक्ष नही तो प्रच्छन्न रूप म अवश्य रहती है।

अपनी महत्वाकाक्षाओ की पूर्ति हेतु मनुष्य सदव आदर्श का लबादा ओढ कर समाज को अपनी योग्यता व क्षमता स उद्वेलित कर लक्ष्य की ओर अग्रसर करता है। समाज असख्य बलिदान देता है किन्तु सफलता प्राप्ति पर व्यक्ति विजय का सहरा स्वय बाधता है।

हर सफल महत्वाकाक्षी व्यक्ति के लिए कहा जा सकता है कि वह बाहर स जितना साफ-सुथरा व सहज है उतना ही वह अन्तर मे रहस्यमय। उसकी महत्वाकाक्षाओं की कोई सीमा नही होती उसी के अनुरूप ही उसके विचार भावनाएँ कल्पनाएँ, आदश व सिद्धान्त होत हैं। वह अहर्निश अपनी कामना-पूर्ति म लगा रहता है। उसकी हर सफलता म दम्भ

पुरावाक्

संसार का रहस्यमय प्राणी मनुष्य अपनी महत्वाकांक्षाओं को अपने अन्तस्थल की गहराइयों मे पोषित करता रहता है। उसके हर कार्य गतिविधि मे इसी महत्वाकांक्षा को पुष्पित-पल्लवित करने की चाह प्रत्यक्ष नही तो प्रच्छन्न रूप म अवश्य रहती है।

अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति हेतु मनुष्य सदैव आदर्श का लबादा ओढ़ कर समाज को अपनी योग्यता व क्षमता से उद्वेलित कर लक्ष्य की ओर अग्रसर करता है। समाज असंख्य बलिदान देता है किन्तु सफलता प्राप्ति पर व्यक्ति विजय का सेहरा स्वयं बांधता है।

हर सफल महत्वाकांक्षी व्यक्ति के लिए कहा जा सकता है कि वह बाहर से जितना साफ-सुथरा व सहज है उतना ही वह अन्तर मे रहस्यमय। उसकी महत्वाकांक्षाओं की कोई सीमा नहीं होती उसी के अनुरूप ही उसके विचार भावनाएँ कल्पनाएँ आदर्श व सिद्धान्त होते हैं। वह अहर्निश अपनी कामना-पूर्ति म लगा रहता है। उसकी हर सफलता मे [illegible]

झलकता है जो वाणी से प्रकट न होकर दृष्टि व अधरो के मद स्मित व माध्यम से प्रकट होता है और मानव मन की सवेदनाओं को छूता है इसे परिभाषित नहीं किया जा सकता। सफलता की इस राह म वह हर प्रकार के उचित अथवा अनुचित साधना को अपना माध्यम बना लेता है। चाहे वह अशोक हो या अकबर औरगजेब हो या शिवाजी सभी कमोबेश अपने लक्ष्य प्राप्ति के लिए इसी धुरी के इर्द–गिर्द परिक्रमा करते परिलक्षित होते हैं।

दक्षिण विजय की महत्वाकाक्षा ने ही औरगजेब को मृत्यु पर्यन्त युद्धो म व्यस्त रखा। इसी के फलस्वरूप तीस वर्षों तक निरन्तर युद्ध की विभीषिका से जूझने के पश्चात जब वह उत्तर की ओर लौटा तब तक वह शारीरिक व मानसिक रूप से जजर हो चुका था। दक्षिण भारत वीरान था। अकाल और मौत की विभिषिका उसका घर थी। मृत्यु का ताडव थमा नहीं था।

शाहू के मुगल कद से मुक्त होने पर महाराष्ट्र के गृह कलह के अधकार म एक आशा की किरण फूटती दिखाई दी। समस्त महाराष्ट्र ने उनका हार्दिक स्वागत किया। शाहू का विश्वास जीतने वाले थे बालाजी विश्वनाथ। विश्वनाथ की मृत्यु के पश्चात् सन् 1720 ई म उसके पुत्र बाजीराव ने पेशवा पद सम्भाला।

बाजीराव एक स्वस्थ, सुदर्शन योग्य एव प्रतिभा सम्पन्न नवयुवक था। उसने शिवाजी के स्वप्न को साकार करने का सकल्प लिया।

राजनीति की शतरज पर किश्त सह और मात के क्रम म बडे-बडे मोहरो पर विजय प्राप्त की। बाजीराव राजनीति म ही सिद्ध हस्त नहीं अपितु तलवार का भी पूर्ण धनी था। इसी बाजीराव के जीवन मे एक अनिंद्य सौन्दर्य की प्रतिमूर्ति का आगमन हुआ। बुन्देलखण्ड युद्ध के पश्चात्। जो उसके जीवन के अंतिम क्षणो तक प्रेरणा का स्पन्दन बना रहा। महाराष्ट्र राज्य के विस्तार के साथ गुजरात, मालवा, बुन्देलखण्ड इलाहाबाद से सरदेशमुखी व चौथ की वसूली ही नहीं बल्कि दिल्ली के लाल किले को मराठा सवारो की टापो से गुंजायमान करके मुगल मनसबदारो शहजादो

का पराभव करने के मूल मे यही प्रेरणा विद्यमान थी। राजपूतो से मित्रता करने की कूटनीति में इसी सौंदय ने अपनी सक्रिय भूमिका निभाई थी।

किन्तु अप्रतिम सौंदय की प्रतिमूर्ति एव विलक्षण प्रतिभा की धनी मस्तानी एव बाजीराव की भी क्लियोपट्रा व हेलन के समान नियति होनी थी, सो होकर रही। फास्टस न कहा था–

Sweet Helen made me lmortal with a kiss ...

.... and allıs dross that ıs not Helen

बाजीराव की यही ल्लक मस्तानी के प्रति उसक अंतिम क्षणा तक रही।

मैं सभी सहयोगिया का आभारी हू जिहोंने इस उपन्यास को आपके समक्ष प्रस्तुत करने म प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप स सहयोग दिया। श्री कृष्ण जनसेवी क निरन्तर अथक प्रयासो स ही यह उपन्यास इतना शीघ्र प्रकाशित होकर सुधि पाठको तक पहुच सका।

सव श्री डा० बाबूलाल शर्मा, वद्य श्रीवल्लभ थानवी, मखनलाल व्यास का आभार प्रकट करता हू जिनके सक्रिय सहयाग से मैं कृतकाय हो सका।

इस उपन्यास की सफलता का मूल्याकन मैं विज्ञ पाठको पर ही छोडता हू।

गणतन्त्र दिवस
1992

–रामनिवास शर्मा

समपण

पराशक्ति मे विलीन
उनको जिन्होंने यह ज्योतिमय
जीवन प्रदान किया ।

अनन्त यात्रा

'कौन ?'

'बुन्देला ।

"किधर जा रहे हो ?

पेशवा से मिलने"

'ठहर जाओ ।"

बुंदेला घोड़े की लगाम खींच ही नहीं पाया, उसके पहले ही मराठा सैनिकों से घिर गया । चारों ओर भाले तान कर मराठा सैनिक खड़े थे । उन में से एक सरदार आगे बढ़कर कड़कती आवाज में बोला– सच सच बता किसने भेजा है । घोड़े की सांस जोर जोर से चलरही थी । बुन्देले के सरपर गहरी थकान थी । लम्बा मार्ग तय करते हुए आ रहा था । होठ सूख रहे थे । थूक गिटता हुआ बोला–

महाराज छत्रशाल का हरकारा हूं ।

इसका प्रमाण

बुंदेला कभी झूठ नहीं बोलता

फिर भी

कमर से खांडा निकालकर सामने किया । गहरे अंधकार में भी खांडा चमक रहा था । मूठ पल पलाट कर रही थी । महाराज छत्रशाल का निशान चमक रहा था ।

"ठीक है। उतरो"– यह कहता सरदार आग चलने का उपक्रम करने लगा। निरूपाय बुन्देला घोड से उतर पड़ा। घोडे की लगाम पकडे पकडे पीछे चलने लगा। सैनिक माले ताने साथ साथ चलने लगे। घोड़े पर लम्बा माग तय करने के कारण बुंदेले के घुटने अकड गये थे। झटका देकर चलने लगा।

सरदार पीछे मुडकर बोला– ऐसी क्या विपत्ति आ पडी कि रात को ही पेशवा से मिलना जरूरी है।

महाराज छत्रशाल पर विपत्ति का पहाड टूट पड़ा है तभी उनका खरीता लेकर आया हू और जल्दी से जल्दी पंडित पेशवा महाराज से मिलकर जबानी अर्ज भी करना चाहता हू।

हू'

मिगसर का महिना अंधेरी ठंडारात ठंडी डाफर बाजे थी। आकाश तारो से खचाखच भरा था। ऐसा महसूस हो रहा था 2–1 दिन पहले थोडी बूदा बांदी हुई है आकाश साफ सुथरा। दूर दूर तक फला हुआ जगल उसासें भर रहा था डाफर मे भारीपन था। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि कल गहरी धवर पडगी और दोपहर तक आकाश साफ नहीं होगा सब एक पतली डगर पर चल रहे थ घोड की खुडताल मौन थी। मिट्टी सिली थी। पत्थर की ठोकर रात्रि की निस्तब्धता को भग कर देती थी। परो से टूटती लकडिया की चट चट की आवाज सुनाई देती थी। जगल में सेना फली हुई थी। जगह जगह जगरे जल रहे थ। कुछ सवार चारो ओर बठ थ कुछ सो रहे थे। धूआं उठता हुआ टड के मार से वापस नीचे धरती पर आ रहा था और सनिको की आखो म जाकर पानी के साथ वापस बाहर निकल रहा था।

एक पौर चलने से रावटी पीछे रह गये। सरदारो के डेरा के पास होता हुआ छावनी के बाजार का पसवाडे छाडता हुआ खास पायगो की छावनी के पास आ गया। पायग नगी तलवारें लिये खडे थे। धूणी

जगरहा थी । घूणी मे जलती गीली लकडी धूम्रा फला रही थी । छाया को अपनी ओर आती देखकर सैनिक बोला–

'कौन ?'

मराठा"

'इस समय ?'

"महाराज छत्रशाल का हरकारा आया है ।"

'ठीक है ।"

पास आने के बाद उसने हरकारे को देखा– छत्रशाल का निशान देखा व उस दूसरे पायगे के साथ आगे जाने दिया और घोडे की लगाम अन्य सनिक को दी । उनको वापस जाने को कहा । बुन्देले ने मन मे साचा कि रात को आने मे कितनी कठिनाई है । जगह जगह पूछ-ताछ की जाती है और फिर आगे जाने के लिए माग मिलता है । लगमग दा सौ कदम चले होंगे । सामने बहुत सारे सैनिक खडे दिखाई दिए । उनमे से एक बोला–

'कौन ?'

खास पायगा"

'निशान"

आकाश को चीरती हुई एक सीटी मारी ।"

आगे आवो"

सब पास मे आ गये तब उसने पूछा"

इस समय ?"

'महाराज छत्रशाल का हरकारा आया है ।

'सुबह मिला देंगे'

बुन्देला ने मन म साचा सारा श्रम व्यथ जायेगा । हाथ जोडकर बोला– महाराज ने खरीता भेजा है । उनपर बडी आफत आई है । खाण्डा

खोलकर सामने किया । निशान देखकर सरदार ने अपने साथी की ओर इशारा किया और बोला– 'सो गये होंगे सुबह मिला देंगे।"

नहीं आप अभी देखिए । बुन्देला अपनी बुक्तरी में से परवाने को बत्ती निकालता हुआ बोला– 'आपही इसे पन्तिजी के पास पहुंचा दीजिए । बाद में जैसा आदेश हो वैसा ही कर लीजिए।" ठीक है, चलो।' यह कहता हुआ सरदार अपने दो साथियों को लेकर आगे बढ़ा।

तम्बू तने हुए थे। फाटक के पास रक्षक खड़े थे। तम्बू में कनात लगाकर बैठक सलाह मशवीर का स्थान सोने का कमरा आदि बनाये हुए थे। फाटक पर परदा लगा हुआ था। एक मशालची पास में खड़ा था। सरदार को देखकर रास्ता बनाया। सरदार अन्दर गया और थोड़े समय के बाद वापस आया। इशारा करके छत्रशाल के हरकारे को पास बुलाकर बैठक का परदा उठाकर अन्दर ले गया। सामने समई जल रही थी। नीले *मखमल की गद्दी ऊपर बाजीराव बैठा था। सफेद बगलबन्दी से झाँकता* सौष्ठव गौरवर्ण चमक रहा था। ललाट पर केसर के त्रिपुण्ड से रेखाओं के उभरने मिटने से एक आध पपडी नीचे गिर पडती थी। रतनारी आंखों में लालिमा दौड़ रही थी। कसीजती हुई भृकुटी दृढ़ निश्चय का संकेत दे रही थी। क्रोध पर नियन्त्रण रखता हुआ पेशवा खरीते का उत्तर लिखवा रहा था। चिटनिस उत्तर लिखता जा रहा था। परों पर पड़ी रेशमी चादर पळपळाट कर रही थी।

बुन्देला ने दो कदम आगे बढ़कर आधा झुक कर जमीन को छूता हुआ मुजरा किया और विनीत वाणी में अरज की– महाराज छत्रसाल का यह जीवन मरण का प्रश्न है। उन्होंने कहा है कि–

> *जो गति गज ग्राह की सो गति जानहु आज ।*
> बाजी जात बुन्देल की राखो बाजी राव ॥"

यह ता उनका बडप्पन है। वे हमार पूजनीय हैं।" चिटनिस की ओर देखता हुआ क्रोध म भरकर बाजीराव बोला— "यह खरीता अभी का अभी महाराज छत्रसाल के पास भिजवाओ और हरकारे के साथ कहलवाओ कि मैं आपकी सवा मे हाजिर हो रहा हू—" हरकार की ओर देखकर कहा— इसक आराम की व्यवस्था करा।" हरकारा मुजरा करता हुआ पीछे चला और तम्बू स बाहर निकल गया।

चिटनिस न खरीत का गात कर लाह की मुगली मे डालकर थैली मे ब द किया मोहर लगाकर महाराज छत्रसाल के पास पहुचान का आदेश थोड समय तक बाजीराव ऊहापोह म रहा फिर निश्चिय कर कहा— भ्राता को लिखा कि इन्दौर म ठहरने स काम नही चलगा। मैं बुन्देलखण्ड जा रहा हू। मेरे से सम्पर्क रखें और पीछे रहन का प्रयास करें।' चिटनिस न खरीता तयार करक पडित चिमनाजी अप्पा को भिजवाने की व्यवस्था कर दी।

पडित बाजीराव उठ कर तम्बू म घूमने लगा। रशमीशाल बा बार कध स फिसलकर नीचे आने लगा। कानो की बालियो के मोती व लाल चमकत जा रह थे। जसे सात्विक विचारा म क्रोध की रेखा का मिश्रण हो। परो म गो क खाल की मोचडी चू चरमर चू चरमर कर रही थी। पेशवा क अस्थिर विचारो की सूचक थी। ललाट पर पसीन की बू दें छाने लगी। त्रिपुण्ड कही कही से गाला हाने लगा। जस गरजते हुए बादल फुआर बिखेर रहे हो। बाजीराव थोड समय तक अस्थिर विचारा को घूम घूम कर स्थिरता का जामा पहनाकर वापस बठका पर बठता हुआ बोला— सरदारा को बुलाओ।

चिटनिस के ताली बजाते ही द्वारपाल हाजिर हुआ और मुजरा करन लगा। चिटनिस का आदेश सुनकर खड परो ही वापस बाहर गया और पिलाजी जाधव, नारो सकर, तुको पवार मल्हार राव होल्कर को बुलाने के लिए हरकारा को भेजा।

भोरछा मंदिर टूटने से बुन्देलखण्डवासी और अधिक उत्तेजित हो गये। इस घटना आग में घी का काम किया। आम आदमी छत्रसाल को हिन्दू धर्म का रक्षक मानने लगा। मुगलों के विरोधी छत्रसाल के पास आने लगे। छोटे-छोटे ठाकुर छत्रसाल अधिक व सनिक सहयोग अपनी रक्षा करने के लिए देने लगे। छत्रसाल का प्रभाव बढ़ने लगा। छत्रसाल जगह जगह मुगलों की सेना को पराजित करके अपने राज्य का विस्तार करने लगे।

महाराजा छत्रसाल की 1671 से विजय यात्रा शुरू हुई। महाराजा छत्रसाल कुशल योद्धा ही न थे साथ सफल राजनीतिज्ञ भी थे। उन्होंने पराजित सामन्तों को उनकी जागीरें वापस लौटाकर पारिवारिक रिश्ते कायम किये। इसमें छत्रसाल को बहुत बड़ा लाभ हुआ कि पराजित सामन्त ठाकुर जागीरदार पराजय भ्रम से मुक्त होकर स्नेही सम्बन्धी बन गये। युद्ध में सेना के भीवाण रहते। हरावल सम्भालते। धवरी सिरोज के हाकिमों को पराजित कर मुगलों के थाने हटा दिए। मऊ पर विजय प्राप्त करके अपना अमर थाना वहीं स्थापित किया। इस थाने से उत्तर और दक्षिण पर निगरानी रखी जाने लगी। बाम पर अधिकार करके बशवराय को युद्ध में मारकर उसके बेटे को वहां का राजा बनाकर दोस्ती करली। इस पारिवारिक व दोस्ताना ताल्लुकातों से रेस नामवरी भी मिलने लगी और सनिक शक्ति भी बढ़ गई। रुहुल्लाखां जब इलाहाबाद का फौजदार बना तो उसने गढ़ा और कोटा पर धावा बोल दिया। छत्रसाल उन दिनों में वहीं पर थे। दो दिन लड़ाई घमासान हुई परन्तु तीसरी रात को रुहुल्लाखां हारकर भाग गया।

महाराज छत्रसाल का प्रभाव दिन दूना और रात चौगुना बढ़ने लगा और औरंगजेब को जब इस हार की जानकारी मिली उसने वापस रुहेलखां को पुनः छत्रसाल पर आक्रमण करने भेजा। बसिया के पास भयंकर लड़ाई हुई परन्तु अचानक बारूद में आग लग जाने के कारण रुहेलखां जल

गया। उसकी सेना भाग छूटी। इस विजय से उत्साहित होकर छतरसाल ने ओरछा पर अधिकार कर लिया। गौढा के राजा को हराकर महाराजा छतरसाल ने पन्ना को अपनी राजधानी बनाई और मऊ को सेना का मुख्यालय रखा।

इस विजय से महाराजा छतरसाल बुंदेलखण्ड के प्रभावशाली राजा हो गये और मुगल सेना की अपराजिता की साख खत्म हो गई। बुंदेलखण्ड के सनिक मुगल सेना छोडकर छतरसाल की सेना म आ मिले। एक सदी तक यह खेल चलता रहा। हारकर औरगजेब ने छतरसाल का बुन्देलखण्ड की मनसबदारी देकर शान्ति स्थापित की। औरगजेब ने छतरसाल को राजा की उपाधि दी। चार हजार मनसबदारी का पद दिया। औरगजेब की मृत्यु पयन्त महाराजा छतरसाल उसके मनसबदार रहे और उसकी मृत्यु के बाद महाराजा छतरसाल अपने राज्य का विस्तार करन लगे। मुगल घराने म बादशाह बनने की ख्वाहिश से झगडा शुरू हो गया। मौका देखकर छतरसाल कभी मुगलो के मनसबदार बन जात और कभी विद्रोह करके अपने राज्य की सीमा बढाने म लग जाते। इस प्रकार छतरसाल की शक्ति दिनो-दिन बढती गई। दो साल तक सेना की तयारी करके दरबार से और अधिक सहयोग का आश्वासन प्राप्त करके मुहम्मद बगस बुन्देलखण्ड पर आक्रमण की योजना बनाने लगा।

षड्यन्त्र

जब सारी योजना बनगई तब एक रात अपने सलाहकारों की गुप्त बैठक की। रात के समय उसके सलाहकार श्री रहमतखां मुबारकदीन का बड़ा लड़का अकबरखां महल के नीचे तहखाने में एकत्रित हुए। उस दिन अंधेरी रात थी। सुरक्षा की कड़ी व्यवस्था थी। महल के खुले चौक में बरामदे था। बरामदा में कमरा के फाटक खुले थे। जिस कमरे में रात दिन अर्जीनवीस बैठना था उसके पिछाड़ी एक अलमारी थी जो कि तहखाने में जाने का फाटक था। हथियार बन्द चौकीदार थे। एक-एक करके सब चुपचाप अन्दर चले गये। तहखाना अन्दर से किसी महल से कम नहीं था। गद्दर लगे हुए थे। सामने गिदवे के सहारे मुहम्मद बंगस बैठा था। लोबान की सुगन्ध तहखाने में फैल रही थी। छोटी सी चिराग प्रकाश कर रही थी। हर आनेवाला मुजरा करके पास में बैठ जाता था। रकाबी में पान की गिल्लारियाँ पड़ी थी। भारी शरीर रौबदार चेहरा दाढ़ी में झांकते सफेद बाल। पानकी गिल्लोरी को धीरे धीरे चबा रहा था। रहमतखां का योजना बनाने में खास हाथ था, इस कारण वह बंगस के दाहिने हाथ की तरफ बैठा था। "मुबारकदीन घुड़ सवार सेना के साथ साथ चले" रहमतखां ने कहा– जब हमारी सेना यमुना को भरूघाट से नदी पार कर बुन्देलखण्ड की सीमा में प्रवेश करे तब तक छत्रसाल को धावे की सूचना न मिले। आप लोग पीछे से घूमकर जमुना का पार करें। मुबारकदीन ने कहा "छत्रसाल बुढ़े हो गये हैं"

औरंगजेब की मृत्यु के बाद दिल्ली दरबार मे लफडे होने लगे। कभी कोई बादशाह बनता कभी कोई। अन्त मे मुहम्मद शाह का राज्य स्थिर हुआ। मौका देख के महाराजा छत्रसाल एक जडाऊ जमधर और एक हाथी बादशाह मुहम्मदशाह को भेंट दिया। इससे मुगलो के साथ छत्रसाल के मधुर सम्बन्ध शुरू हो गये। दिल्ली दरबार होठो से मधुर था परन्तु कलेजे मे कटार थी। बादशाह मुहम्मद अवसर का इन्तजार करने लगा।

बुन्देलखण्ड इलाहाबाद की सूबेदारी मे था। लम्बे समय तक दिल्ली सल्तनत गृह-कलह मे उलझी रही उसका फायदा उठाकर महाराजा छत्रसाल ने बुन्देलखण्ड को इलाहाबाद की सूबेदारी से अलग करके एक स्वतन्त्र सूबेदारी की नीव डाली।

इसी समय नवकूटी मारवाड का राजा और भरतपुर का जाट राजा चूडामन विद्रोह कर उठे। इस विद्रोह का लाभ उठाने के लिए दिल्ली सल्तनत ने मुहम्मद बंगश को इलाहाबाद की सूबेदारी दी। सवाई जयसिंह और मुहम्मद बंगश ने मिलकर दो बरसो के अन्दर-अन्दर उसको पराजित करके मुगल सल्तनत का ताबेदार बना दिया। मुहम्मद बंगश बुन्देलखण्ड की भौगोलिक स्थिति से परिचित था। बंगश चालाक और अवसरवादी था। बंगश यह कैसे सहन कर सकता था कि उसकी सूबेदारी के परगनो पर किसी दूसरे का अधिकार हो। बंगश ने इस विजय का लाभ उठाकर दिल्ली दरबार से बुन्देलखण्ड पर आक्रमण करने की स्वीकृति प्राप्त करली। दिल्ली दरबार मे बंगश का प्रभाव बढने से इरानी मनसबदार उसके विरोधी हो गये थे। सवाई जयसिंह का भी उनको सहयोग था। दिल्ली दरबार के कुछ मनसबदार मुहम्मद बंगश की बढती इज्जत को गर्दिश मे देखना चाहते थे। छत्रसाल एक योगी की तरह रहने लगे थे। हरि भजन करते थे। शाहबजादे हिरदेशाह और जगतशाह मे राज्य बाट दिया था। हिरदेशाह पन्ना मे रहता था और पूर्वी भाग की निगरानी करता। जगतशाह

जतपुर म रहता भौर पश्चिमी भाग की निगरानी करता। दोना का भापसो सम्बन्ध भच्छा नही था । मोहम्मद बगस ने कहा– यह बात बिलकुल ठोक है। वजीर कमरुद्दीन का भी सरीता भिजवादें कि वह मुगल बादशाह की भोर स बुन्देलखण्ड के राजाभ्रा को परवाने भिजवादें कि सुरदार मुहम्मद दगस बुन्देलखण्ड पर धावा मारने भा रहे हैं। सभी सरदार उसकी मदद करें। 10 मन बारूद भौर 10 मन सीसा तथा 15 रहकला शीघ्र ही मऊघाट की भोर रवाना करदें। भकबर खा भौर रहमन खा रात क प्रथम प्रहर में इलाहाबाद स चुपचाप रवाना हो जावें।

मोहम्मद बगस की सना ने तेजी स बुन्देलखण्ड की भार बढते हुए जतपुर को घर लिया। रास्त म जगह जगह युद्ध होते रह परन्तु बगस की विशाल सना क सामन बुन्देलखण्ड की सेना हतप्रभ होती गई भौर पीछ हटती गई। भौर भन्त म जतपुर क किले मे बन्द हो गई। तब तक वर्षा ऋतु भा गई। बरसात होते ही जतपुर की जमीन पानी से भर गई। पाच माह तक बरसात होती रही। बगस का सुरग लगान का मौका नही मिला। बारूद गिली हो गई। किसी प्रकार कही सुरग लगात तो सुरग फूटती नही। या सुरग का बारूद गीला निकलता। विषम परिस्थिति देखकर बगस किले को घर कर महाराज छत्रसाल पर दबाव बनाये रखा। बरसात के दिनो में छत्रसाल का मुशी दुर्गसिह किसी प्रकार किले मे निकल कर थोडी सी सेना इकट्ठी करके बगस की सेना पर रात को छापा मारने लगा। इसस परेशान होकर बगस ने भपने लडके को उसे दबाने के लिए भेजा। दुर्गासिह काफी चतुर था। वह रातो-रात जतपुर से निकल कर जगला म छिपता छिपता जतपुर स काफी दूर निकल गया। भकबरखां भी उसके पीछे पीछे चलता रहा।

बगस इस विषय स फूल उठा। घमण्ड व भ्रात्मश्लाघा स भर परवाना भिजवाय दिया कि जतपुर पर अधिकार हो गया है। छत्रसाल परिवार सहित बन्दी है। हुकम हो तो उसे दिल्ली दरबार मे हाजिर कर दू।

दिल्ली दरबार उठा पटक से भरा था। वजीर कमरुद्दीन का चेहरा बहुत खुश हुआ और सहादत खा के हाथ सदेश भिजवाया कि छत्तरसाल से पूरा बदला लेना है परन्तु मन मे जलभुन गया व बादशाह मुहम्मदशाह के कान भरने लगा कि इस प्रकार बगस का प्रभाव बढना सल्तनत क लिए खतरनाक हो सकता है। आपके लिए खतरा खडा कर सकता है। बगस को अभी जतपुर मे ही रहने दो। कान के कच्चे बादशाह ने बात मानली और बगस की बात को ढील म डालदी। बरसात के बाद छतरसाल जतपुर को खाली करक बगस को सौप दिया। बगस ने अपना तम्बू जतपुर स आधा कोस दूर बदल लिया।

शाम ढलने वाली थी। बगस के तम्बू म हलचल हो रही था। रेशम क पडदे पडे थे। तम्बू मे गलीचे बिछे हुए थ। गद्दे लगे थे। बगस सामने गीदवे के सहारे बठा-बठा पान चबा रहा था। रहमत खा, मुबारकदीन और दूसरे सरदार बठ थ सबक सामने पान की गिलोरियो से भरी रकाबीयां पडी थी। सूखे मेवे भी थे। शराब का दौर चल रहा था। हँमी के फव्वारे छूट रह थे। रग जमा हुआ था नाच से महफिल गु जायमान थी। मशालें जल रही थी। बगस गव स छाती फुलाकर हस रहा था। सर्दी बढती जा रही थी। महफिल जमी हुई थी।

चोबदार अन्दर आकर मुजरा करन लगा। चुस्की लेता हुआ बगस आख से इसारा किया और रहमत खा की ओर देखने लगा।

हजूर छतरसाल का कारिंदा कुछ अरज करना चाहता है।' रहमत खा बोला- 'अन्दर आने दा बुड्ऊ क कारिंदे का।" बगस ने सिर हिलाकर स्वीकृति दी। कुछ क्षणो के बाद एक बूढा बुदेलखण्डी कारिन्दा रेशम का पडदा उठाकर अन्दर आया और कोरनिश तक झुक कर सबको मुजरा किया और रहम की वाणी म बोला 'हजूर! इनायत हो तो कुछ कहू'- बगस ने आख से इशारा किया तब वह बोला- 'महाराज छतरसाल इतने बूढे हैं कि उठने बठन म भी दिक्कत है। आपके मुलजिम

है। मगर फौज खेल गये तो आपकी बदनामी होगी। दिल्ली दरबार में हुक्म आने में देरी है।' मुह पर दीनता की चादर डालकर बोला– मगर आप इजाजत दें तो होली मनाने सूरज मऊ चले जावें।' गा स फूलकर बगम बोला सूरज मऊ की व्यवस्था पूरी करली जावे और कुछ का होली वहां मनाने की छूट है।

'हजूर की मेहरबानी रहे।"

5–6 दिनों के बाद छत्रसाल सूरज मऊ चले गय। सूरज मऊ एक छोटा गाव था। जिसम 100–150 घर थे। गाव के बीच म एक छोटी गढ़ी थी। गढ़ी म 8–10 कमरे थे। छत्रसाल के सूरज मऊ पहुचने के बाद उनके चहर स उदासी की रेखाए जान लगी। गढ़ी की चौकसी कड़ी थी। गांव के लोग शाम को आते और हरि भजन करते होली गाते। पहरेदार आनन्द क समुद्र म तरने लगे। खूब खाते और दारू पीते। धमाल की राग म सारा वातावरण गूजता रहता।

प्रयाण

जब दिन निकला सूर्य सोने की थाली की तरह धुंध की ओट मे था। चारो ओर धुंध बहुत गहरी थी हाथ को हाथ नही दिखाई देता था। मशालें जल रही थी, परन्तु उनसे लो नही उठ रही थी ओस बहुत अधिक पडी। जमीन सीली हो गई। बरसात तो नहीं हुई फिर भी ठंडक की अधिक थी। पेडों के पत्ते पानी से भरे थे। और एक दिन चढने पर धुंध छंटने लगी। देवगढ का किला साफ दिखाई देने लगा। घोडों की हिनहिनाहट सुनाई देने लगी। दूर दूर तक फले हुए मराठी घुडसवार चहल कदमी करने लगे। अगरे जले हुए थे। मकई का रोटियां सेकी जा रही थी व सिकती रोटी की सुगन्ध जगल मे फल रही थी। झील के ऊपर उठता धूव का पाट बिखरता जा रहा था। घास पर पडी हुई ओस की बून्दो मे सौ-सौ सूरज एक साथ चमक उठे थे। धीरे-धीरे आकाश साफ होता जा रहा था कि पूर्व म सूरज चमकता हुआ उठ रहा था और पश्चिम मे धूआ भागता जा रहा था।

पेशवा अपने तम्बू म चहल कदमी कर रहा था। सफद कपडे पहने था। ललाट पर त्रिपुण्ड चमक रहा था। गौरवर्ण शरीर कामदेव सा सुन्दर लग रहा था। लगभग तीस वर्ष का युवक जिसके चेहरे पर नूर चमक रहा था। साधारण कद, मुह पर रुमाली अच्छी तरह फूटी हुई थी। बगल मे कधे तक ओढी हुई गरमशाल गर्दन क पास थी। पेशवा शाल को फटकार कर कधे पर रख रहा था फिर टहलने लगा। फाटक के

पास परा की चाप सुनाई दी। पेशवा गीदवे का सहारा लेकर वठ गया। धूप की सुगन्ध तम्बू मे फल रही थी। द्वारपाल ने पडदा उठाकर पिलाजी जाधव, नारू शकर, तुकोजी पवार देवलजी सोमवस और गोविन्द बलाल को अन्दर आने के बाद वापस पडदा डाल दिया।

मैं आप लोगो की ही प्रतीक्षा कर रहा था। पेशवा ने हाथ स इशारा करते हुए कहा 'आप लोग यहां बठिए।' सब यथास्थान बठ गय और पान का बीडा उठाकर खाया। पेशवा ने कहा–'देवलगढ के राजा के साथ हमारी सन्धि हो गई है और सन्धि के दस्तावेज तयार हो रहे हैं। कल शाम तक दस्तावजा पर दोना क हस्ताक्षर हो जायेंगे। अपने वकील दादा भीमसेन न दिल्ली स खरीता भेजा है। दिल्ली दरबार की स्थिति सतोषजनक नही है। मराठा प्रभाव जमाने के लिए हमे बुन्देलखण्ड म जाने की सलाह दी है। बडे आश्चय की बात है कि आज दिल्ली से इसके बारे म खरीता आया है और कल महाराज छत्रसाल का रक्षा के लिए हमे निमन्त्रण पत्र मिला है। हमने छतरसाल को बुन्देलखण्ड म आने की स्वीकृति कल रात को ही भिजवानी है। पिलाजी जाधव और नारूशकर की ओर पेशवा ने प्रश्न भरी दष्टि डाली। दोनो कुछ क्षण सोच कर एक राय स बोले– 'नमदा की सीमा लाघ कर आगे बढेंगे तभी मराठो का प्रभाव क्षेत्र बनेगा। मराठा स्वत बुन्देलखण्ड न जाकर सहायताय व निमन्त्रण पर जा रहे हैं। हमारे ऊपर आक्रमण का दोष भी नहीं लगेगा। सभी सरदारो ने स्वीकृति भरी। तब पेशवा ने कहा– पिलाजी जाधव और नारूशकरजी कल शाम को रात्रि के प्रथम प्रहर म राज माग छोडकर कच्चे रास्त से महला आजमगढ के पास स सना सहित निकल जावें और तुकोजी पवार आप लोगो के पीछे चले आवेंगे। पवई तक राज माग रहेगा उसके आगे कच्चे रास्त से छतरपुर होत हुए विक्रमपुर, राजगढ के पास से बसारी को दाहिने दो कोस छोडकर जावेंगे। आप लोगो के पीछे-पीछे मैं और देवलजी आ रहे हैं। आज शाम का सेसूआ को रवाना करदें। सन्धि तस्दीक होने पर सतारा रवाना कर दूगा। पिलाजी जाधव और नारूशकर

कानी देखकर पेशवा ने कहा— आप लोग मुहम्मद बगस पर नजर रखेंगे और सारी सूचना यथा समय देते रहेगे।"

थोडी देर तक सारी स्थिति पर विचार विमश चलता रहा। तब तक एक टहलवा पान की तश्तरी लेकर आया और सबके सामने तश्तरी करी। सबने एक एक पान का बीडा उठा लिया। पेशवा ने गोविन्दबलाल की तरफ देख कर इशारा किया। बलाल ने चिटनिस को बुलवा लिया सब सरदार मुजरा करके बाहर चले गये। चिटनिस ने खरीता लिखकर पेशवा के हस्ताक्षर करवाके पूणे भेजने की व्यवस्था की।

× × × ×

ससार का बटाऊ कब चला गया किसी को कुछ पता भी न चला। देवगढ के पास की झील के किनारे टिडी दल था वह कब और किधर चला गया किसी को पता भी नही चला। जगह-जगह घोडों की लीद थी जगरे की ठडी राख थी। एक सुनसान ठड मे जमी हुई चुप्पी।

धरवू चा धरमझला, सेना आगे बढती रही, बढती रही। हरावल दस्ता जागरूक था, आगे चल रहा था। पिलाजी जाधव व नरोजी शकर सेना सहित राजगढ के पास पहुचे तब उनके पास यही पर ठहरने का आदेश पहुचा। दूसरे दिन तुकोजी पवार पहुच गये। सूय निकलने के साथ-साथ पेशवा बाजीराव और देवलजी सेना सहित पहुच गये। जगल मे भटकता हुआ भारतीचन्द भी मिला।

भारतीचन्द को पेशवा के दरबार मे भेजा। उसने सारे समाचार बताए और छतरसाल के सूरज मऊ में होने की सूचना दी।

पेशवा छतरसाल के हार की खबर सुनकर बहुत दुखी हुआ। चिन्तामणि नामक चतुर खास हारकारे के साथ छतरसाल के पास शीघ्र ही पहुचने की खबर भिजवाई।

महोबा के पास पहाडी की घाटी थी घाटी काफी लम्बी व चौडी भी थी उसमे एक नाला साल भर पानी से भरा रहता था। चारो

ग्रौर पहाड़ी की ऊंची–ऊंची चोटियां थी। चारों ग्रौर वृक्षों की गहरी हरियाली थी। महोबा इस घाटी से ग्राठ दस कोस था। इधर लोगों का ग्रावागमन नहीं था। पायगों ने ठहरने का उपयुक्त स्थान समझ कर सूचना भिजवादी। दूसरे दिन सेना घाटी मे ग्राकर ठहरने लगी। पेड़ों के नीचे सवारों ने ग्राराम करने की जगह बनाली। जगरे जला कर रोटी बनाने लगे। घोड़ों की काठी उतार दी। घोड़ों को नाले में स्नान कराकर स्वस्थ करने लगे। लम्बे मार्ग को तय करने में जो हरारत ग्राई थी वह दूर हो गई।

पेशवा के लिए तलहटी की ऊंचाई पर एक तरफ तम्बू लगाकर कनातें लगाई। बैठक बनाई। सलाह मशवोरे के लिए स्थान बनाया। भोजन ग्रादि के लिए समुचित स्थान रखा। पेशवा के बैठने का स्थान बनाया। उसके पास चिटनिस का स्थान रखा। जरी के काम की गद्दी लगाई। एक तरफ शस्त्र रखने की व्यवस्था की। पूजाघर बनाया। सहारे के लिए गोल गोदवे लगाये। हाथ के सहारे के लिए चपटे तकिये रखे। तम्बू के फाटक पर रेशम का पड़दा लगाया। फाटक के सामने गजानन का तैल चित्र लगाया। फाटक के बाहर जलती हुई चिराग रखने के लिए तीन–तीन बांस जमीन मे गाड़कर ऊपर से मिलाकर एक कर दिए ग्रौर उस स्थान पर चिराग बांध दी। पायगा के पास रक्षकों की रावटी लगाई। हाजरियों का तम्बू पायगों के पीछे ताना। पेशवा के घोड़ों का स्थान वहीं था। शाम होने के पूर्व सारी व्यवस्था कर दी गई।

पौर एक रात गुजरने के बाद पेशवा पहुंचा। पेशवा के पहुंचते ही तम्बू मे हलचल होने लगी। सरदार मिलने ग्राने लगे। हरकारों का भी ग्राना शुरू हो गया। चिटनिस का काम तेजी से चलने लगा। सुतर सवार परवाना लेकर ग्राने लगे ग्रौर खरीता लेकर जाने लगे। ऐसा मालूम पड़ता है कि ग्रब तक समाचारों के लिए हरकारे सुतर सवार कहीं छिपे हुए थे। ग्रब सबके सब सारे समाचार पेशवा को देना चाहते हैं ग्रौर ग्रागे किस प्रकार व्यवस्था करना चाहते हैं इसके लिए ग्रादेश चाहते हैं। इस भीड़

में एक बुन्देला जिसके चेहरे पर मुर्दानगी थी, कपडो पर धूल थी मुरदा सा खड़ा था। उसकी ओर कोई देख भी नहीं रहा था। पायगा से निवेदन किया कि उसे भी पेशवा स मिलना है। अनजान भीड़ म उसको कौन पूछता था। पायग ने उसे ऊपर से नीचे तक देखा। इतन म तम्बू में से हाजरिया बाहर आया और पायग की ओर देखकर बोला– कोई बुन्देला आवे तो उस उसी समय अन्दर ले आना ' ठीक है" पायगे ने कहा और उसी समय उसे बुन्देला ध्यान आया और वह उसे हाथ के इशारे से अन्दर ले गया और मुजरा करके बोला– "बुन्देला हाजिर है"।

उसके सामने देखता हुआ पेशवा बोला– कोई सदेश है मुजरा करके बुन्देला– हजूर। हुक्म हो तो महाराज छतरसाल का यही ले आऊ

' ठीक है। ले आवो"

और एक लाभगो'

' कोई बात नहीं"

बुन्देला मुजरा करता पीछे लौटा। पिलाजी जादव की ओर देखकर पेशवा बोला– आप इसकी सुरक्षा की व्यवस्था कीजिए। पिलाजी जादव बाहर आकर अपने खास पायगो को उसकी सुरक्षा करने की व्यवस्था का आदेश देकर वापस तम्बू मे चले गये। व्यवस्था करन की बात बताई। पेशवा अपने सोन के तम्बू मे चले गये। पिलाजी जादव उवेड बुन माय थोड़े समय तक खडे रहे। फिर खोजी को बुलाकर सारी व्यवस्था करने को कहा।

धीरे धीरे तलहटी अन्धकार म डूबने लगी। आकाश मे झीणे झीणे बादल छा गये हलकी हलकी बूदे गिरने लगी। सर्दी बढने लगी। थोडी बूदा बादी होकर बरसात बन्द हो गई और घवर तेजो स घाटी को भरने लगी। तलहटी गीली हो गई। चाद झीणी चादर में से झाकने लगा। हलकी–हलकी चादनी पेडों की शाखाओ पर फलने लगी। पवन मे ठड भी–

गति मन्थर थी । घाटा के दक्षिण मे झाडियो मे से
दिखाई दिए जो सबसे आगे था वह सरदार दिखाई
देखता चल रहा था कि पीछे आने वाले आ रहे हैं य
सब मराठा सेना क पास आ गय । उनके साथ मराठ
खोजी था इस कारण उनको किसी प्रकार की दिक्कत
पेशवा के तम्बू क पास आकर खड हो गय । खोजी
कि तम्बू में से हाजरिया आकर मुजरा करत हुए बो
महाराज आपकी प्रतीक्षा कर रह है ।

सरदार तम्बू म दाखिल हुआ कि सामने द
जवान व दना करता दिखाई दिया । दौडकर बाय
गद् गद् वाणी में बोला- मेरा मानीजता बेटा है ।

बठकी पर बठाते हुए पेशवा- मैं तो आप
आप तो मेरे लिए शिवाजी महाराज की तरह-'

यह तो आपका बडप्पन है ।' सभी सरद
आग की रणनीति पर सलाह मशवीरा होने लगा ।

दिन निकलन क पूव ही महाराज छतरसाल
धवर गहरी नही थी परन्तु ओस की बरसात अच्छ
पायगा महाराज को उनक स्था तक पहुचाने गये ।
घाडे लिए सवार प्रतीक्षा कर रहे थे । घोडो पर सवार
और चल पडे ।

× × ×

दिल्ली दरबार से आदश आने म देरी
मोहम्मद बगस ने सना का खच घटाने के लिए सनि
छुट्टा दे दी । किले की मरम्मत तेजी से हो रही थी
गुजरने लगा । सर्दी आने लगी । खुमारी का माहौल

ने होली का त्यौहार नजदीक आ गया इस कारण वातावरण मे मदहोशी फैलने लगी। विजय के बाद होली और ही अधिक मदभरी दिखाई दे रही थी। चारो ओर गहरी शान्ति थी। शान्ति म षडयन्त्र अपना काम धैय से कर रहा था। उसका पता किसी को नही चल रहा था। और जब पता चला पेशवा का हरावल दस्ता पहाडो पर चरते हुए पशुओ को घेर कर ले जाने को उद्यत हुआ। रक्षको ने दस्ते को मार कर भगा दिया। दूसरे दिन और अधिक हरावल दस्ते के सनिक पशुओ को काटकर मारने लगे तब झडप हो गई परन्तु इस झडप का परिणाम अनुकूल नही रहा। कुछ रक्षक मारे गये कुछ भाग कर फरियाद करी। फरियाद सुनते ही बगस का कलेजा कापने लगा गहरी आशका से दिल दहल उठा। मराठो के हरावल दस्ते चारो ओर दूर-दूर तक घूमते दिखाई देने लगे तब मोहम्मद बगस सचेत हो उठा और सुरक्षा की तयारी शुरू करदी। पडोसी राजाओ को खरीते भेजकर जल्दी आने का लिखा सेना म भर्ती खोलदी। पडाव के चारो ओर खाई खोदकर मार्चा बन्दी करली। सुरक्षा की सारी व्यवस्था ठीक से हो पाती उससे पहले ही मराठा सेना ने पडाव को घेर लिया। सेना का घेरा तोपों की मार स दूर था। आगे-पीछे मौका मिलते ही मराठा सेना छापा मारती थी। इलाहाबाद और कडा म अकाल पडने से माल गुजारी नही आई तथा दिल्ली दरबार ने भी किसी प्रकार की आर्थिक सहायता नही भेजी। इन दोनो स्थितियो स बगस परेशान था। हार कर अपने छोटे बेटे कयामत खा को धन और सेना लेकर आने का आदेश भिजवाया।

मराठा सेना ने बगस की सेना पर सीधा धावा न मारकर नाकेबन्दी करदी। रसद आनी एक दम बन्द करदी। सेना भूखों मरने लगी। घोडो को ऊटो को और बलो को मारकर सेना खाने लगी। सेना की हालत खस्ता होने लगी।

मोहम्मद बगस को अपना भविष्य अधर मे झूलता हुआ नजर आने लगा।

स्वर लहरियाँ चारो और गूंज रही थी। राजधानी विजय और रामनवमी के त्योहार के कारण अत्यधिक प्रसन्न थी। सारा शहर आनन्द की लहरों में तैर रहा था। पेशवा घूमते-घामते एक उपवन के पास जा पहुंचा। छोटा-सा उपवन अपनी खूबसूरती और सुघडता और सुगन्ध से मन मोहने लगा। आम पर बैठी कोयल की कुहू-कुहू दिल को छू रही थी। विरोहणी का दिल कोयल के स्वर मे कूक रहा था। पूछने पर पता चला कि यह महाराजा छत्रसाल का बसन्त विहार है। वास्तव में बसन्त की तरह ही मधुर था। उपवन में छोटा सा महल था। जिसमे कोई विरहिणी गा रही थी--

ननद बाई कस धीर धरों
गयो बसन्त रितराज सो सूका

पेशवा के मन पर एक गहरी चोट लगी। कितना दर्द है कितना मिठास है, मधुरता है। एक टीस है। सुनने की इच्छा करते हुए भी आगे बढता गया। दिल पीछे छोडता गया। आगे बढने का मन न रहा और न पीछे हटने का बसन्त के माधुर्य मे पेशवा खोने लगा। वापस आकर आराम करने लगा।

दूसरे दिन सूर्योदय के साथ ही महाराजा छत्रसाल का संदेश लेकर कुंवर हरदयाल और जगतराम आ पहुंचे। पेशवा अपनी बैठक में सरदारो के साथ बैठा था। हरावल द्वारा संदेश मिलने पर गोविन्द बल्लाल, तम्बू के फाटक तक जाकर स्वागत करते हुए अन्दर लाया। कुंवर हरदयाल ने कोरनिश करके महाराजा छत्रसाल का संदेश सुनाया। और निवेदन किया कि बुन्देलखण्ड का राजदरबार आप लोगो का स्वागत करने आमन्त्रित करता है। सभी मराठा सरदारो ने उठकर कुंवरो का स्वागत किया व अशरफिया भेंट की। और राजकुमारो के साथ चलने की स्वीकृति प्रदान की पेशवा को अभिवादन करके दोनो ने अशर्फियां भेंट की

और स्वागत समारोह में पधारने व भाग लेने के लिए बुलाने आये हैं। सभी सहृप राजदरबार में चलने के लिए तैयार होकर तम्बू से बाहर आ गये। राजधानी की ओर चल पड़े।

× × × ×

बहुत वर्षों के बाद महाराज छत्रसाल ने दरबार लगाया और सम्पूर्ण राजसी ठाठ से दरबार में बठे। सभी मूर सामन्त सज्जित होकर आये और यथास्थान बठे। महाराज के बाईं ओर की बठकी खाली है। दाहिने ओर की बैठक हिरदेशाह व जगतराज के लिए है।

पेशवा के राजदरबार के पास पहुचते ही चोबदार ऊची भरी हुई आवाज में दोना-मर्दोलजाहा पश निगाह महिरबान सलामत पण्डित बाजीराव पशवा पधार रहे हैं। महाराज छत्रसाल ने खड़े होकर पेशवा का स्वागत किया। पशवा माननीय मानकर पाव छूने लगा। छत्रसाल ने पकड कर छाती से लगाया और नजराना पश किया। मोहरें पशवा क ऊपर न्यौछावर कर गरीबों में बाटने के लिए भेजी। फिर अपने पास बैठाया और कहा–'इस वृद्ध के लिए कितना कष्ट उठाया है"

चारों महल मे जाकर राजनीति धम आचार विचार पर विचार विमश करने लगे।

'धन्य हो बेटा बाजीराव धन्य हो" महाराज छत्रसाल ने कहा– 'आपके विचारो को सुनकर मैं बहुत खुश हू।' आगे कहा– यह उदार विचार किस कारण से है' । खोयी हुई सत्ता वापस मिल सकती है या नहीं।

'यह सब आप लोगो की मेहरबानी पर है'–नीचा मुख किए बाजीराव न कहा– मैं किस लायक हू काकाजी इस रास्ते पर समाज का विरोध काफी होता है। 'हा' एक बात बताओ'–अचानक महाराज छत्रसाल ने पूछा 'धम दो प्रकारके है। एक तो अपने मन के अनुसार दूसरा सामाज का।'

'आपका मतलब किस धग से है

मेरा मतलब खुद के धम स है छत्रसाल ने कहा

समाज की मा यता का धम बपौती नही हो सकता है क्योंकि उसका सम्बन्ध समय के प्रवाह से है। श्रीमान सब जानते हैं" बाजीराव न मुस्कराके कहा जो धम पिता का है वही बटे का है। वसे मैं क्या कहू। सारा बात सामन है। प्रमाण की आवश्यकता नही। जगतराय ने कहा– बिना मन के अनुकूलन के सदव्यवह र नही हो सकता।'

परन्तु आप एक जरूर ध्यान रख छत्रसाल ने कहा– मैं आपको एक सच्चा रत्न द रहा हू उसक बच्चो को वही अधिकार देना पडगा जिसके व अधिकारी हैं। उसक हक हकूक ।

'आपकी मेहरबानी से मुझे धन और धरती की भूख नहीं है और न इस कारण मैं आपकी सेवा करने आया हू। मैं ता आपको शिवाजी महाराज के बराबर मानता हू इसी कारण आपकी कृपा चाहता हू। आपने जिस सम्पत्ति को देने का सकल्प किया है उस मैं उचित अधिकार ही देऊगा। आगे भगवान की इच्छा। इसके आगे मेरे भाई जसा करेंगे

वैसा ही हागा । मैं जीवन पयन्त उसमे हाथ नही डालूगा । ये सब बाते गुप्त ही रहे" छत्रसाल ने कहा– ऐसी बात न होने से तुम्हारे और मेरे समाज म उथल-पुथल मच जावेगी ।

जैसा श्रीमान का आदेश यह कहता हुआ बाजीराव खडा हो गया । महाराज छत्रसाल ने गले लगाकर पेशवा को विदा किया । दोनो राजकुमार उसे डेरे तक पहुचाने आये ।

डेरे पर आने के बाद पेशवा ने गोविन्द बल्लल को बुलाकर कहा– "तुम्हे यही रहना है । बुन्देलखण्ड की रक्षा करनी है । इनको किसी बात की परेशानी न हो । सेना क खच के लिए महाराज छत्रसाल जो भी दे उसे ले लेना । भूमि के बटवारे के लिए झगडा नही करना ।'

थाडे समय के बाद एक पडदा लगी हुई बल गाडी आई । जिसके चारों ओर बुन्देला पायगा थे । बाजीराव ने उनक साथ अपने खास पायगा और लगा दिए और पुणे जाने का आदेश दिया । उस गाडी के पीछे-पाछे घन से तथा दासियो से भरी बैलगाडिया थी ।

बरसा ऋतु आने वाली थी । पेशवा महाराज छत्रसाल से आदेश लेकर पुणे की ओर रवाना हो गया ।

शनिवार वाडा

शिकारी कुत्ता जोर से भागता जा रहा था। उसके सामने काफी दूर खड़ा बारह सिंगा चर रहा था। बारह सिंगे ने अपना सर ऊपर उठाया और शिकारी कुत्ते को मन देखा करके चरने लगा। कुत्ते का आज तक इतना अपमान नहीं हुआ था। उसका भौंकना सुनकर ही जानवर भागने लगते थे। ऐसा कौनसा बहादुर बारह सिंगा है जो भौंकना सुनकर भी निश्चिन्त होकर चर रहा है। अपमानित होकर और जोर से भौंकने के साथ साथ तेजी से भागने लगा। कुत्ता जब काफी नजदीक आकर उछलने की कोशिश करने लगा तब बारह सिंगा मोर्चा संभाल कर तयार हो गया और ज्योंही कुत्ता उछल कर बारह सिंगे की गरदन पर कूदा तो बारहसिंगे ने कुछ कदम पीछे हटकर अपने तीखे सींग कुत्ते के पेट मे जोर से घुसेड़कर पीछे ढकेल दिया। कुत्ते के पेट से खून के फुआरे छूट पड़े। कुत्ता फिर संभल कर कूदा। इस बार बारहसिंगे ने इतने जोर से सींग घुसेड़े कि उसकी प्रतिक्रिया बाहर निकल गई और खून का नाला बहने लगा। थोड़े समय में वह मर गया। बारह सींगे के गर्दन पर भी कुत्ते के दांत लगने से खून निकलने लगा था। परन्तु थोडी देर के लिए वह बैठकर सुस्ताने लगा था। तब तक मालिक राजगुरू आ गया और सारा दृश्य देखकर बात समझ कर उस स्थान पर अपनी कटार से निशान बनाकर चला गया।

कुछ दिनों के बाद उस स्थान पर नींव खोदकर शनिवार के दिन बाड़े का निर्माण शुरू किया।

समय के साथ-साथ जिस पहाडी पर कुछ मछलीमार रहते थे आबाद होने लगी । अच्छी वर्षा होने के कारण चारो ओर घास का विशाल मैदान था । मैदान में नीम आम केला अनार, अमरूद, पीपल व बड के पेड थे । चारों ओर खूब हरियाली थी । धीरे-धीरे आबादी बढने लगी छोटी-छोटी झोपडिया बनने लगी । छोटे-छोटे पोखरो से मछली पकडने वालो के स्थान पर खेती करने वाले आबाद होने लगे ।

कुछ वर्ष व्यतीत होते एक कस्बा बन गया और नाम पडा पूणा । सौरक आने पर जीजा बाई यही आई और पुत्र को जन्म दिया जिसका नाम शिवा रखा । दादा काडर देव की देखरेख मे शिवा बडा हुआ युद्ध विद्या का अभ्यास इसी पहाडी पर किया । शिवा की क्रीडा स्थली पूणा इतिहास की साथी हो गई

मराठों के साथ-साथ पूणा भी उत्थान पतन क भँवर मे फँसा रहा और जब शाहू औरगजेब की मृत्यु के बाद दक्षिण मे पनाह लेने के लिए सतारा की ओर जा रहा था तो उसका प्रधान विश्वनाथ पेशवा गद्दी मे परिवतन करने लगा । शनिवार बाग को जब बुर्जो का किला बनाकर इसका नाम रखा शनिवार बाडा । शनिवार क दिन इनका निर्माण काय शुरू होने क कारण इसका नाम शनिवार बाडा पडा । पेशवा की आकाक्षा उत्तर की ओर अधिक थी इसलिए उसने उत्तर की ओर के फाटक का नाम रखा दहली दरवाजा, पूर्व की ओर दरवाजे का नाम रखा गणशपोल फाटक मे गणेश का विशाल मादर था । दक्षिण क दरवाजे के पास जामुन के पेड थे उसका नाम रखा जामुन दरवाजा और पश्चिम की ओर नाटक घर था । नाटक घर की एक खिडकी आम लोगो के आने के लिए काम में आती थी इसलिए उसका नाम खिडकी पाल हुआ । पशवा विश्वनाथ के जमाने म सतारा शाहू की राजधानी थी और पेशवा का दफ्तर पूना था पूना का यह उन्नति का काल था । शनिवार बाडा चार दरवाजो व नव बुर्जो का छोटा किला था । गणपति मदिर के सामने गणपति का दीवान खाना

धूपवती अपनी महक फ्लाकर खुद ही सुगध ले रही थी। सामने पलग पर अधलेटी स्वर्णवल्लरी गरम लम्रों के झोके खा रही थी। चन्द्रमा सा चेहरा आशा की किरण से जगमग कर रहा था। परन्तु निराशा की परछाईं उसे धरती सी लग रही थी। गौदवे का सहारा लिए अधखुले आखो स स्वपनिल ससार को देख रही थी कि आज दो पखवाडे व्यतीत हो गये हैं परन्तु अभी तक सुध लेने नही आय। दिन तो आशा मे गुजार देती हू परन्तु बेरन रात निकालनी मुश्किल होती है। सारे शरीर मे सूले चुभ रहे है रात को बजने वाले घन्टे कहीं समय का माप होते हैं। मिलन की आश में दिन थाडा छोटा हो जाता है परन्तु निराशा म रात पहाड सी भारी होती है। प्रतीक्षा उस अनजान पुरुष की है जिसका चेहरा दरबार मे प्रवेश करते समय देखा था और पीठ दरबार स बाहर निकलते वक्त। हिरणी सी आखे उस ही खोज रही थी जा उसे इस महल मे छोड गया और फिर सुध ही न ली। कितना बडा निर्मोही निकला स्त्री को पुरुष चाहिए मराठा राज का सिरमोड गुजरात का विजेता बुन्देलखण्ड का प्रिय। नही स्त्री को पुरुष चाहिए जा उसका सहयोगी हो। दिल के दद को समझ। पास में रह सके। बातचीत कर सके। कुछ कह सके। मनाने के लिए मनुहार करे। पर तु कोई पूछने ही नही आया। कसी हो। रात कसे गुजारती हो। आखों का पानी दिल की सारी बात कह देता है। वह उस निकालने का अवसर तो नही देना चाहती थी फिर भी कुछ बू दे कोये पर तरने लगती--

पखा करती दासी पूछ ही बठी 'क्या बात है। आज इतने उदास क्यों है? बार-बार पसवाडे क्यो फेर रही हैं।'

'धणी पास म न हा तो धण का जीव सोरा कसे होगा। विडम्बना इसी बात की है कि धणी तो है परन्तु अदश्य' वक्त होते ही आ जावेगे। 'किसका वक्त। मेरा या उनका' सामने देखती मस्तानी ने कहा।

सामने पडी शरबत को गिलास तू पी-तू पी कहे परेशान हो रही थी। परन्तु यहा कहा पीव?

रकाबी में पड़े पान के बीड़े मुरझा रहे थे। समई निर्लेप भाव से जल रही थी। जस उसका काम जलना है।

कसूम्बी रंग की मखमल की चद्दर के किनारे पर लगी जरी चमचमाहट कर रही थी। मसनद पर हाथ फेर कर मस्तानी मस्ती का एहसास कर रही थी। खीन खाप की सलवार कुरती में मस्तानी परी सी लग रही थी। उसमें से झांकता सुनहरा बदन आकर्षण का केन्द्र था। जब वह बार-बार अपने पैर इधर-उधर करती तो काम बेचैनी से घायल हो उठता था। छाती के आगे लगे मसनद छाती के भार से कसमसा रहे थे। उसके शरीर में मिलन की बेचैनी थी। वह इस बेचैनी को सौंपना चाहती थी पर लेने वाला उपस्थित नहीं था। इस कारण उसकी बेचैनी और अधिक बढ़ रही थी। पायगा के परों की चाप सुनाई दी। पड़दे के पास खड़ा होकर बोला पेशवा महाराज पधार रहे हैं। इतना सुनते ही मस्तानी को ऐसा मालूम पड़ा कि सारा महल एक साथ ही मद से झूम उठा है। हतप्रभ हो गई। दासी सजग होकर दरवाजे के पास खड़ी हो गई। एक-एक क्षण एक बरस के बराबर लगने लगा। चरमर-चरमर चाप सुन के दासी ने पड़दा अलग किया और झुक कर आदाब करी। पेशवा सर-हिलाकर स्वीकार करते हुए महल में आगे बढ़ने लगा। पखा करती दासी हतप्रभ हो गई।

हवा करती दासी ने मस्तानी को मुजरा करने का संकेत किया। मस्तानी शरम से लाल हो गई। ऐसा महसूस होने लगा कि पूनम की चांदनी इकट्ठी होकर मस्तानी के शरीर में समा गई हो। शरमाती मस्तानी ने दासी के साथ-साथ आगे बढ़कर मुजरा किया। पता ही नहीं चला। बैठकर बाजीराव ने कहा- ' कामका भार मिटाने में इतना समय निकल गया काम की परेशानी के कारण आपकी सुध नहीं ले पाया।"

मस्तानी शरम से और अधिक भेळी होने लगी। शब्द कंठ से चलकर होठों पर आकर रूकने लगे। अस्पष्ट स्वर में गुण गुणाई मैं तो

आपकी कनीज हूं। मस्तानी के माधवी जैसे शब्द बाजीराव के कानों में पड़े। कान के पड़दे बेसुध से होने लगे। कानों की लोव लाल हो उठी और आनन्द से झूमने लगी। बाजीराव के पास शब्द नही थे। वह बोला 'आपको यहाँ कोई तकलीफ तो नही हुई' इन शब्दों में कितनी वेदना थी उसको सुनने वाला समझता है या भोगने वाला नख से गलीचा कुचरती मस्तानी बोली- आपकी अनुकम्पा से कुछ भी तकलीफ नही हुई। यह कहने से भी मस्तानी की तकलीफ न तो कम हुई और न समाप्त।

बाजीराव के जीवन में यह पहला मौका है जबकि वह एक अनजान युवती के साथ एकान्त में बात कर रहा है। बचपन में शादी हुई तब उसे इस संसार की जानकारी नही थी। स्त्री पुरुष के मधुर सम्बन्ध से अनजान था। आज वह एक सुष्ठ सौन्दर्य की प्रतिमा के साथ कुछ विचलित, कुछ घबराता हुआ बात कर रहा था। यौवन से लबालब भरे प्याला जो तू पीव तू पीव कर रहा है उससे बात करते समय पेशवा सकुचा रहा था। शब्द का अभाव था। मन में बहुत से भाव उठ रहे थे परन्तु अधरों तक आते-आते मौन हो जाते। बाजीराव आज तक कभी भी इस प्रकार हतप्रभ नही हुआ था। बड़-बड़ कूटनीतिज्ञों से बात करते समय भी नही घबराया परन्तु आज उसका दर्प साथ छोड़ रहा था। हिरणी सी आँखें नीची थी फिर भी तिरछी नजर आँखों की भाषा समझ रही थी।

दासी ने आकर शरबत के गिलास सामने रखकर धीरज दिया। खस की मधुर सुगन्ध फलने लगी। बाजीराव ने धैर्य धारण कर के गिलास उठाकर धीरे से अधरों से लगाया शरबत अन्दर जाते ही शरीर की दिन भर की थकान मिटा दी और स्वस्थता प्रदान की। मन की उमगें दबाता बाजीराव बोला- आपके सानिध्य से हमें खाली हाथ हो जाना पड़ेगा क्या?' अनजान रहस्य भरी मुस्कान बिखेरती बोली- 'मैं आपकी बात समझी नही।'

मुझे सब मालूम है। मैं सुन चुका हूं। कब? महाराज छतरसाल का दरबार लगने के पूर्व रात को मैं शहर में घूमते हुए महाराज के बसन्त

महल के पास से गुजर रहा था तब मुझे दमत महल से उठती मधुर राग सुनाई दी तो मैं हतप्रभ रह गया और जिज्ञासा की तब पता चला कि इस महल म मन्दिर है जिसमे राजपुत्री अक्सर गाया करती है। बाजोराव की भेंट शरबत के साथ घट मे जा रही थी और मस्तानी के अनुपम सौन्दर्य की ओर वाक रटुना की छाप बाजीराव पर छा रही थी। इतन म दासी पान के बीडे ले आई। बाजाराव ने गिलास रखकर पान लिया और धय क साथ चबाने लगा। दासी ने मस्तानी के आगे पान किया। शमाती हुई मस्तानी ने पान का बाडा उठाया और अधर हिलाकर मु ह मे दबा लिया।

कुछ क्षणा तक मान छाया रहा- फिर उठता हुआ बाजीराव बोला- मैं जा रहा हू

मस्तानी ने उठकर मुजरा किया और बाजीराव चुपचाप चला गया। बाजीराव चला गया ससग मे शान्ति मिल रही थी वह भी बन्द होगी। पीछे छोड गया एक जलन जिसम मस्तानी रात भर तडफती रही।

दूसरे दिन साझ ढलन क पहले ही मस्तानी ने अपन महल म सुगन्ध बिखेर दी।

फाटक के पास नासी खडी कर दी। चारो ओर समइया जलवा दी। फाटक के बाहर मशालें जला दी। सारा महल प्रकाश से खलन लगा। मगन हुई मस्तानी सारी व्यवस्था करवाने लगी और उसे ऐसा महसूस हाने लगा कि आज दिन अस्त होगा भी या नहीं।

शाम ढलने लगी मस्तानी स्वागत करने के लिए तयार हो गई थी। उसका रूप पूर्ण निखार पर था। गोल चेहरा, उभरे गाल, हिरणी सी आखें और उन पर तना हुआ कामदेव का प्रणय कमान। नाक मे झिलमिलाता मोती अधरो का मौन आम त्रण। आलिंगन पाश म बाधने का बाह उत्सुक और मासल उरोज स्वागत का गीत गाकर सारे वातावरण को मदभरा बना रहे थे। बठी बठी सोच रही थी बाजीराव आवेगा कितने प्रश्न करेगा। उनका उत्तर किस प्रकार दना कसे नखरे करना। कब आखा

को घुमाना कब तियक दृष्टि से देखना कब मुस्कुराना आदि न जाने कितने हाव भावों को किस प्रकार करना ऐसा विचार कर रही थी। मस्तानी आत्म विभोर होकर काल्पनिक मिलन का रसास्वादन कर रही थी। रात ढलकर प्रहर एक रात गुजर गई।

बाजीराव को जब दासी ने मुजरा किया तब मस्तानी उसे सामने आता देख कर किंकर्तव्य विमूढ हो गयी और हडबडाहट करके उठी और कोर्निश की कल्पना में जिसके आने से आत्म विभोर थी उसे आते ही घबरा गई। बाजीराव ने पूछा सब ठीक है ?'

हां"

'इतनी घबराहट कसी ?'

'आपके आने की खुशी मे

बठकी पर बठते हुए बाजीराव ने हाथ से इशारा करते हुए कहा यहां बठों"।

दासी ने सहारा देकर मस्तानी को बाजीराव के पास बठाकर शरबत व पान लेने चली गई।

दोनों नजरो से बात करते रहे। दासी पान व शरबत लाकर पास में रख गई और पहदा डाल कर कर के बठ गई।

बाजीराव शरबत का गिलास उठाकर लेता हुआ बोला आप भी लीजिए।

बाजीराव धीरे धीरे शरबत पीता जा रहा था और मस्तानी के मुह को ताक रहा था

जब बाजीराव ने शरबत पी कर गिलास रखा तो मस्तानी तश्तरी उठाकर सामने करी। 'बाजीराव पान का बीडा उठाकर मस्तानी के होठो के पास ले जाकर बोला—इसे लीजिए" मस्तानी ने आधे होंठ खोलकर पान लिया और दूसरा बीडा उठाकर बाजीराव को दिया। पान चबाते चबाते

बाजीराव बोला–"सच है मस्तानी । यथा नाम तथा गुण । तुम्हारे पास स जाने के बाद कल रातभर नीद नहीं आई और तद्रित मन तुम्हें ही देखता रहा । जितनी गहराई से तुम्हें देखता हू तुम उतनी सौन्दय मरी होती जा रही हो ।"

'आलिजाह आपकी मेहरबानी है मुझे तो आपमें आकर्षण दिखाई दे रहा है कि आपके पास चुम्बक सी खिची हुई आ रही हू ।"

'तुम्हारे रूप मे आकषण है उसी प्रकार आवाज मे मीठास है कानों की इच्छा सुनते रहने की ही बनी रहती है ।"

"आप मुझे क्यों शर्मिन्दा कर रहे हैं ।'

'मैं तो आपके पास ही हू दूर तो आपने ही कर रक्खा है ।" 'कथोपकथन के रूप में ऐसी बात नहीं है ।' महाराज छत्रशाल ने जो अमूल्य हीरा मुझे इनायत किया है उसे मैं कसे दूर रख सकता हू" आगे बाजीराव बोला–"महाराज शाहू राजनतिक झमटो मे फँसे हुए हैं । इसलिए उनकी इज्जत रखते हुए काम करना पडता है । मैं दूसरे दिन ही तुम्हारे पास आ रहा था परन्तु विग्रह के कारण ऐसा नही कर सका ।'

'यह तो आप का बडप्पन है जो मुझे याद रख रहे हैं" मस्तानी ने कहा ।

बाजीराव ने हाथ पकड कर मस्तानी को अपने पास पलग पर बठाया और अपनी बाहों में मरा ।

इस प्रकार उपयोग करोगे क्या ?"

"नही सारी व्यवस्था करके आया हू । कल सुबह तुमको परवल जाना है । शाम तक मैं भी पहुच जाऊगा । वहीं पर तुम्हारे हाथ पीले होगे । इस गाव को मैंने तुम्हारे नाम कर दिया है । रात को वापस यहा आ जावेगें । सारे दस्तूर घर पर ही होंगे ।" गव से बोला–मैं ब्राह्मण हू । तुम्हें अपनी पत्नी बनाकर रखूगा । रखनी नहीं ? 'महाराज के हीरे का अपमान सहन नही कर सकता ।"

मस्तानी की आंखों में चमक आ गई और बोली–'आपका हृदय कितना विशाल है। मुझे कितना बड़ा पद दे रहे हैं। मैं आपके इस गुरु पद की इज्जत रखूं यही मेरी तमन्ना रहेगी।" कंधे पर हाथ रखते हुए बाजीराव बोला-आप मेरी अर्धांगिनी हैं।

हास परिहास का दौर आधी रात तक चलता रहा। बीच बीच में पान के बीड़े आते रहे और दोनों चबाते रहे।

तीसरे पहर का घण्टा सुन बाजीराव उठा और बोला– आप सुबह जल्दी तैयार रहें। पालकी लेने के लिए आ जावेगा। गालों पर चपत लगाता हुआ बाजीराव महल के बाहर चला गया। चपत लगाने से मस्तानी के शरीर में एक सुरसुरी दौड़ने लगी और मस्तानी सारी रात उसी सुरसुरी में घूमती रही। कब आंख लगी पता ही नहीं चला। इस आनन्द का न तो आदि है और न अन्त। स्वप्न देखती रही कि बाजीराव के साथ ब्याही हुई है। उसने पैरों पर पैर रखा है। छाती पर हाथ फेर रहा है। छाती पर हाथ फेरता नीचे आने लगा पेट से होता हुआ नाभि पर आया। यह सब अनजान में हो रहा है। अंगुलियां आस-पास कुछ खोजने लगी ? इजार हाथ में आते ही एक झटके के साथ सब कुछ खुल गया।

दासी पास में खड़ी जगा रही थी– 'बखरनी सा उठिये। दिन निकलने वाला है।

मस्तानी कुछ बोल नहीं सकी। रतनारी आंखों में एक खुमारी थी साथ में पीड़ा की छाया भी थी। मस्तानी उठ के जाने की तैयारी करने लगी।

× × × ×

बरामदे में पालकी के पैरों की आवाज आने लगी। दासी ने फाटक खोलकर जानकारी पूछी। जानकारी लेकर वापस आई। आधे घण्टे के बाद मस्तानी अपनी दासियों के साथ महल से बाहर निकली। दोनों ओर कनातें लगी थी सोपानों से उत्तर कर सामने खड़ी बग्घी में बैठ गई। दासियों के बैठने के बाद बग्घी चल पड़ी।

आगे पीछे घुडसवार थे। पथरीली जमीन पर दोपहर तक चलते रहे। रास्ते मे दो तीन जगह बलो को पानी पिलाया। दो घडी दिन बे रहत परवन पहुच गये।

परवल एक छोटा सा गाव था। पूना से 10–15 कोस गाव के पूर्वी किनारे पर एक बडा तालाव था। जिसम साल भर पानी रहता। तालाब मे पानी पहाडी ढलान स आता। इस कारण कभी भी पानी का अभाव नही रहता। तालाब का मेड पर नीम पीपल व वट के खूब गहर पेड थे। इमली के पेड भी थे। गाव के पास पानी का अभाव न होन स चारो ओर केला पपीता अनारस आम के पेड लग हुए थ। तालाब की ऊची मेड पर पक्के कमरे बने थे और उनके पास वरामदा था। वरामद के पास पायगा के ठहरने क लिए तम्बू लगे हुए थ। दासी पिछन फाटक क पास जाकर रूक गई मस्तानी अपनी दासियों सहित उत्तर मकान में चली गई। पायगों ने बलो को पानी पिलाकर चरन छोड दिया। पायगा खान पीने की व्यवस्था करने में लग गये।

मस्तानी ने थोडे समय तक आराम किया फिर दासियों न मिलकर उसकी पीठी आदि करक वधु बनान लगी। तब तक पेशवा भी आ गया। वरामदे मे वेदी की तयारी मंदिर क पुजारी न पहले से ही कर रखी थी। पेशवा क आने के बाद वधु को बुलाकर शास्त्रानुसार मस्तानी का विवाह पशवा के साथ किया गया। रात क प्रथम प्रहर तक सारा काय सम्पन्न हो गया।

तब पेशवा वधू को लकर पुणे की ओर रवाना हो गया।

पहले दिन मस्तानी जब पूणा पहुचा थी तब स पेशवा के परिवार में चकचक होने लगी थी और जब वधु बनकर पहुची तब वातावरण में एक गहरी विपदा आ गई। औरतो के कान खडे हो गए। ब्राह्मण परिवार में नई बात हो गई।

मस्तानी पुणे पहुंची तब सुर्योदय होने वाला था। पेशवा परिवार की एक भी औरत वधू को बधारणें नहीं आई। दासियों ने मगल कलश बनाकर उसमे खील भरी व चारों ओर आम के पत्ते लगाकर श्रीफल रखा। एक थाली मे हल्दी घोलकर वधु के सामने रखी। मस्तानी ने अपना बायां पैर हल्दी में भरकर जमीन पर रखा फिर दायां हल्दी के थाली मे रखकर देहली के पास रखा उसके बाद बायां पर फिर हल्दी से भरकर मगलकलश को ठोकर मारकर देहली के अन्दर गिराकर खील बिखेर दी। दासियो ने बधावे के गीत गाये।

× × × ×

अभियान

पेशवा दिन भर काम में व्यस्त रहा। मात्र चिमनाजी अप्पा भी आ गये थे। उन्होंने गिरधर बहादुर की सामरिक स्थिति को देखते हुए किस प्रकार मोर्चाबन्दी की और समय का फायदा उठाकर पहाड़ की तराई में पीछे से आक्रमण करके युद्ध में उसे पराजित किया और खूब लटपाट कर के मुगल सेना का धन व जानवर हथियाए और कहाँ से कितनी राशि सरदार मुझो से वसूल की। पेशवा पढ़ी थी। बहुत रात गये तक भविष्य की योजना पर विचार करते रहे। कब का धूप अस्त हो गया। किसी का पता ही नहीं चला। समदियाँ जलानी गईं। बाजीराव दीवानखाने से उठ कर बाहर आया तब रात एक पहर गुजर चुकी थी।

आकाश में चांद सार तक ऊपर आ गया था। सारा महल चांदनी में स्नान कर रहा था। सफेद बादल चांद के इधर-उधर घूम रहे थे। हवा की गति मन्थर थी। फव्वारे चल रहे थे। फव्वारों की बूंदों से मोती चांद एक साथ झांकते और छिप जा रहे थे। चमचम से बादलों में से झांकता चांद मस्तानी के मुख सा प्रतीत हो रहा था। बादल भाग रहे थे। चांद और बादल आंख मिचौनी खेल रहे थे। पेशवा उनको अनिमेष की दृष्टि से देख रहा था। जुगनू व तारे दौड़ रहे थे। बूंदों का शोर कर रहे थे।

घड़ियाल का एक रात का घंटा बजा। पेशवा को नींद विचलित नहीं किया। चुपचाप उसने आई के महल की ओर उसके पैर उठ चले

'तुम्हारे पास एक से एक उमदा वस्तु हैं" आवाज करके दासी आई और मुजरा करके सोने के कमरे का रास्ता दिखाती बोली–पधारोसा बाजीराव मस्तानी की ओर देखकर मुस्करा दिया। मस्तानी शरम से झुकने लगी।

दोनों उठकर उसके पीछे-पीछे चले। फाटक खोलकर दोनों को अन्दर करके पडदा डाल दिया।

छाती से लगाता बाजीराव बोला–"आज तो हमारा ही सुनले।" धीरे-धीरे मुह के पास मुह और हाथ छाती से होते हुए नीचे उतरने लगे।

यह देख कर हो है' समई की ओर ईशारा करती मस्तानी बोली।

मिलन यामिनी की यह साक्षी है"

पलग पर गुलाब की पखुडियां मसली जाने लगी और रात गहराई म डूबने लगी। तीन पहर के घडियाल की ध्वनि सुनकर बाजीराव महल से बाहर आया।

× × × ×

पहाडो पर गर्मी प्रति दिन बढने लगी। रात के द्वितीय प्रहर तक शरीर उमस से जलता रहता पवन की गति मन्द रहती। शरीर दिन म जलता रहता और पसीने से तर रहता। आधीरात को जलन मिटती उसके पहले ही फिर सूय पुन तप्त किरणे बिखेरने लगता। आकाश विधवा की आंख सा कोरा और साफ था। क्षितिज पर कही भी बादलो की कालिमा का निशान दिखाई नही देता था। कभी–कभी मलमल से सफेद झीणे बादल आकाश मे भटकते हुए दिखाई देते थे।

सध्या होने के पहले ही बाजीराव अपने दीवान खाने से निकल कर बाग में आ गया। सूय अभी पश्चिम म अपनी किरणों को समेट रहा था। पश्चिम जाता सूय अपनी छाया पहाड़ी की चोटी पर छोड़ रहा था। गोधूली

की रज स आकाश भरा था । पेड सुस्त थे, फुलवाद प्यासी थी । फव्वारे चल रहे थे परन्तु सुस्ती के साथ । आम तोडे जा चुके थे । दो चार अध पक्की केरिया आमो के पेडो पर कही-कही लटकती दिखाई दे रही थी। बरसात की बूदें लगत ही आमो म कीडे पड जाने के डर से पक्के व कच्चे सारे आम ताड लिए गये ।

अनमने भाव से बाजीराव वक्षों की टहनियों पर बठते हुए पक्षियों की ओर देख रहा था । मशालें जल चुकी थी । उसने देखा कि आम के पेड की शिखा पर बठा कौआ कितनी फुर्ती से टहनी पर बठे चिडिया के बच्चे पर झपटा । वह इस हडबडाहट म टहनी से नीचे गिर गया । पास से गुजरते हुए मशालची ने उस बच्चे को धीरे से उठाकर पेड पर बठा दिया । तब तक बहुत सारी चिडिया बच्चे के चारों ओर ची ची करके फुदकने लगी । अन्धकार कसे निष्पन्द पद चाप रखता धरा पर उतर रहा था । शनिवार बाडे क चारो ओर घरो की चिमनियो से धूआ ऊपर उठ रहा । हवा के कारण धूआ धीरे धीरे धुएं पर छा रहा था । सलमा सितारों की भाति जुगनू उड रहे थे । शनिवार बाडे के कमरा मे समइया टिमटिमाने लगी थी खिडकियों से झाकता मद प्रकाश प्रतीक्षा की सूचना दे रहा था।

टकटकी लगाकर देखता बाजीराव थक सा गया तब उसके पर उसे अनजाने मे ही मस्तानी के महल क दरवाजे क पास ले गये । बाजीराव को आता हुआ देखकर दासी न पडदा उठाकर मुजरा किया । तब बाजी-राव को होश आया कि वह कहा पहुच गया ।

महल मे जाकर बाजीराव बठकी पर बठ गया । शरबत पीया व पान का बीडा उठ कर चबाने लगा । अचानक बाजीराव के पीछे से सुगध का गहरा झोका आया । महक से सारा महल भर गया । उत्सुकता से पीछे की ओर देखा तो मस्तानी हम्माम से बाहर निकल रही थी और आलिजा की पीठ देखकर झट फाटक वापस बन्द कर लिए थे । दासी फाटक के पास जाकर बोली – *'आलिजा पधार गये हैं ।'*

'अभी आई ।'

कुछ क्षणा के बाद मस्तानी कपडे पहनकर बाहर आई और अपने साथ खस की बोछार लेकर मालिजा को मुजरा किया। हाथ पकड कर पास बठाते हुए बाजीराव ने कहा– 'सारी ठढ तो यही है। मैं तो मुफ्त म ही दिनभर तपस मे झुलसता रहा।'

आपका बहुत समय से इन्तजार कर रही थी," पान का बीडा सामने करती मस्तानी बोली।

पान चबाता बाजीराव पलग की ओर चला। मस्तानी उसके पीछे पीछे चल पडी।

मुझे आपसे बहुत ही जरूरी बात करनी है।"

"आपकी हर बात जरूरी ही होती है।'

मस्तानी की उठी छाती की नोकें जब बाजीराव की पीठ से रगडीजो तब बाजीराव को मालूम पडा कि यह रति का आमन्त्रण है।

"मेरा विचार है कि आज रात को हम बाहर चलें' पलगकर बठताबाजीराव बोला और हाथ के इशारे स मस्तानी को पास म बठने को कहा।

'जसी आपकी इच्छा' पास मे बठती मस्तानी बोली–

थोडा वक्त निकला होगा। खट खट की आवाज सुनाई दी। मस्तानी बोली– 'कौन ?'

"जिरह बख्तर लाया है"

ठीक है। रखो।"

मुजरा करके मस्तानी कमरे से बाहर निकली। दासी बाजीराव के लिए जिरह बख्तर लेकर आ गई और बाजीराव को पहराने लगी। बाजीराव तयार हुआ तब तक मस्तानी भी जिरह बख्तर पहन कर आ गई। अब पहचान ना मुश्किल था।

बाजीराव मस्तानी की ओर देखकर बोला– "पधारो सरदारां'

"आपकी कनीज" फर्श तक झुक कर मुजरा करती मस्तानी बोली- 'हाजिर है"

'इसी अदा पर न्योछावर हैं हम ।" छाती स लगाता बाजीराव बोला ।

आओ चलें"

दोनो चुपचाप सोपानों से उतर कर नीचे बरामदे मे आये तो पायगे तयार मिले । आगे बढकर बाजीराव ने अपने घोडे की रास पकड कर रकाब में पैर रखा और उछल कर घोडे को काठी पर बठ गया और बोला-

"सहारे की आवश्यकता है क्या ? '

रकाब में पर रखकर उछल कर घोडी पर बैठती मस्तानी बोली- 'एक आपका सहारा ही बहुत है ।

पूठ से पूठ मिलाकर दोनो चल पडे । पीछे-पीछे रक्षको की घुडसवार सेना चलने लगी । दिल्ली दरवाजे से सब बाहर निकले । घोडे माग के अभ्यस्त थे । सब एक चाल से चल रह थे । कभी-कभी किसी घोडे की नाल पत्थर से टकराती थी । धीरे धीरे पथरीली जमीन कम होने लगी । नदी का पानी काफी कम हो गया था ।

नदी के दोनों तट ऊचे थे और वृक्षों की कतारो से ढँके हुए थे । घोडो के पैरो से पानी छप-छप कर रहा था रास खीचकर मस्तानी बोली- 'हजूर ! आज किधर चलने का विचार है ।' पीछे देखता हुआ बाजीराव बोला- 'क्यो भय लगता है ? '

"नही ' दृढता से बोली- "पर तु इस घोर अधियारी मे यह भी पता नही चलता है कि किधर चल रहे हैं राम ढीली करती मस्तानी बोली ।

के पास होती हुई नीचे आती तब फरसा लपलपाट कर जीभ निकालता दिखाई देता। आतंक मिटाने के लिए फरसा उद्यत है। शखोदक फेरकर पानी के छींटे सब पर डाले, भगवान परशुराम की जय स पहाड़ी गूंज उठी। शंख घड़ियाल नगारे बजने ब−− हो गये।

सबने आरती पर हाथ फेर आंखों पर लगाया। पुजारी को दण्डवत की। पुजारी ने आशीर्वाद और तुलसी चरणामृत दिया। भगवान परशुराम की विशाल मूर्ति थी। बलिष्ठ बाहु दुष्टों का दलन करने तत्पर थे। चेहरे पर आभा थी।

बाजीराव व मस्तानी ने सोने की मोहरें भेंट करी। बूढ़ा पुजारी अपनी श्वेत दाढ़ी पर हाथ फेर पुन साधुवाद दिया कि 'आप भगवान परशुराम की तरह ही दुष्टों का नाश करने के लिए धरती पर अवतीर्ण हुए हैं।

'आपका आशीर्वाद और भगवान की अनुकम्पा ही मुझे सफलता देगी' बाजीराव ने कहा।

तथास्तु

बाजीराव मुड़कर चलने लगा परन्तु मस्तानी टकटकी लगाकर मूर्ति देखती रही। कितनी विशाल मूर्ति है कितने गौरव से भरा चेहरा है। मुंह पर निडरता है परन्तु निदयता नहीं। सचमुच सब काम आपके आशीर्वाद से ही होगा। प्रणाम कर बरबस घूमीतो देखा कि बाजीराव –10 कदम आगे निकल चुके हैं जल्दी–जल्दी पर उठाकर बाजीराव के पास आई और बोली–

'पुजारीजी ने आपको कितना महत्ती काम सौंपा है"। मेरे जीवन का प्रमुख उद्देश्य यही है कि मैं शिवाजी महाराज के स्वप्न हिन्दू राष्ट्र का निर्माण करू। मेरे पास इतनी ताकत व धन नहीं है परन्तु दृढ विश्वास और शिव की असीम अनुकम्पा मुझे इसी माग पर अग्रसर होने

लिए प्रेरित करती रहती है।" बातें करते हुए दोनो चौक पार करके ले बरामदे मे आ गये।

सोने के थाल के समान सूय था। मदिर के नीचे फली हुई सारी हाडी हरी भरी थी। पहाडी की ढलान प्रचमे से भरी थी। चोटी तिरछी थी। पहाडी पर पौधे ऐसे लग रहे थे जसे जीवन की आशा पत्थर फोडकर नकली है। बास, देवदार, चीड, नारियल सफेदा के पेड चारो और वडे थे। परतु खिलौने लग रहे थे। दूर दूर फला हुआ जगल हरे गलीचे की तरह लग रहा था। जगल मे आम, पपीता, खजूर, निम्बू, अमरूद के पेड थे। जगल मे बहती पानी की धारा गलीचे पर सफेद धारी सी लगती थी। पवन पहने हुए वस्त्रों को उतार रही थी। ललाट पर आती लटें उड रही थी। मस्तानी सामने देख रही थी, परतु अपने पिछले जीवन मे झाक रही थी। बाजीराव सामने की काली पहाडी की ओर इशारा करता हुआ बोला– 'उसके पीछे पूए है' –

'आप कहा थे?'

'थी तो यहीं पर।'

यह मुझ पता है परतु क्या सोच रही थी?"

"घर की याद आ गई थी।"

पास में खींचता बाजीराव बोला– "तुम्हारा घर मेरे पास है। मैं जहा हू वहीं तुम्हारा घर है। मेरा घोडा गुजरात हदराबाद, मालवा, बुन्देलखण्ड, दिल्ली घूमता रहेगा और साथ में आप। भारत की धरती अपने घाडों की टापो से गू जती रहेगी। आपकी आंख में पानी,' मस्तानी रोने लगी। छाती से लगाता बाजीराव बोला–"तू रोने लगी।" "कल ही चलो बुन्देलखण्ड।" मेरा सारा जीवन तो घोड की पीठ पर गुजरेगा। गुजरात की ओर नही बुन्दलखण्ड ही सही' – बाजीराव ने कहा।

ऐसी बात नहीं है। 'मैं तो आपके साथ ही हू।"

अश्रुधार निकलने से मस्तानी का मन हल्का हो गया । कुछ क्षणों तक दोनो प्रकृति को निहारते रहे । सूरज के निकलने पर दोनों कमरे मे आकर बठ गये ।

बठक का सदेश मिलने के कारण बाजीराव ने मस्तानी का आराम करने का कहकर खुद सलाह के लिए आ गया । सबने मुजरा किया । बाजाराव ने सबसे जानकारी ली । वेतन भुगतान के बारे में पूछा परशुराज मदिर क आरोपण की जानकारी ली । जगलात की देख रेख की जानकारी ली । पुराने कारकून चिन्तामणि के बारे म पूछा पुजारी ने कहा– "5 7 दिन से बुखार से पीडित है । घासा चल रहा है । बुखार रात को उतरा है । उठने बठने से अशक्य है ।' उसकी पूरी तीमार दारी करना और पूराध्यान रखना बाजीराव ने कहा–मदिर की मरम्मत होती रहती है कि नही ?

'होती रहती है ।"

कितने मशालची हैं ।'

चार ।

ठीक है । सारा काम ठीक चल रहा है ।'

'हा ।'

सबसे मिलकर बाजीराव अपने कमरे मे आया । मस्तानी पलग पर सोई हुई थी । बाजीराव मुग्ध होकर उसे देखता रहा । एक नूर को जो पलपल निखरता जा रहा था । सास के साथ उभरती हुई छाती । सास के साथ यौवन हिलोरे मार रहा था । बाजीराव को झाला देता है । अधखुली आंखें मद के प्यालो के समान थी । काली भोहे कामदेव के धनुष पर चढी हुई प्रत्यचा क समान थी । बाजीराव घूर–घूर कर उसे देख रहा था । दो कदम आगे बढ़ा फिर सोचकर वापस आया । सोचने लगा– यह नूर यह अमूल्य रत्न । मुझे भाग्य से मिला । मैं भटकता हुआ बुन्देलखण्ड

गया महाराजा ने मुझे सौंप दिया । मेरा जीवन तो घोडे की पीठ पर ही गुजर जावेगा और कब कहां ? किस युद्ध म रणखेत हो जाऊँगा । मैं इसे कब भोगूगा ? यह मासल सौन्दय किसके लिए ? मैं कब इसके साथ सो पाऊगा । मेरा सारा जीवन शाहू की दरिद्रता को धोने मे ही गुजर जायगा । एक गरी सास लेकर कडी खडखडाई ।

कडी की खटखट सुन के मस्तानी ने अपनी आखें आधी पडदी खोली और बाहें फला कर बोली—

"आलीजा । कब पधारे ?"

बाजीराव मस्तानी की बाहा म खो गया ।

× × × ×

एक पहर दिन रहा तब मराठे वापस चल पडे । ऊबड खाबड पगडे ही पगडे उनके दोनो ओर झाड झखार । दिन अभी अस्त नहीं हुआ था । परन्तु पहाडी पर अन्धकार बिखरने लगा । पड गहरे थे । सूय की किरणे पडों को फुनगियो पर खेलकर रह जाती थी । पत्ता से आख मिचोनी करती कोई दुबली सी किरण की छाया ही धरती तक पहुच पाती था । चलते जा रहे थे । चलते जा रहे थ । जीवन का क्रम है उसे करते जा रहे थे । उतरते समय ज्यादा समय नहीं लगा । पहाडी की ढलान कम हो गई थी । जहा घोडे छोड कर गये वे वहीं मिल गये ।

घोडे दौड पडे । सारा जगल टापो स गू जने लगा । मशालची आगे था । रात हो गई । जगल सुनसान और डरावना लग रहा था ।

बाजीराव का घोड़ा ठीक चल रहा था । मस्तानी की घोडी कभी–कभी ठोकर खा रही थी । 'बाजीराव ने पूछा घोडी के लिए माग नया है ?"

'हां

सब चलते रहे। अष्टमी का चाद आकाश म दीखने लगा। पडा की सघनता के कारण चादनी धरती पर नहीं के बराबर हो आ रही थी। सारा माग अन्धकार मे तय करना पडा। आखिर में माग नदी के चर मे निकला। नदी-तट पर गहरी चान्दनी फैली थी। सामने नदी थी। पीछे जगल। आकाश दूध मे स्नान किए हुए था। तारे झप-झप कर रहे थे। मेंढक तट पर टर-टर कर रहे थे। जुगनू चमकते हुए उड रहे थ। रास्ता ठीक होने स घोडों की गति ठीक हो गई। पवन गति से बह रहा था। सबका पसीना सूखने लगा और मन प्रफुल्लित हो गया।

घोडे लगातार माग तय करते जा रहे थे। रक्षक पीछे पीछे आ रहे थे कभी बीच का फासला ज्यादा हो जाता कभी कम। परन्तु रक्षक बराबर पाव पर पाव रखे चल रहे थ। कुछ रक्षक माग दिखाते चल रहे थ। चाद अस्त होने की ओर माग रहा था। हवा के सहारे सहारे कभी बादल चाद के मुह पर आ रहे थे कभी आगे पीछे हो रहे थे। भाग-दौड बराबर चल रही थी। जब चांद बादलो के नीचे आ जाता तो घूघट मे स झाकते मुह की तरह सुन्दर लगता। मस्तानी ने अपनी घोडी को बाजीराव के बराबर करके पूछा।

'जाने का माग अलग अलग ?'

हा। आते वक्त दिल्ली दरवाजे से आये थे और अब हम गणेश पोल से अन्दर जायेंगे। थोडा चक्कर खाकर चल रहे हैं।'

इसका कारण ?'

मेरे जाने और आने का माग सदा ही एक दूसरे स भिन्न होता है। मेरे रास्ते अलग अलग होते हैं।'

'जसे बुन्देलखण्ड में।'

'नहीं जसे तुम्हारे पास'' मुस्कराते हुए बाजीराव ने कहा।

'मेरा माग तो सीधा है।

हसता हुआ बाजीराव बोला– मुझे ऐसा सीधा माग दिखाया है कि आज तक उस पर भटक रहा हू। हमे ऐसा सीधा माग मिलेगा। पता ही नहीं था ? '

' पीछे पीछे तो मैं घूम रही हू।'

"मुझे आगे पीछे का पता नही परन्तु चक्करी बम्ब हो के मैं घूम रहा हू।" मस्तानी की ओर देखकर बाजीराव बोला।

आग वाले रक्षक नदी तट पर खडे मिले। ' हमे नदी यहां से पार करनी है। यह कहते हुए अपने घोडो को नदी की धार में डाल दिया। घोडे छप छप करके नदी पार करने लगे। नदी का पानी घुटना तक था। नदी क पाट की चौडाई 20–25 हाथ थी। सबने घोडों को पानी पिलाया और नदी के तट को पार किया। अब राज माग आ गया घोडे सरपट दौडने लगे। दिन निकलने के साथ साथ गणेश दरवाजे के पास पहुच गये। दरवाजा अभी अभी ही खुला था। द्वारपाल भाले लिए खडे थे। बाजीराव के घोडे को पहचानकर मुजरा किया। मुजरा स्वीकार करता हुआ बाजी–राव और मस्तानी नाटक घर के पोल के पास घोडो से उतर कर महल मे चले गये।

× × × ×

गणेश चतुर्थी

गर्मी म जब बुढापा आने लगा तब बरसात होने लगी। बरसात रात और दिन होती रहती। दो-दो तीन-तीन दिनों तक सूर्य के दर्शन भी नहीं होते। कभी-कभी आकाश साफ दिखाई देता। थोड़ी ऊमस बढती और बादल आकर बरसने लगते। आषाढ सावण और भादवा बरसात म ही बह गया। इन दिनों यह भी पता नहीं चलता था कि कब-कब बादल आयेंगे और बरसात होगी। कभी-कभी बरसात तो नहीं होती परन्तु बूंदा बान्दी जरूर रहती। फुहार रहती कभी पानी पडता। धरती पानी से लबालब भरी रहती। शनिवार वाडे के चारों और पानी एकत्र होकर एक नाले का रूप लेकर मूथा नदी में गिरने लगा रात दिन नाले की खल-खल सुनाई देती रहती। ऐसा मालूम पडता कि महल नदी के पास है।

बाजीराव का दीवान खाना इस बरसात म भी चलता रहता। उत्तर भारत स साँडिया सुतर सवार, परवाना लेकर आते रहते और जाते रहते थे। भादवा आ गया। मराठों का अनेक अरमानों से भरा रिद्धि सिद्धि का त्योहार आ गया गणेश चौथ। गणेश मन्दिर मे सफाई का काम शुरू हो गया। इस उत्सव ने सारे मराठ वाडे को आनन्द से भर दिया। पुणे का तो कहना ही क्या ? पेशवा का घर होने के कारण यहां के आनन्द की तो सीमा ही नही थी। पूणे आनन्द के समुन्द्र मे तरने लगा गणेश की छोटी बडी मूर्तियां से पूणे का बाजार भर गया था। बाहर के लोग आस-पास के वासी मूर्तियां खरीद कर गांव में ले जाने लग। रिद्धि और

सिद्धि के पव के कारण बाजार मे विशेष रौनक होने लगी समारोह की तैयारी गांव की आर्थिक स्थिति के अनुसार इस समारोह को मनाने की तैयारी की। दर्शन करने वालों की भीड़ लगातार बढने लगी । गणेश चौथ का दिन औरतो के लिए मुकर्रर था । उसी दिन विशेष व्यवस्था थी। चारा और ढोल दारिया लगाकर रास्ते बन्द कर दिए थे। पेशवा परिवार की सेठ साहूकारों के घर की और मनसबदारो के घरो की औरतें शिविकाओ रथो और बग्गियों से शाम होने क पूव ही आने लगी।

सध्या होने के पूव पेशवा परिवार की औरतो का आना शुरू हुआ। सबसे अन्त म शिविका से मस्तानी आई। जब शिविका से उतर कर मन्दिर में प्रवेश करने लगी तो सभी की आख उसकी ओर लग गई। जसे रति धरती पर उतर गइ हो। उसकी चाल में सौ-सौ पुष्प बाण थे। आढणी मे से चमकती चोटी ऐडी तक थी। चलते वक्त चोटी दोनों ढकरा पर काली नागिन सी पडती ऐसी मालूम पडती थी कि दमामे पर कामदेव चोट मारता आ रहा है। औरतो का मुह खुला ही रह गया। एक हलचल मचगी। मधरी चाल से चलकर वह गजानन की मूर्ति के सामने चौक मे बठ गई। पडदे के पीछे साजिन्दे पहले से तयार थ। उन्होंने स्वर छेड़ा तो मस्तानी ने सतार लेकर अलाप ली तो सारा गणेश मदिर एक साथ गूज उठा मन्त्र-मुग्ध होकर औरतें गणेश की आरती सुनने लगी गणपति नत्य करने लगे। एक पहर तक उसने गणपति की पूजा की। किसी को पता ही नही चला की कितना समय व्यतीत हो गया है। यह स्तवन समाप्त होने पर रुकी तो मुच्छना टूटी और सभी औरतें एक साथ बोल उठी–"वाह्-वाह्।" मस्तानी पसीने से तर हा गई थी। चेहरे पर थकान के बिन्दु झलकने लगे थे। गलिचे पर गिरती पसीने की बूदे मोतीसी चमक रही थी।

पुजारीजी ने अखड सौभाग्यवती होने का आशीर्वाद दिया। पुष्प व प्रसाद दिया व ऐसा मालूम पडता था कि गजानन अपना स्तवन सुनने के लिए दो कदम आगे आ गये थे। दोपहर रात तक पूजा होती रही। धीरे

धीरे धीरे औरतें जाने लगी। मस्तानी वापस घर पहुंची तब रात आधी से ज्यादा गुजर गई थी। क्षितिज पर बिजली चमकने लगी थी। पवन की गति मे तेजी थी। औरतें जल्दी से जल्दी अपने घरो मे पहुचना चाहती थी। उसमें थोडी हलचल होने लगी। कड़कती बिजली की गडगडाहट दूर दूर तक सुनाई देने लगी। फुहारे आने के साथ साथ भयकर बरसात होने लगी।

महल में जल रही समई पवन के वेग से कापने लगी। मस्तानी सुस्ताने लगी। दासी ने आकर मुजरा करके निवेदन किया कि, 'आलीजा आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

'अभी आ रहे '

'आप इन कपड़ो मे भी परीसी लग रही हैं।"

'अच्छा भोहें नचाती बोली और कहा- चलो"

दासी रास्ता दिखाती हुई ले गई।

मस्तानी मुजरा करके पलंग पर बैठी।

पेशवा मसनद के सहारे बैठे थे। मस्तानी को बठती देखकर मुस्कराये और बोले- तुम्हारी स्तुती सुनकर गणपति नाचने लग।'

इस नाचीज का तो आप ही इतना सम्मान करते हैं। "यह बात नहीं है ? मुझे महाराज छत्रशाल ने कहा था कि आप एक हीरा हो।' "मुझे इसका गर्व है कि सारा मराठवाडा उस हीरे की कद्र करना समझ गया होगा।' बा ो में लेता हुआ बोला। मन मे खुश और अधरो से नाराज होती बोली- कोई देख लेगा -आलिगन के लिए झुकता हुआ पूछा 'कौन ?'

पुतलियो को घुमाकर बोली-'दासी'

"कहा है देख

मुक्त हसी से सारा महल प्रतिध्वनित हो उठा। इस हसी के साथ एक मुस्कराहट भी थी।

X X X X

बरसात मे बुढापा आ गया । नदी नाले उथले हो गये । धैय धारण करना शुरू कर दिया था कभी-कभी बादल आते थोडी बहुत बून्दें डालते या छिड़काव सा करते और वापस चले जाते । पवन में तेजी थी पर वह जाती हुई । पवन में ठन्ड की एक लहर थी । मराठी सेना की आक्रमण पर जाने की तैयारी होने लगी थी । सैनिक दूर-दूर से आने लगे थे । पेशवा के दीवान खाने मे रात दिन सलाह मशविरा होता रहता । गुजरात मालवा और बुन्देलखण्ड स सुतर सवार लगातार समाचार ला रहे थे और ले जा रहे थे । शाहू के भी सतारे से लगातार तकादे आ रहे थे । दिल्ली से समाचार आया कि नवकू टी मारवाड के महाराजा अमर्यसिंह गुजरात के सूबेदार नियुक्त हुए हैं । दिल्ली से भी महाराजा अमर्यसिंह का सन्देश लेकर सुतर सवार आ गया था कि आप गुजरात की तरफ पधारो जब हमारे स अहमद बाद म मिलने का कष्ट करें । पेशवा की आखें मालवा, गुजरात और दिल्ली दरबार पर लगी हुई थी । छोटी से छोटी हलचल का कारण ढ ढने की चेष्टा करता था । बाजीराव उत्तरी भारत की परिस्थिति पर विशेष ध्यान दे रहा था ।

श्राद्ध चल गय । मराठी सेना के अभियान के दिन नजदीक आ रहे थे । सैनिक पुणे म एकत्रित होने लगे थे । कारखानो मे रातन्दिन काम होता रहता । साजसमान की हर तरह से जाच की जा रही थी । घोडो की बीमारियो पर विशेष ध्यान दिया जा रहा था । घोडियों को अभियान मे सम्मिलित नहीं किया जा रहा था । बाजीराव (चिमनाजी, अप्पा नरोपन्त आदि सभी सरदारो से सलाह मशविरा बराबर कर रहा था । भावी योजना पर भी विचार करते रहते थ ।

गुजरात से लगातार खरीतें आ रहे थे । मुगल सेना का दबाव गुजरात में बढ रहा था । दिल्ली दरबार से ऐसा ही समाचार आ रहा था । दाभाडे मुगलो से मिलकर गुजरात पर अपना अधिकार बना रहा था । शाहू की ढुलमुल नीति का दाभाडे फायदा उठा रहे थे ।

बाजीराव शाहू के सेनापति को एक किनारे करके स्वतन्त्र सेना सगठन अपने अधीन करके अपना प्रभाव बढाता जा रहा था। बुन्देलखण्ड के युद्ध में पेशवा की सेना को विजय श्री प्राप्त हुई। इससे उसका प्रभाव और अधिक बढने लगा तथा सनिक भी पेशवा की सेना के साथ आने लगे। सनिक दृष्टि से दामाडे कमजोर होता जा रहा था। उसकी शिकायत पर शाहू ने गुजरात पर उसका अधिकार मान लिया था। पेशवा को आदेश दिया कि वह दामाडे को समझा कर सतारा लावे। वहां वह उसे वफादारी की सौगन्ध दिलाकर पेशवा क प्रति ईमानदार बना देगा। जिस दिन बाजीराव को पेशवाई के वस्त्र दिए थे, उसी दिन से वह बाजीराव से नाराज हो गया और बाजीराव के आदेशो की अवहेलना करके स्वतत्र रूप से धावा मार कर सरदेशमुखी वसूल करने लगा। बाजीराव ने कई बार शाहू को सही स्थिति से अवगत करा दिया परन्तु शाहू उसके पुराने अहसानों को नजरअन्दाज नहीं कर सका न नये अपराधों का दण्ड दे सका। इस विषम परिस्थिति को देखकर बाजीराव ने पेशवा की एक सेना का गठन करना शुरू कर दिया। वफादार सनिकों का पूरा सहयोग मिलन से बाजी राव को सब जगह सफलता मिली और शाहू की आर्थिक स्थिति क्रमश सुधरने लगी। दामाडे शाहू को न तो सरदेशमुख का हिसाब देता और सतारा जाने में बहाने बाजी करता और मौके का इन्तजार करता कि अब बाजीराव उसके चुगल में फँस जावे और उसे कद मे डालकर मार डालू और खुद पेशवा का वस्त्र धारण करू। इधर बाजीराव दामाडे की ओर से घात का ध्यान धरकर अपने स्वतत्र अभियानो की व्यवस्था करता रहता। शाहू दोनो को मिलाना चाहता था परन्तु दामाडे पर अनुशासन हीनता का दोष भी लगाना चाहता और बाजीराव पर दबाव डाल रहा था की वह दामाडे का सहयोग ले मराठा राज्य की नतिक और आर्थिक जिम्मेदारी

सभाले रखे । इस दुविधा से बाजीराव परेशान था । दशहरा धूम-धाम से मनाया । अपनी सारी चिन्ताए रावण के साथ ही जला दी । महाराजा अभयसिंह का फरमान भी आया जिसमे उन्होने लिखा कि दाभाडे मुगलों से मिलकर तुम्हारे पर आक्रमण करने की योजना बना रहा है । इस खरीते से बाजीराव का मार्ग साफ हो गया ।

एक तीर से दो शिकार करने की योजना बनाई ।

☒ ☒ × ☒

गुजरात में

शाहू न मुगल के शिविर से वापस सतारा आने के बा* अपने पुराने सर स्वाहों को खरीते भेजकर बुलाया। उनमे एक खाडेराव दाभ डे भी था। बालाजी विश्वनाथ को उस समय पुराने कार्यकर्ताओं की विशेष आवश्यकता थी। शाहू बालाजी की ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा मे विशेष प्रभावित था। जब पैर धरने की जगह नही थी तब बालाजी ने अपनी योग्यता व चतुरता से शाहू का पर जमाने के लिए सतारा पर विजय हासिल की और मराठा राज्य की गद्दी सम्भला दी। मुगलो से सरदेश मुखी और चौथ का अधिकार पत्र प्राप्त कर लिया। सयद भाइयों का सहयोग लेकर दिल्ली गया। वह दक्षिण भारत का पहला सरदार था जिसे मुगलों ने मान्यता दी और धन दिया।

जब 1717 में बालाजी विश्वनाथ को पशवा के वस्त्र दिए तो तब खाण्डेराव दाभाडे बहुत नाराज हुआ और शाहू के प्रति विद्रोह करने की सोची परन्तु शाहू ने शिवाजी महाराज की सौगन्ध दिलवाकर शान्त कर दिया। बालाजी विश्वनाथ ने भी समझा बुझाकर दाभाडे को सेनापति का पद दिलवाकर सन्तुष्ट कर दिया। खाण्डेराव दाभाडे बहुत बहादुर था परन्तु राजनीति म कारा था। बालाजी विश्वनाथ सफल कूटनीतिज्ञ, चतुर व हवा का रुख पहचानने वाला था। बालाजी विश्वनाथ ने उसके बाद दाभाडे को हर अभियान मे अपने साथ रखा ताकि वह कभी धोखा भा न कर सके। खण्डेराव पर अप्रत्यक्ष रूप से नियन्त्रण भी रहा तथा वह अहसान

फरामोश भी नही था । बालाजी विश्वनाथ का अचानक देहावसान हो जाने के बाद खाण्डेराव दाभाडे की महती इच्छा फिर बलवती हो गई और युद्धो का अनुभव, विश्वास और बुजुर्गीयत के आधार पर अपने को पेशवा के पद का दावेदार मानने लगा । जब शाहू द्वारा बालाजी विश्वनाथ के 20 वर्षीय युवक बाजीराव को पेशवा के वस्त्र दिए जाने का समाचार सुना तो खाण्डेराव आग बबूला हो गया और शाहू को कड़ा विरोध भरा पत्र लिखा और अपने पुत्र के बराबर बाजीराव को पेशवा मानने से इन्कार कर दिया और पेशवा द्वारा निर्धारित मार्गों की अवहेलना करके अपनी इच्छानुसार अभियानो पर जाता और सरदेशमुखी और चौथ वसूली करके खुद रख लेता और न उस रकम का हिसाब पेशवा व शाहू को देता । सेना के खर्च का तगादा करता रहता ।

पेशवा की परिस्थिति बड़ी विषम होने लगी । घर की फूट और दुश्मनो के साथ निपटना दुश्वार हो रहा था । बाजीराव ने अंगरक्षक सेना का नाम लेकर अपने अधीन सेना का गठन किया । इस सेना ने पहला चमत्कारिक काम पालखेड की लडाई में दिखाया । मराठा राजनीति पर इस दूरदर्शिता का गहरा प्रभाव पडा और आगे सदा के लिए सेना पर सीधा नियन्त्रण पेशवा का होने लगा और सेनापति का पद मात्र शोभाऊ रह गया । शाहू ने इस स्थिति को बचाने के लिए गुजरात पर खाण्डेराव का अधिकार मान लिया और इसकी सूचना पेशवा को भी दी । खाण्डेराव के अभियान को निष्फल करने के लिए बाजीराव ने योजना बद्ध काय करना शुरू किया । गुजरात मालवा, हैदराबाद के बारे में इलाहाबाद के मुगल मनसबदारो को युद्ध मे पराजित करके धन लेकर संधि कर लेता इससे उनके दिल्ली दरबार मे अस्तित्व को खतरा पदा नही होता और वे अपनी कुटिल चालो से दरबार में फिर से प्रभुत्व शाली बन जाते इससे बाजीराव का उनसे संबध भी रहता और वे भयभीत रहते आगे अकेले मराठा सेना पर अभियान की योजना नही बनाते । उनको युद्धो मे रणक्षेत्र भर देता तो सारी मुगल सेना एक साथ मराठो पर आक्रमण करती और मराठो को ऐसी

सामाजिक और आर्थिक स्थिति नही थी कि उसका मुकाबला कर सके । इसके साथ साथ बाजीराव मुगल दरबार के प्रभावशाली हिन्दू मनसबदारों के साथ अपना व्यक्तिगत सबध बनाये रखता जिसका परिणाम यह होता कि दिल्ली दरबार मे हिन्दू और मुसलमान मनसबदारों की नियुक्ति और मनसब बदलने की सूचना यथासमय मिल जाती । इससे बाजिराव को कब और किस ओर अभियान करना है इसमे सुविधा रहती ।

शाहू के पास भी बाजीराव के विरोधी श्रीपतराव, प्रतिनिधि आनन्दराव सुमन्त व नारोराम मन्त्री थे । इन लोगो ने खाण्डेराव दाभाड को सारी सूचना देकर बाजीराव के विरुद्ध बहकाया था । बाजीराव ने शाहू के दरबार मे अपने विरोधियो को नीचा दिखाने के लिए पेशवा का दीवानखाना सतारा से हटाकर पुणे कर दिया । इससे बाजीराव को मन मुताबिक काम करने और अभियान पर जाने की सुविधा रहती । शाहू को मात्र अभियान की सूचना ही देता और उसकी आर्थिक स्थिति ठीक रखने के लिए धन भेजता रहता ।

इस कूटनीति की चाल से बाजीराव के पास तीन खास महकमे आ गये प्रधान मन्त्री सेनापति और अर्थ मन्त्री । जिम्मेदारियां तो अधिक रही परन्तु काम म बाधा खडी करने वालो से दूर रहते सभी अभियान सुविधा पूर्वक सम्पन्न होने लगे ।

तालाब म स्नान करते हुए खाण्डेराव दाभाड की उसके दुश्मन ने हत्या करदी । खाण्डेराव की हत्या हो जाने के बाद बाजीराव ने उसके प्रमुख सरदारो को किसी प्रकार अपनी ओर मिला लिया । उसके पुत्र त्र्यम्बक राव की सनिक स्थिति कमजोर हो गई । बाजीराव ने शाहू को सेनापति का पद अभी किसी को भी नहीं देने का लिखा परन्तु श्रीपतिराव ने अपनी कुटिल चाल से त्र्यम्बकराव को सेनापति बना दिया था। त्र्यम्बकराव अपने पिता से भी अधिक ना समझ और हठी था । पेशवा ने इसको समझाने का प्रयत्न किया परन्तु श्रीपतिराव की सह से तथा कूटनीति

को अलंज्ञता से पेशवा का साथ देने से इन्कार हो गया और गुजरात मे बड़ोदा के आसपास चौथ सरदेश मुखी वसूल करता रहा।

दिल्ली दरबार मे राजनैतिक परिवतन आया और जोधपुर महाराजा अभयसिंह को गुजरात का मनसबदार बनाकर भेजा गया। महाराजा ने बाजीराव को मिलने के लिए अहमदाबाद बुलाया और साथ मे यह सूचना थी कि मोहम्मद बगस को मालवा का सूबेदार बनाकर भेजने की योजना चल रही है।

× × × ×

मोहम्मद बगस मालवे का सुबेदार बनकर आया तब उसके दिल में पिछली हार खटकने लगी। अपनी इस भावना को उसने बडी होशियारी से दबा रखा। बाजीराव का जिक्र आने पर उपेक्षा से बात को उडादेता और हस के कहता 'मुझे मालवे की सुरक्षा करनी है। इसके आगे कुछ नहीं सोचना है।" सभी कारकुन दूर-दूर से मिलने आते और अपनी समस्याए सुलझाने के लिए कहते। बगस ने दौरे करने शुरु कर दिए ताकि मालवे की सही स्थिति की जानकारी मिल जावे और रैयत में शासन के प्रति विश्वास पदा हो जावे। डेरा लगा हुआ था। छोटा सा दीवानखाना था। बगस का सलाहकार अजीमुदीन बठा था। कारकुन दिल्ली दरबार में भेजने के लिए खरीता लिख रहा था। शराब का दौर चल रहा था। सूखे नमकीन फल रकाबियों म पडे थे। द्वार रक्षक ने आकर कहा कि हैदराबाद से खरीता लेकर खुदाबक्स आया है। गम्भीरता से सोचने के बाद बगस ने आने की इजाजत देदी। खुदाबक्स ने आकर मुजरा किया और फिर चौकस नजर से चारो और देखा फिर मुजरा करके बोला-"अगर आपको एतराज न हो तो मैं अरज करु।" अजीमुदीन की आखें तनने लगी परन्तु बगस की भावना को माप कर चुप रहा। बगस ने स्वीकृति स्वरूप सर हिलाया। खुदाबक्स ने कहना शुरू किया "मुझे हैदराबाद के मनसबदार नुसरत जग बहादुर ने आपकी खिदमत में विशेष सदेश देकर भेजा है। खाण्डेराव

दामाडे के पुत्र त्र्यम्बक राव दामाडे के साथ बाजीराव के सम्बन्ध खराब हैं। उसने अपने अब्बाजान की तरह पेशवा की खिदमत में काम करने से इन्कार कर दिया है। शाहू ने गुजरात का सूबा उसके अधीन मान लिया है। पालखेड़ का बदला नुसरत जंग लेना चाहता है और यदि आप भी बुन्देलखण्ड की हार का बदला लेना चाहते हैं तो हाथ मिलावें। त्र्यम्बक राव अभी बड़ोदरा के पास में है। उन्होंने बाजीराव को परास्त करने में हैदराबाद की सहायता मांगी है। इमदाद मिलने से सफलता की पूरी गुंजाइश है। आप अगले जुमे के दिन मिलने पधारें। तो सारी गुफ्त होगी।" मोहम्मद बंगस ने अजीमुद्दीन से इशारे में बात की और मिलने की हां भरली। खुदाबक्स मुजरा करके वापस चला गया।

दिल्ली दरबार का विशेष हुक्म था कि एक मनसबदार दूसरे मनसबदार के सूबे में बिना इजाजत के कभी नहीं मिले। इसलिए दोनों मनसबदारों ने हैदराबाद और मालवे की सीमा पर नर्मदा नदी के तट पर बसे हुए एक छोटे से कस्बे अकबरपुर में मिलने का निश्चय किया।

अकबरपुर यहां से एक पड़ाव दूर था। मोहम्मद बंगस अपने खास अंगरक्षकों के साथ जुमे की नमाज के वक्त पहुंच गया। खुदाबक्स कुछ सैनिकों के साथ खड़ा था। बंगस के पहुंचने के बाद खुदाबक्स ने इशारे से जानकारी दी। बंगस बजरे में बैठकर निजामुल मुल्क के बेटे नुसरत खां से मिलने गया। दो घड़ी तक गुफ्तगू करके वापस तटपर आया और सीधा इन्दौर के लिए कूच कर गया।

दोनों मनसबदारों ने मिलकर योजना काफी सोच समझकर बनाई और दामाडे को पूरा सहयोग देकर पालखेड़ा और बुन्देलखण्ड की हार का बदला लेना चाहते थे। दामाडे को इस सारे कार्य को पूरा हो जाने पर दिल्ली दरबार से दक्षिण की सरदेशमुख और चौथ का अधिकार पत्र दिलवाने का आश्वासन दिया। यह भी आश्वासन दिया कि हमारी फौज पीछे रहेगी। पहले आक्रमण मराठी सेना करेगी उसके पीछे दोनों सेनाएं

मिलकर मराठी सेना को सहयोग देंगी। दामाडे को सनिक ग्रभियान की सूचना नासिरजग देगा क्यों कि उससे ही दामाडे ने बाजीराव के विरुद्ध सैनिक ग्रभियान में सहायता मांगी है। नासिर जग ने दामाडे को सारी जानकारी भिजवादी।

× × × ×

सैनिक ग्रभियान पर रवाना होन के पूव पूना में बाजीराव ने फिर रात को सलाह के लिए बठक बुलाई। ग्राज दीवान खाने में खास हलचल थी। चौकसी की विशेष व्यवस्था थी। सैनिक बड़े उत्सुक थे कि कल किस ग्रोर कूच करना है। प्रथम प्रहर का घड़ियाल बोलने के बाद धीरे धीरे सामन्तगण ग्रान शुरू हो गये। सबसे पहले चिमनाजी ग्रप्पा ग्राये। उनका दमा इन दिनो ठीक था। फिर भी उनके ग्राने की सूचना उनकी खासी से ही लग जाती थी। एक एक करके सभी सामन्त ग्रा गये।

सब एक दूसरे को देखकर ग्राश्चय व्यक्त कर रहे थे। इस समय ऐसी क्या परिस्थिति हो गई है जो सबको एक साथ बुलाकर सनिक ग्रभियान के बारे में विचार किया जा रहा है। दीवानखाने मे चारो ग्रोर बठकिया लगी हुई थी। उन पर सफद गद्दिया बिछी हुई थी। बीच मे ईरानी गलीचा लगा था सामने खड़े गणेश का विशाल तैल चित्र लगा था। पेशवा के पास म थोड़ी नीची चिटनिस की बठकी थी। उसके सामने खरीतों का पुलिन्दा रखा था। चारो ग्रोर समइयां जल रही थी। गणेश के सामने धूपदानी थी जिसमे से मधुर-मधुर सुगन्ध चारों ग्रोर फल रही थी। बाजीराव सफेद वस्त्र पहने था। बाजीराव के दाहिनी ग्रोर चिमनाजी ग्रप्पा बठे थे। उनक चेहरे पर पिछली थकान के चिह्न नजर ग्रा रहे थे। परन्तु इन दिनों में पूर्ण स्वस्थ थे। दोनो भाइयों के ललाट पर चन्दन ग्रौर केशर का छोटा सा खूबसुरत त्रिपुण्ड लगा हुग्रा था। बाजीराव ने पगड़ी धारण कर रखी थी ग्रौर गले मे दुशाला था। यह बाजीराव की ग्रादत थी कि विशेष बठक होने पर ही वह पेशवा की पगड़ी धारण करता रेशमी

दुशाला व कमर में कमरबंध और कटार या रख करता था। सभी सामन्त पेशवा को मुजरा करके अप्पा से स्वास्थ्य के बारे में इशारों से बात करके अपने-अपने स्थान पर बैठ जाते थे। बाजीराव ने आंख घुमाकर देख लिया कि सब पधार गये हैं तब धीर व गम्भीर आवाज में बोला —

'आप लोगों को पहले बता चुका हूं कि जोधपुर महाराजा अभयसिंह अहमदाबाद के मनसबदार होकर आ गये हैं और दिल्ली से हमारे वकील ने खबर भिजवाई है कि मोहम्मद बंगस मालवे का सूबेदार होकर चला गया है। महाराजा अभयसिंह ने हमें मिलने के लिए अहमदाबाद बुलाया है। बड़ोदरा के पास दामाड़े अपनी सेना सहित सरदेश मुखी व चौथ वसूल करने के लिए लगा हुआ है। मराठा राज के दोनों शत्रु हैं। हैदराबाद भी कोई ज्यादा दूर नहीं है। इन तीनों से मराठा राज को सुरक्षित रखना है। इसलिए मेरा विचार है कि होल्कर सीधा नर्मदा के तट पर बंगस और दामाड़े के पास से सारी निगरानी रखें। अप्पा खानदेश जाकर निजाम की गति विधि पर निगरानी रखे। बाकी के सब सरदार मेरे साथ अहमदाबाद और बड़ोदरा के बीच में ठहरें। मैं वहां से अहमदाबाद मिलने जाकर आगे जैसी स्थिति होगी उसके अनुसार सारी व्यवस्था कर ली जाएगी। होलकर और अप्पा सारी जानकारियों से मुझ अवगत कराते रहें।"

शरबत व पान के बीड़ आ गये। वातावरण की गम्भीरता दूर हो गई और सभी ने हल्की फुल्की बातें करते हुए शरबत लिया और पान के बीड़े लेकर चले गये। होल्कर को बाजीराव ने खास ताकीद दी कि वह सबसे पहले रवाना होकर तेजी से अपने गतव्य स्थान पर पहुंचे और अपने खबरनवीस को रात को ही रवाना करे ताकि हर घटना की जानकारी होती रहे।

दशहरे के दूसरे दिन सब अपनी सेना लेकर अभियान पर जाने लगे। दो तीन दिनों में पूणा जो हलचल का घर था खाली हो गया।

शनिवारवाडे में सुरक्षा कमचारी रहे या बाजीराव के अग रक्षक। अभि-यान की यात्रा शुरू होते ही खबरनवीसी का काम तेजी से होने लगा। सुतर सवार, घुडसवार तजी से आने जाने लगे। महाराज अमर्यसिंह ने अहमदाबाद के शाही बाग को मिलने का स्थान उपयुक्त समझा। बाजी-राव ने मराठी घुडसवारो को वहा की निगरानी के लिए भेज दिया।

तीन पडाव मे ही बाजीराव अहमदाबाद के पास पहुचा। अपने पहुचने की खबर महाराज अमर्यसिंह के पास मे पहुचा दी। महाराज ने अहमदाबाद में दूसरे दिन शाम को शाही बाग में मिलने का निमत्रण दिया। शाही बाग में तम्बू गाडकर सजा दिये। चारो और आकाशदीप जल रहे थे। मशालें लिए मशालची भी जगह जगह खडे थे। कडवे तेल की गध सारे वातावरण मे फल रही थी। ठड पडने लगी थी। सुर्यास्त जल्दी होने लगा था रातें लम्बी। जगह जगह अगरक्षक खडे थे। मराठा और राजपूत मिलकर सुरक्षा व्यवस्था कर रहे थे। तम्बू के पास मराठी घुडसवार सेना के जवान तनात थे। खास खास आदमियो को ही यह जानकारी थी कि बाजीराव यहा मिलने आ रहे हैं। सूर्यास्त के बाद बाजाराव अपने अग रक्षकों के साथ आया। महाराज अमर्यसिंह का प्रतिनिधि अपने मुख्य रक्षकों के साथ बाजीराव का स्वागत करने माग में ही साथ हो गया था। बाजी-राव तम्बू के फाटक पर आ कर उतरा। महाराज अमर्यसिंह स्वागत करने फाटक तक आये। एक दूसरे का अभिवादन करने के बाद गले मिले और महाराज अमर्यसिंह बाजीराव को तम्बू मे ले गये।

सामने गादी पर सोने का काम किए हुए सिंहासन थे। सारा तम्बू प्रकाश से जगमगा रहा था हीने की गन्ध चारो और फली हुई थी। दोनो एक पहर रात व्यतीत होने तक बातें करते रहे, खाना पीना भी साथ साथ चलता रहा। महाराज अमर्यसिंह ने बताया कि मेरे खबरनवीस द्वारा सूचना मिली है कि दामाडे न आपके ऊपर आक्रमण करने के लिए निजाम से सहायता मांगी है। निजाम ने मोहम्मदबगस को उसकी हार का बदला

'असा अनुभव करता हू वही कह रहा हू।'

'मैं यह कहां कह रही हू कि आप झूठ कह रहे हैं?"

'आज तो मौका ही नहीं मिला। पहले लिखा पढ़ी का तनाव था फिर सशय का भार था। तुम्हारे पास आने के बाद ही तनाव से मुक्त हुआ हू और संशय से दूर।'

"आज प्रशसा अधिक हो है," 'सीने पर मुँह रखती, मस्तानी बोली।"

"तुम्हारे पास में हों तब दूसरी इच्छा थोड़ी ही होती है" आलिगन करता बाजीराव बोला।"

'आलिगन देती हुई मस्तानी बोली— समई को क्यों शर्मिन्द करते हो।"

"तुम्हारा रूप सौन्दर्य समई को कुठित करता है।"

X X X X

तीसरे पहर से छावनी में हलचल होने लगी थी। सनिक कूच करने की तैयारी में लग गये। उन्हें पहले ही ऐसा लगने लगा था कि कब उन्हें रवाना होना पडे। घोडो के मालिश करके तयार करने लगे। साज सामान सभालने लगे थे।

सूय की प्रथम किरण के साथ ही पायेगा द्वार पर आकर खडे हो गये थे। धीरे धीरे सब सरदार आने लगे। आज सबके चेहरों पर खुशी की लहर थी। बढ़ते जाते और कल की खातरदारी का फिर आनन्द लेने लगते। बाजीराव के आते ही सब ने खडे होकर मुजरा किया और उसके बैठते ही सब यथास्थान बठ गये। बाजीराव के सफेद अगरखा और पायजामा था। कमर में जरी का कमर बध था। धीरे धीरे पान चबा रहा था हीने की मधुर सुगन्ध उसके आते ही सारे तम्बू में फैलने लगी

हस मुख चेहरा ग्रानन्द की अतिशयता को प्रकट कर रहा था । बाजीराव ने संधि की प्रमुख बातो का जिक्र किया और बताया कि एक दो दिन में लिखा पढी होकर दोनों के हस्ताक्षर हो जावेंगे । सबने एक साथ कहा कि 'यह ग्रापकी सबसे बडी विजय है कि बिना लडाई लडे 13 लाख टका हर साल मिलता रहेगा" बाजीराव ने कहा, 'यह बात ठीक है परन्तु कब तक ? कल दिल्ली दरबार महाराजा का तब्दील न करे ग्रौर न महाराज के मन मे संशय पदा हो । हमारी सबसे बडी जीत इस बात मे है कि दाभाडे के षडयन्त्र की जानकारी मिली ग्रौर राजपूत सेना व तोपचियों का एक दस्ता हमारे साथ रहेगा । दूसरा मराठा राज का नासूर पिलाजी गायकवाड भी इसमे साफ हो जावेगा शाहू की पताका गुजरात मे निशंक घूमेगी ।' सभी ने इस बात को स्वीकारा ।

तब तक शरबत व पान के बीडे ग्रा गये । सब सरदारो को शरबत पेश किया ग्रौर पान के बीडे विदाई के दिए गये । यह सलाह रही रात के प्रथम प्रहर मे बडोदरा को किनारे छोडकर पहाडी की घाटी में पहुच जावें ।

सबके जाने के बाद बाजीराव खबरनवीसो से ग्राये हुए समाचार सुनता रहा । खरीतों को सुनकर जबाब लिखवाता रहा । महाराजा शाहू को एक लाख टका भेजने की व्यवस्था की ग्रौर महाराजा ग्रभयसिंह के साथ जो संधि हुई थी । उसकी जानकारी लिखी दाभाडे को भी एक खरीता सलाह के रूप में भिजवाया कि महाराजा शाहू से जाकर मिलकर सारी स्थिति साफ करलें । इसकी जानकारी सतारा भी भिजवाई । सूर्यास्त तक बाजीराव काम करता रहा । चिरागिया कब ग्राकर समई जला कर चला गया यह चिटनिस ग्रौर बाजीराव को पता ही नहीं चला । तम्बू के बाहर मशालें जलादी गई । प्रकाशदीप सुतर सवारों ग्रौर खबरनवीसों को मार्ग दिखाने का काम करने लगा । पायगा ने ग्राकर ग्ररजकी कि महाराजा ग्रभयसिंह के वकील पधारे हैं । बाजीराव ने

चिटनिस की ओर देखा । चिटनिस बाहर जाकर स्वागत करके वकील को लाया । संधि पत्र पढ़े और बाजीराव के हस्ताक्षर करवाकर दिया प्रतिनिधि ने कहा– छ लाख टका कल दोपहर तक आपके पास पहुच जावेंगे । 'सेना के एक दस्ते को बड़ोदरा के पास आपसे सम्पर्क करने को कह दिया है ।" तब शरबत मिठाई सूखे फल प्रतिनिधि के लिए आ गये । प्रतिनिधि के आदमी नजराने का सामान लेकर आ गये। मोहरें 'वस्त्र' सोने के काम की तलवार आदि बहुत सारे सामान के साथ-साथ घोड़े की सूचना थी जो बाहर खड़ा था। बाजीराव ने हाथ लगाकर सिर झुकाकर सामान स्वीकार किया । तब चिटनिस ने महाराज के लिए नजराना मगवाया और प्रतिनिधि कायस्थ को सोने की मो०र व वस्त्र दिए । नोकरों को टके दिए गये । प्रतिनिधि मुजरा करके वापस चला गया ।

× × × ×

सेना सारी कूच कर चुकी थी । बाजीराव के अगरक्षक चिटनिश व *कारकून खास पायग और हरकारे रह गये थे ।*

बाजीराव जनान खाने मे जाने की तयारी करने लगा । चिटनिस खरीतो पत्रों को एकत्रित करके खाले में रखने की तयारी कर रहा था । कि पायगे ने आकर मुजरा करक अरज करी कि पडित चिमनाजो का सुतर सवार खरीता लेकर आया है । सर हिलाकर इशारा किया । पायगा वापस जाकर सुतर सवार को लाया । उसने झुक कर अरज करी और बख्तर मे हाथ डाल कर थलो निकाल कर पश की । चिटनिस ने उठकर ली उसे खोल कर डिब्बा निकाल कर सील तोडकर खरीता निकाला और बाजीराव के सामने पेश किया । सुतर सवार वापस बाहर चला गया ।

बाजीराव को खरीता पढते हो खुशी हुई । उसने चिटनिस को सुनाते हुए कहा 'गायकवाड और दामाडे भीलपुर के मदान मे लडने क लिए एक साथ मिल हुए हैं । निजाम व बगस की सना भी वही पहुचने वाली है । मेरे विचार से आप निजाम व बगस की सना पुगने के पहले ही

उन पर धावा मार कर हटा दें। मैं निजाम की सेना का रास्ता रोकू या छुटपुट धावे मारू। बगस के मार्ग में होल्कर है। इसलिए बगस मार्ग बदल कर दामाड और गायकवाड के पास पहुचे तो दो पडाव और लगेंगे।"
बाजीराव ने मजमून लिखाया कि हरावल सेना को भेजकर परेशान करो। महाराजा अमर्थसिह से की गई सधि की जानकारी दी। सरदेशमुखी और चौथ की वसूली तेजी से करने के लिए ताकीद की। रकम सतारा भेजने से मना किया। यहा एक लाख टका भेज दिए हैं।

खरीता सील कर उसी समय हरकारे के साथ भिजवाने की व्यवस्था की।

× × × ×

को प्रथम प्रहर का घडियाल बजने के साथ बन्द कर दी जाती थी और उसके ताला लगा दिया जाता था। वह प्रातः सूर्योदय से पहले वापस खोली जाती थी। फाटक खुलने के साथ वह बन्द हो जाती थी। फाटक के दोनो ग्रोर बुर्ज थे। बुर्जों के पास सैनिकों के रहने के लिए कोठडियां थी। एक बुर्ज के छोटी खिडकी थी जो रक्षक विशेष परिस्थिति में उसे खोलकर शिनाख्तत करके शाहू महाराज को सूचना भिजवाने और उनके खास पायगे आकर फाटक खोल कर आगन्तुक को अन्दर लेते थे। ऐसा मौका कभी नहीं आता था।

बाजीराव सतारा के मुख्य मार्ग छोड कर पीछे जाने लगा। किले के एक दम पीछे आ गया। वहां पेडों का गहरा झुरमुट था। चारा और घोर थी। घोर के पास मे एक छोटी सी जगह खाली थी। खाली जगह से अन्दर जाकर एक लोहे का भारी भरकम छोटा फाटक लगा था उसे खटखटाया खटखटाने मे फाटक मे से एक बारी खुली और पूछा कौन

'पेशवा"

निशान'

अंगूठी खिडकी के पास दिखाते हुए कहा– यह देखो

'ठहरिये। अभी खोलता हूं।"

थोडे समय बाद चर चर करते हुए जंग लगा फाटक खुल गया। सामने अपने अजीज को देखते ही बाजीराव ने उसे गले लगा लिया। धीरे धीरे सभी अन्दर आ गये। फाटक फिर बन्द कर दिया और पेशवा अपने साथियों सहित गुप्त-मार्ग द्वारा किले मे गया और रात किलेदार के घर में गुजारी। किलेदार को पहले से बाजीराव के आने की जानकारी थी उसने रात को ही शाहू को एकान्त मे यह जानकारी दे दी थी और सुबह मिलने की बात तय कर ली थी। बाजीराव सुबह महाराजा शाहू से मुलाकात करने गया।

शाहू अपनी बैठक में बैठे थे। उनके पास में गणपति का विशाल तल चित्र लगा हुआ था। गणपति ने अपने पिताम्बर को सप से बांध रखा था। धूप की सुगन्ध फैल रही थी। उत्तर दिशा की खिड़कियां खुली हुई थी। महाराजा शाहू का लम्बा जीवन मुगल जनान खाने मे बीता था इस कारण वर्षों तक स्थूल जीवन बिताने के कारण स्त्रैण होकर आराम तलब हो गये थे परन्तु मुगल जनान खाने में षड्यन्त्रों को देखते रहने के कारण स्वभाव के पारखी और धयवान थे। बातों को गुप्त रखने में सिद्धहस्त थे। पेट की बात अधरों पर नही आने पाती थी। इसी कारण बाजीराव के विरोधिया से रात दिन घिरा रहने के बाद भी वे कभी भी अपना विचार नही बदलते थे। बाजीराव के साथ किलेदार था दोनों ने मुजरा किया और शाहू ने ईशारे से पास में बठने को कहा। शाहू ने पूछा—

'सब खरियत है।'

'आपको मेहरबानी से सब ठीक है।'

दामाडे का समाचार आपने लिखा था।"

'दामाडे निजाम व बगस से मिलकर आपको पराजित करके अपना अधिकार जमाना चाहता था। इसकी जानकारी महाराजा अभयसिंह और अप्पा ने खानदेश स दी इसके लिए मुझे एक चाल चलनी पड़ी। इस गुढ की सूचना अपने प्रतिनिधि द्वारा दिल्ली दरबार में भिजवाई। जिसका परिणाम यह निकला कि दिल्ली दरबार ने मोहम्मद बगस को ऐन मौके पर निजाम पर आक्रमण करन का हुक्म भिजवाया जिसका परिणाम यह रहा कि बगस ठीक समय दामाडे से अलग होकर निजाम पर धावा मारने की तयारी करने लगा। निजाम के हमदद लोगो ने इसकी जानकारी दी जिसके कारण वह आत्म रक्षा के लिए जग का मदान छोड़कर हदराबाद की ओर भाग छूटा और मैंने अचानक धावा मार कर दामाडे को पराजित कर दिया परन्तु धावे में वह असावधान होने के कारण गोली लगते ही मर गया। शाम को मैंने सेनापति के पद के अनुसार अपने सामने उसको दाह

क्रिया करवाई और बहुमूल्य सामान की सूची बनाकर उसकी माई को सम्भलवाने की व्यवस्था करा दी और आदेश दे दिया था कि किसी प्रकार की परेशानी नहीं उठानी पड़े। अगर मैं ऐसा नहीं करता तो आज शिवाजी महाराज का स्वप्न भग हो जाता और देशद्रोही विश्वासघाती दाभाडे जीत कर आपको परेशानियों म डाल देता और निजाम व बगस पिछले हारो का बदला अपने से लेते और फिर दोनो दाभाडे को भा अपने अधिकार मे कर लेते " शाहू ने सारी बात धय स सुनी और फिर बोला। 'मराठा राज्य की सुरक्षा के लिए तुम्हारा किया काय उत्तम रह। अब उसकी माई को धय देने की बात रही।'

तब तक पेशवा व किलेदार के लिए कुछ फल मिठाई आ गई। फिर दगे का थका और बूरा (शक्कर) दिया और अन्त में पान के बीड़े।

अन्त में शाहू ने कहा 'परसो दरबार में फिर बात होगी। तुम्हारे पीछे कई बातें होती हैं। ध्यान म रहे, शाहू ने खिल्लत दी और जाने की इजाजत दी।

बाजीराव वहा से निकला तब तक नृय नर पर आ गया था। बाजीराव के आदमी भी पहुच चुके थे।

मस्तानी ने भी महारानी से मिल कर अपने व्यवहार से प्रसन्न कर दिया था ताकि वह शाहू को पशवा के विरोध मे न जाने दें।

× × × ×

बाजीराव के विरोधियों को जब इस बात की जानकारी मिली कि बाजीराव के कुछ पायगे व अग रक्षक सतारे में देखे गये तो उनका काम शुरू हो गया षडयन्त्र में तजी आ गई। दाभाडे की हत्या की गई, का लाभ लेकर कई प्रकार की अफवाहो को फलाने लगे, शाम तक सारी जानकारियां पेशवा को खबरनवीस से मिलने लगी। धीरे धीरे सबको जानकारी हो गई कि पेशवा बाजीराव सतारे में आ गये हैं। मिलने के लिए आने वालो का ताता लग गया। हमदद और विरोधी सभी मिलने आये।

'आज शाहू के यहां दरबार था। शाहू का दीवान खाना ज्यादा बडा नहीं था। लम्बा था। सामने गणपति का विशाल तैल चित्र था। उसके दोनों ओर रिद्धि सिद्धि चवर लिए खडी थी। चित्र के सामने एक तबक था जिसमे शिवाजी का राज चिन्ह पडा था। उसके सामने शाहू की गद्दी थी। शाहू के पास पेशवा की बैठक थी। दाये बायें दोनों ओर दूसरे सरदारो की बैठकें थी। सुगंध दरबार में फैल रही थी। दोनों ओर सरदार बैठे थे। महाराजा शाहू अभी पधारे नहीं थे। सरदारों को यह आशा थी कि पेशवा सामने से आवेंगे परन्तु सभी आश्चर्य चकित रह गये जब पेशवा शाहू के साथ पधारे। सभी सरदारो ने खडे होकर मुजरा किया। शाहू ने पेशवा को बधाई देते हुए कहा कि 'आज पेशवा की बदौलत मराठों का राजपूत घरानों के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बंध बराबर मधुर होते जा रहे हैं। राज्य की आय भी बढती जा रही है। आज पेशवा बाजीराव काफी दिनों के बाद दरबार में हाजिर हुआ है। विशेष सूचना भी लेकर आये हैं इस कारण बधाई के पात्र हैं।' शाहू की प्रशंसा से विरोधियों के तन में आग लगने लगी। उनके मरे हुए कान खोये लगने लगे। बाजीराव की ओर देखते हुए शाहू ने कुछ कहने का संकेत किया।

बाजीराव ने खडे होकर गणपति को नमन करते हुए शाहू का मुजरा करते हुए धीर व गम्भीर वाणी मे सबको मराठा राज के विस्तार व सुप्रबंध करने के लिए सहयोग देने व सैनिकों की राष्ट्र के लिए कुर्बानी को याद करते हुए सबको साधुवाद दिया। आगे कहा कि आप लोगो का सम्मत और सहयोग मुझे कार्य करने की प्रेरणा देतो और प्रोत्साहित करती है। आप लोगों को मुझ से शिकायत हो भी सकती है कि मैं कोकण और मुम्बई के द्विपों की ओर ध्यान नहीं देता। औरंगजेब से 30 वर्षों तक लगातार संघर्ष करके ये प्रान्त धन रहित हो चुके हैं। पिछले वर्षों मे कम हुई बरसात ने किसानो को बेघर कर दिया है। मुम्बई के छोटे द्वीप कभी भी हस्तगत किए जा सकते हैं परन्तु इसमे जो जन और धन की हानि होगी उसका प्रतिफल कुछ भी नहीं होगा। यह एक महत्त्व

खर्चीली कार्यवाई होगी। जब महाराज की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हो जावेगी तब कभी भी एक साल का समय देकर इसको पूरा किया जा सकता है।

राजनीतिक दृष्टि से मराठवाड़ा कमजोर है आर्थिक स्थिति बिगड़ी हुई है कर्जे का भार है उत्तरी भारत सम्पन्न और सुदृढ़ है मुगल घराने में फूट है। मनसबदार महत्त्वाकांक्षी हैं। राजपूत मनसबदार उनके साथ नहीं भी हैं और हैं भी। फिर भी हमारे हितचिन्तक हैं। आर्थिक सम्पन्नता है। अगर इस फूट और षड्यन्त्रों के समय हम उत्तरी भारत में अपना प्रभाव और वर्चस्व नहीं बढ़ायेंगे तो भविष्य में हमें ऐसा सुनहरा अवसर नहीं मिलेगा। राजपूतों का सहयोग लेकर हमें उत्तरी भारत की राजनीति में प्रवेश करके पूरा ज्ञान भी प्राप्त करना चाहिए और आर्थिक सम्पन्नता भी। वहां सामाजिक जीवन में जो परिवर्तन आ रहे उनको देखकर हमें संकीर्ण मान्यताओं को छोड़ कर आगे बढ़ना चाहिए। अन्यथा हम कूप-मण्डूक बन कर खत्म हो जायेंगे। महाराजा को मुगलों की राजनीति की गहरी जानकारी है उनकी सम्पन्नता को काफी भोगा है। सामाजिक परिवर्तन को देखा है इसलिए हमें प्रवेश करना चाहिए और मैं चाहता हूं महाराजा मुझे इसकी स्वीकृति प्रदान करें।"

शाहू ने सर हिलाकर स्वीकृति प्रदान की। आगे कहा-"महाराज ने स्वीकृति प्रदान कर दी है। मुझे इस बात की खुशी है। आगे कहा हमें "एक छोर में रहकर इस महत्तो काय को करना है। शिवाजी महाराज आगरा गये। औरंगजेब उन्हें कैद करना चाहता था। मैं दिल्ली का दरवाजा खटखटाकर मुगलों को यह बता देना चाहता हूं कि मराठे अभी जिन्दा हैं।

हमें मुगलों व राजपूतों के साथ राजनैतिक और सामाजिक रिश्ते समान स्तर पर कायम करने चाहिए और रखने चाहिए। राजपूत हमारे भाई बान्धव हैं। उनको सहयोग देकर सहयोग लेकर अपने पांव उत्तर भारत में जमाने चाहिए ताकि मराठों का वर्चस्व रह सके।

मैं कहने मे कोई भूल कर बठा हू तो उसे नजरअन्दाज करेंगे। आप लोग अनुभवी हैं विन हैं, और पूजनीय हैं। आप लोगों मे से अधिकतर मेरे स्मरणीय मराठा राज के सेवक मेरे बापू के साथ कधे से कधा मिलाकर काय कर चुके हैं इस कारण मेरे मागदशक भी हैं।

मैं इसके महाराजा शाहू को नमन करके आसन ग्रहण करता हू।' इसके साथ ही बाजीराव बठ गया। सबने साधुवाद दिया। बाजीराव ने किसी के विरोध में एक शब्द भी न कहकर अपनी भावी नीति स्पष्ट कर दी।

फिर भी दामाडे की बात उठ ही गई। तब शाहू ने कहा मैंने 'उसे बहुत सारे खरीते लिखे कि वह यहां आकर मुझ से बात करले परन्तु वह नही माना। गुजरात मैंने उसके हल्के म लिख दिया था इससे वह सन्तुष्ट नहीं था और मुगलो के साथ मिलकर मराठा विरोध म सैनिक सगठन कर रहा था। भावे मे रण खेत रहा। आज यह सवाल अहम् नही है, राष्ट का है। उसकी भाई आकर इस बारे से निवेदन करेगी तब उसके बारे मे समुचित व्यवस्था करली जायगी।"

तब शाहू ने सकेत किया। एक दासी ने सिरोपाव लाकर पेशवा को नजर किया।

पान के बीडो के साथ दरबार की कायवाही सम्पन्न हुई।

शाम को ही बाजीराव पूणे के लिए रवाना हो गया।

× × × ×

पहर रात ढल चुकी थी। आकाश बादलो से भरा था। आज सुबह से बूदाबांदी हो रही थी परन्तु दिन ढलने के साथ बरसात का जोर होने लगा। मेघ दूर दूर तक गरजते हुए सुनाई देने लगे। बिजली की कौंध भयकर गजन कर रही थी। गजन ठहरती नहीं की उसके पहले ही दूसरी गजन शुरू हो जाती। घटाटोप छाई हुई थी। ऐसा मालूम पडता है कि आज सारा मराठवाडा पानी में डूब जावेगा।

झरोखे का एक पल्ला आधा बन्द करके बाजीराव और मस्तानी बठे थे। कोने मे समई जल रही थी। हवा के झोकों से समई की लौ हिल रही थी। मस्तानी की लटों में हाथ फेरता बाजीराव बोला– 'मस्तानी। तुम्हारी इस काली घुघराली लटों के आगे मेघ पानी भरते हैं। इन में चमकता मुह चन्द्रमा सा दिखाई देता है। बरसाती हवा में वह ठंड नहा जो तुम्हारे बदन का छुने से मिलती है।"

चिपकती मस्तानी बोली– आज कुछ गरी ढली है।'

'तुम्हारे पास आने के बाद मैं मदमस्त हो जाता हू" चुम्बन लेत हुए बाजीराव न कहा।

पीठ पर हाथ फरती हुई मस्तानी बोली– 'सफेद झूठ तो मत बोलिए।

'आलिजा। आप तो ऐसे ही थे।'

यह सत्य है। तुम्हारे पास आने के बाद मे अपने को भूल जाता हू। भेद मिटाकर एक होने की चेष्टा करता हू।" ललचाई दृष्टि से देखता बोला– मुझे तुम्हारा भी पूरा ही सहयोग मिलता है।' होठों पर हाथ रखती मस्तानी बोली– मैं तो साधन हू। एकीकरण का साधन हू। चेष्टा ता आपही की है।"

थोड़ा सोचता गम्भीर होता हुआ बाजीराव बोला–' मस्तानी पालखेड के युद्ध के पश्चात जब मैं सधि की शर्तों को तय करने निजाम की छावनी म गया तब मेरे सामने एक भयकर प्रश्न था। मेरी सुरक्षा का था। उसकी धूर्तता पर विश्वास नहीं था। परन्तु अविश्वास भी नहीं कर सकता था कारण कि वह पराजित था। रहम की भीख माग रहा था। मेरे अग रक्षक साथ थे। खबरनवीस पहले से ही वहां भेजे जा चुके थे। मेरा खास गोविन्दबल्लाल साथ में था। मेरे दिल म घात प्रतिघात हो रहे थे सशकित भावो को साथ लकर उससे मिलने गया। मेरा यह पहला अवसर

था। मेरे सस्कार भी बाधा डाल रहे थे। फिर भी विजय का प्रतिफल लेने जाना आवश्यक था और मैं गया।

उसकी छावनी एक नगर के बराबर थी। छावनी के प्रवेश द्वार के पास उसके सरदार खडे थे। मेरे अग रक्षक भी खडे थे। सभी डील डौल से भारी थे। मैं उस भीड मे युवा था। बिजली की तरह स्वस्थ व चचल निजाम के और मेरे विश्वासी व्यक्ति आगे चले। निजाम अपने तम्बू के बाहर हमे स्वागत करके लेने आया। ईरानी गलीचे लगे हुए थे। रेशम के पडदे दरवाजों पर झूल रहे थे। गलीचो पर चलने से पाव अन्दर धँस रहे थे। मेरी गो के चमडे की पुणे की जूती चू च की आवाज कर रही थी। मुझे बडा बुरा लगने लगा कि सब शान्ति से चल रहे हैं और मैं आवाज कर रहा हू।

निजाम खुद मुझ से भारी था उसका लडका भी। उसके नौकर चाकर भी भारी भरकम। गोल गीदवे का सहारा लेकर बठा तो मैं ससम छिपने लगा। दुआ सलाम हुआ तब तक बहुत सारा खाने का सामान फल मेवे आ गये। मेरा धम या मेरे सस्कार भी उनको छूने से मना कर रहे थे। निजाम आग्रह कर मुझे विवश कर रहा था तब मेरा सलाहकार गोविन्दबल्लाल जा व्यवहार कुशल व चतुर था। समय को भांप गया और निजाम की और देखकर बोला—पडितजी सूखे फलो के अलावा कुछ नही लेंग। निजाम ने सकेत किया। बादाम किशमिश अखरोट काजू अजीर आदि मवे सोने की रकाबियो मे आ गये। सकोच करते हुए निजाम बोला यह सब सामान हिदू दासियों के हाथों का है। आप निसकोच रहें। मुझे धम का ख्याल है। मैं मन मे शर्मिन्दा हुआ और धीरे धीरे मोळाया खाने लगा। तब तक शरबत आ गये। अब मेरे सामने और धम सकट हो गया। गोविन्दबल्लाल ने आंख से सकेत किया कि ले लीजिए और खुद ने ले लिया। सकोच करते हुए मैंने ले लिया। मेरी झिझक मुझे रोक रही थी।

संकोच दूर करने के लिए निजाम इधर उधर की बात करने लगा। और गुफ्तगू करने के लिए पास में लगे तम्बू में गया। सलाह का तम्बू तो महल में भी खूब सूरत था। निजाम की शान शोकत उसमें खेल रही थी। मसनदों के सहारे बठकर बात की। निजाम हार चुका था फिर भी उसकी बात में बड़प्पन था। वह खुश मिजाज था। उसके पास एक तहजीब थी। शान थी। बचपन में बापू के साथ दिल्ली दरबार की जो शान शोकत देखी थी उसकी याद ताजा हो गई। उसकी खातिरदारी आवभगत से विभोर हो गया। दो तीन दिनों तक उसके पास शर्तों को तय करने के लिए जाना पड़ा। बात करके जब हम वापस अपने तम्बू में पहुंचते तो ढर सारी मिठाईयां फल मेवे निजाम की ओर से तोहफ के रूप आये थे। मैंने इसका कारण गोविन्दवल्लाल से मालूम किया तब उसने बताया कि वार्ता संतोष जनक चल रही है यह इसका प्रमाण है।

हार जीत का प्रश्न अलग है। तहजीब का अलग। निजाम की खातिरदारी से मैं बहुत प्रसन्न हुआ और मन में विचार किया कि मराठों को भी बातचीत में सलिका शान शोकत से रहने का तरीका सीखना होगा। एक तहजीब इन्सान का तकाजा है। हर मनुष्य के लिए आवश्यक है।

मराठी विचारा से बूढे हैं। दुनियां कहां से कहां पहुच गई और मराठी आज भी दकियानूसी विचार को पाल रहे हैं। मेरे मन में नया दृष्टिकोण आया और उसी के अनुसार शनिवार बाडे का निर्माण करवाया। शान शोकत देने की चेष्टा की परन्तु आम जनता उसको अपना नहीं सकी। तुम्हारे आने के बाद एक हलचल हुई। फिर भी कुछ बातें सिखी। परन्तु जो चमक दमक शान-शोकत तहजीब तुम्हारे महल में है वह दूसरी जगह नहीं।'

बाजीराव कहता जा रहा था और मस्तानी मूक होकर सुन रही थी। अपना प्रशसा सुनके बोली– 'सारी प्रशसा आज ही करोगे या कुछ बाकी भी रखोगे।''

मस्तानी। यह प्रशसा नहीं है, हकीकत है। शिवाजी महाराज ने भी उत्तरी भारत की यात्रा राजनतिक और आर्थिक दृष्टि को ध्यान में रखकर की। सम्पूर्ण राजनीति का दिल्ली प्रमुख केन्द्र है। सभी की दृष्टि उसी ओर हैं। ईस्ट इण्डिया कम्पनी भी मुगल दरबार को केन्द्र बिन्दू मे रखती है। फासीसी भी तब मराठे उसकी उपेक्षा कसे कर सकते हैं। भारत की तमाम शक्तियो का ध्रुवीकरण करना है तो उसे दिल्ली दरबार के वचस्व को चुनौती देनी होगी। उस पराजित करने पर ही मराठा शक्ति प्रथम श्रेणी का स्थान ग्रहण कर सकती है। उसकी शक्ति की उपेक्षा करके कूप मुडूक बनकर कोई सर्वाधिकारी नहीं हो सकता।

उत्तरी भारत मे राजपूत मुगलो की शक्ति के आधार स्तम्भ हैं। आज उनके साथ हमारा मत्री भाव है। उनके सहयोग से हम मुगल साम्राज्य का नष्ट कर सकते हैं परन्तु विरोध लेकर कुछ भी नही। सैयद बन्धुओं के सहयोग से हमारी प्रथम दिल्ली यात्रा बहुत सफल रही। गृह कलह को देखा स्वार्थ की लपलपाती जिह्वा को देखा। पाप व पुण्य को एक साथ देखा नतिक पतन देखा इससे राजनीति को गहराई से समझने के लिए नई दृष्टि मिली। उत्तरी भारत भी दक्षिणियों के सहयोग की आकाक्षा करता है। उसी धरातल पर आज मराठा राजपूत राजनतिक दृष्टि से एक दूसरे के पूरक हो रहे हैं।

मुगल मनसबदारो को हराने के बाद उनकी तहजीब वाकपटुता परखने को मिली। हार को उन्होने एक जीवन का खेल लिया। आत्मवचना या प्रताडना नहीं। सतत प्रयत्न सफलता देता है। हार कोई जीवन अन्त नही है। महाराज छत्रशाल ने मुझे राजपूत गौरव मुस्लिम सस्कृति का समन्वय करके एक अनमोल ही। दिया है जिसके आधार पर मैं एक—— —'

बीच में टोकती मस्तानी बोली, मेरे ऊपर इतनी मेहरबानी हो । ' मस्तानी । तुम समझती नहीं । मैं आज थोड़ी फुरसत में हूं । जिसका पैर रात दिन घोड़ों की रकाब में रहता है । मौत आगे पीछे घूमती है । उसने कोई भूल तो नहीं की है '' बाजीराव ने कहा ।

अब बहुत हो गया मस्तानी ने कहा ।

खड़का सुनकर दोनों सम्भल बैठे और पूछा कौन

दस्तरखान लग गया है दासी ने आकर झुककर निवेदन किया ।

गृह-कलह

औरंगजेब की मृत्यु के बाद दिल्ली का दरबार एक तमाशा बन गया था। फजर की नमाज किसी बादशाह के नाम पढ़ी जाती और मगरिब की नमाज और किसी के। बादशाह पलट जाने के साथ साथ मनसबदार भी बदले जाते थे। किसी को किसी पर विश्वास नही था। मनसबदार स्वार्थी व लोलुप थे। वजीर उनसे बढकर। मनसबदार एक दूसरे के पर काटने में लगे रहते थे। वजीर कमरूदीन निजाम, माहुम्मद बंगस, महाराजा अमयसिंह सभी का दृष्टिकोण स्वार्थ पर टिका था। महाराजा जयसिंह अकेला सच्चीबात कहने वाला था। परन्तु मनसबदार एक दूसरे के मित्र थे और शत्रु भी।

ज्नान खाने मे षडयन्त्र चल रहे थे और मनसबदार उनका फायदा उठा रहे थ। षडयन्त्रों के कारण वजीर की, मसनबदारों की उठा पटक होती रहती थी। ईरानी, तुरानी मनसबदार आपस में लडते रहते थे। हिन्दू मनसबदारो का सहयोग लेकर प्रभावशाली होना चाहते थे और हिन्दू मनसबदारों को प्रोत्साहन भी नही देना चाहते थे। दोहरे मापदण्ड म मुगल दरबार कठपुतली का घर था। चापलूसा की भीड बढती जा रही थी इस भीड मे किसी का पद सुरक्षित नही था। गुजरात और मालवा की सुबेदारी पर जोधपुर और जयपुर की नजर थी। निजाम मालवा की सुबेदारी चाहता था। मुहम्मद शाह निजाम से नाराज भी था और दक्षि–

णियो को दबाने के लिए उसका सहयोग भी चाहता था। निजाम बादशाह को सहयोग तो देना चाहता था परन्तु दिल्ली से दूर रहकर ताकि हैदराबाद को राजधानी बनाकर स्वतन्त्र सुल्तान बन सके।

लालच का टुकड़ा कभी किसी को दिया जाता और आश्वासन किसी को, दक्षिणियों को निकालने में पूरी मदद दी जावेगी। मनसबदार उत्साह से आगे कदम बढ़ाता और जब आवश्यकता का खरीता दिल्ली दरबार में पहुँचता तो उसे हटा दिया जाता और बादशाह को समझाया जाता कि इसका प्रभावशाली होना गद्दी के लिए खतरनाक है। बात वहीं रह जाती और मनसबदार मजबूर होकर दे ले के सन्धि करके अपना गला छुड़ाता। इस उठापटक से दिल्ली दरबार की साख जा रही थी। मनसबदार दिल्ली से दूर ही रहना पसन्द करते थे।

दिल्ली दरबार निजाम से दुखी था। निजाम मराठों व वजीर से, वजीर निजाम से मराठों से, हिन्दू मनसबदारों से और बादशाह व मोहम्मद बगश से। सब एक दूसरे से दुखी थे।

प्रशासनिक कमजोरी से जनता परेशान थी। जगह जगह बलवे होने लगे। कारिन्दे, कारकून जनता का शोषण करते थे मनसबदारों की मनमानी होने लगी। अराजक तत्व सक्रियता से क्रियाशील थे। कारिन्दे मिलकर लूटपाट हत्या करने लगे। कहीं सुनाई न होने के कारण जनता अपनी व्यवस्था करने लगी। सेठ साहूकार जवां मर्द को नियुक्ति देकर अपनी सम्पत्ति को सुरक्षित रखने की व्यवस्था करते थे। कोतवाल काहिल और घूसखोर हो गये थे।

मराठों के आक्रमण बराबर होते जा रहे थे। बगश को मालवे से हटाकर कड़ाकी सूबेदारी दी। निजाम और मराठों से निपटने के लिए

महाराजा जयसिंह को मालवे का सुबेदार बनाकर भेजा। महाराजा जयसिंह ने मालवे की सुबेदारी सम्भालते ही बाजीराव पेशवा को आकर मिलने के लिए खरीता भेजा।

× × × ×

मस्तानी को लेकर बाजीराव की भाई राधाबाई और पत्नी काशीबाई ने घर में झगड़ा कर रखा था। घर मे शान्ति नहीं थी। ब्राह्मणों का सहयोग मिलने से घर का वातावरण गहरा अशान्त हो उठा। राधाबाई की सभी शिकायत करते बाजीराव ने यह काम अच्छा नहीं किया। इससे वह दुःखी रहने लगी और वक्त बेवक्त बाजीराव को इस बारे में उलहना भी देती रहती। राधाबाई का मानसिक धरातल इतना ऊचा नही था कि वह राजनतिक सबध को समझ सके। इसी बात से काशीबाई परेशान थी। रुढ़ग्रस्त समाज की, परम्परा पढ़कर कुछ नई बात समझना उसके वश की बात नही थी। मराठी समाज रुढियों से घिरा था सामाजिक सकीर्णताओं से जकड़ा हुआ था। ब्राह्मण छूआछूत न माने, सबके यहा खाना पीना किसी को सहन नही था। उन्होंने धार्मिक दृष्टि स मन को शुद्ध करने के लिए उत्तरी भारत के तीर्थ स्थानों की यात्रा करने के लिए कहा।

बाजीराव ने इस प्रस्ताव को मजूर कर लिया और तीर्थयात्रा पर भेजने की व्यवस्था कर दी। महाराजा उदयपुर, महाराजा जयपुर और निजाम को सूचना भेज कर मार्ग में इनको किसी प्रकार की असुविधा न हो इसकी व्यवस्था करने का सकेत द दिया था। तीर्थ यात्रा के समय उन्होंने नाथद्वारा में श्री नाथजी के दर्शन किए। ऐकलिंग महादेव के दर्शन किए। राजघराने की औरतो से मिली। पासवानों को देखा। रखैलो का हजूम देखा। शान शौकत देखकर दग रह गई। जयपुर पहुच कर राज महलो को जनाना खानों को देख कर स्तमित रह गई। महारानिया के साथ दास दासियों का बड़ा लवाजमा देखा। महारानिया से मुलाकात की, पडदायता

ठंडा पवन का स्पर्श पाते ही बाजीराव को आनंद की प्राप्ति हुई। मुँह पर छाई हुई दिन भर की हरारत कम होने लगी। एक मुस्कराहट फलने लगी। हरारत भी ऐसी बुजदिल नही थी कि वह अपना असर इतनी जल्दी छोड दे। मुस्कराहट मे हरारत झांक रही थी। गले की चद्दर से मुंह पोंछा जसे दिन भर की तमाम थकान को पोंछ कर मिटाना चाहता हो।

महल के फाटक के पास पहुंचा तब दासी ने मुजरा किया और बताया कि मस्तानी अन्दर सोई हुई है। तबियत नासाज है।

मस्तानी पलंग पर लेटी हुई थी। आखें बन्द थी। एक दासी सर दबा रही थी दूसरी पर। बाजीराव को देखकर दासियां खडी हो गई तब मस्तानी को पता चला कि कोई खास बात हुई है आधी आखें खोलकर देखा तो आश्चर्य से भर गई और बैठने की चेष्टा करती हुई बोली –

"आलीजा। आप कब पधारे।'

'अभी।"

आप इस तरह क्या देख रहे हैं।"

'मैं देख रहा हू जीवन कितना मीठा और खट्टा। रातदिन उधेड बुन में लगा रहता हू। कितने ही मनुष्य मिलते हैं कितनी ही बातें बताते हैं सारी बातें न तो सच्ची होती हैं और न झूठी। खुद के अनुभवों के आधार पर उन बातों को परखते हैं कभी कभी अनुभव झूठे साबित हो जाते हैं और झूठी बातें सच्ची हो जाती हैं। पिछले कई दिनों से देख रहा हू कि तुम पीली पडती जा रही हो। तुम्हारे जीवन का एक और अध्याय शुरू होने जा रहा है। मस्तानी। तुम रात दिन मस्ती का आलम बिखेरती थी। आज एकान्त वासिनी हो रही हो। दुनिया से दूर अन्तमुखी हं रही हो। एक नई दुनिया बसाने जा रही हो।

' यह पुरस्कार आपका है । मैं तो धात्री हू ।"

"नहीं । तुम धात्री नही निर्मात्री भी हो अपने जिगर के खून की एक एक बूद देकर अनजान का निर्माण कर रही हो । सिर्फ खून ही नही। अपना सब कुछ '

' मालोजा । यह तो आपके प्रेम की निशानी है ।"

"अकेले मेरे नही तुम्हारे और मेरे दोनों का सम्मिलित रूप है ।' बाजीराव आकाश मे घूमने लगा । मस्तानी नींद की गोद में जाने लगी । बाजीराव सोचने लगा "यह कितनी चतुर है । मेरे परिवार की सारी घृणा और नफरत पी कर मुझे सवस्व प्रदान कर रही है । मेरी आत्मा में खुद को मिलाकर एकाकार हो गई । यदि यह मुझे अतिन्द्रीय सुख नही देती सहायक नहीं होती तो मेरे लिए नये नये मार्ग बन्द ही रहते । अन्धकार में भटकता रहता । मेरे सुख के लिए अपने अस्तित्व को भुला दिया । लुटा दिया । कुर्बान कर दिया ।"

खटखट की आवाज सुनकर बाजीराव के विचारों की शृखला टूटी । अलग होकर बठ गया । दासी ने आकर कुलथी की कढी और पान के बीडे रखे । स्वस्थ होकर बाजीराव ने कुलथी की कढी पी और पान का बीडा उठाकर चबाने लगा ।

विशृखल विचार धारा फिर जुडने लगी । खिडकी से आकाश की ओर देखने लगा । आकाश तारो से भरा था । तारे स्मृतियों से आकाश मे बिखरे थे । ठहर ठहर कर तारे टूट कर स्मृतियो को जाग्रत करते जाते थे । आकाश कितना अनन्त है इसमें तारे भी हैं धुधल तारे भी हैं उल्का पात भी होते हैं । फिर भी एक गति है, एक लय से सब चलता है । कही विरोध नही । राग है द्वेष नही । प्रकृति कितनी सुन्दर है फिर मनुष्य में इतनी ईर्ष्या क्यों पदा की । द्वेष क्यों पदा किया । प्रकृति मे समानता है परन्तु मनुष्य मे भेद है विभेद है ।'

उखड रहे थे त्रिपुण्ड बह कर लिलाट की रेखाओं में फल रहा था। गहरी चिताओं में केशर ललाट को शान्ति प्रदान कर रही थी। कानों की बाली के मोती चमक रहे थे। बाजीराव चहल कदमी कर रहा था। कभी ठहर जाता फिर घूमने लगता। उसकी चाल में एक योजना थी। वह बाहर निकलकर उस योजना को पूरी करना चाहता था परन्तु बरसात का जोर होने के कारण वह बाहर निकल नही सकता था। वह कमरे में घूम रहा था और साथ में हाथ हिलाता जा रहा था। ऐसा मालूम पड़ता था कि वह अभी का अभी बाहर निकल कर सैनिक अभियान पर जावे और उसका फल चखावे। सोचता भी जा रहा था कि अगर इसकी सूचना कुछ पहले मिल जाती तो वह समस्या उठने के पूर्व ही उसका समाधान कर देता। परन्तु अब क्या किया जावे।

दासी आकर खड़ी हो गई।

उसको देखकर बाजीराव खड़ा रहा और हाथ के इशारे से पूछा 'क्या बात है ?'

'कवरानीसा आपको याद कर रही हैं।

पुतलियां को घुमाकर पूछा–'कोई खास बात ?'

'यह तो मुझे पता नही।'

'आ रहा हूं धीरे से होठ हिलाकर कहा

दासी मुजरा करके वापस चली गई।

बाजीराव खिड़की के पास जाकर देखने लगा। बिजली जोर जोर से कड़क रही थी। बादल जोर जोर से गरज रहे थे। बरसात जोर से हो रही थी। नाले पूरे यौवन पर थे। कगारों के ऊपर से बह रहे थे। बाजीराव के मन में भी तूफान उतने ही जोर से चल रहा था। झंझावात पेड़ों को जोर से हिला रहा था।

सामान के लिए सुविधा प्रदा करना । तब तक चिटनिस ने भेंट लाकर सुकताज खां को दी ।

उसने सम्मानपूर्वक बख्शीश लेकर पीछे कदम रखता हुआ मुजरा करके बाहर हो गया । उसके बाद बाजीराव ने बताया कि 'निजाम को वजीर बनाने के लिए दिल्ली बुला रहे हैं वजीर बनाकर उसे दक्षिणियों को, गुजरात, मालवा बुंदेलखण्ड से बाहर निकालने का काम सौंपा जावेगा । इस कार्य मे सहयोग देंगे मोहम्मद बंगश अभयसिंह । दिल्ली जाने से पूर्व नासिर जंग संधि करना चाहता है कि मराठे हैदराबाद पर आक्रमण नहीं करेंगे और हैदराबाद मराठों के किसी मामले में रोडा नही अड़ायगा । जब मराठे उत्तरी भारत मे होंगे हैदराबाद मराठो पर आक्रमण नही करेगा । इस तरह की अनाक्रमण संधि मराठों और हैदराबाद के बीच करने के लिए निजाम बुला रहा है । इस संधि से मराठो को सरदेश मुखी और चौथ बराबर मिलती रहेगी । मराठों को कुछ भी नुकसान नही है । सबने स्वीकार किया" तब चिटनिस को तरफ खरीता भेजने का संकेत किया ।

'श्री महाराज राजेश्वर शाहू महाराज से बाजीराव पंडित का आपका कुशल समाचार ईश्वर से सदा भला चाहिए । यहां की सब कुशल परमात्मा की कृपा से अच्छी है । आगे समाचार है कि मैं जल्दी ही रवाना होकर लातुर की तरफ गया । वहां मालूम पड़ा कि नवाब के पास मिलने के लिए और सारी बातों को तय करने के लिए सुमन्त को भेजा । सुमन्त का उत्तर जल्दी ही मिला मुझम मिलने के लिए नवाब सुविधा से खुली जगह आकर ठहर गया । 27 दिसम्बर को मैं सुविधा से सेना लेकर नवाब के शिविर के पास आया । मेरे आने का समाचार सुनकर नवाब ने अपने दरवाजे के सभी रक्षकों को हटा दिया और श्री रावसुमन्त रावरम्भा और सुकताज खा को फाटक के पास मेरा स्वागत करने के लिए खड़ा कर दिया

रहा था । सबने समझ लिया कि बाजीराव आ रहा है । बिना सूचना के इतनी तेजी से इस दिशा में बाजीराव ही आ सकता है । इस बारे में सोचा ही जा रहा था तब तक खबरनवीस ने आकर सूचना दी कि पेशवा बाजीराव पधार रहे हैं थोडे समय में धूल के गुब्बारे में भगवा झंडा दिखाई देने लगा । सेना में एक हलचल मच गई ।

बाजीराव की अग्रदल सेना ने पहले ही पहुंचकर सारी व्यवस्था देखी । तब तक बाजीराव पहुंच गया । थोडा विश्राम करके दीवानखाने मे आकर बैठ गया । राव सुमन्त रावरम्भा दीवानखाने में पहले से ही बैठे थे । तब तक शाम हो गई । दीवट पर समई जल रही थी । फाटक पर चिरागिया चिराग लेकर खडे था । आकाश दीप जल रहा था । गारदिये ने प्रवेश करके मुजरा किया । बाजीराव ने हाथ से कहने का संकेत किया । गारदिया बोला– हुजूर । निजाम सलामत ने खाने का सामान व फल व मिठाई बनाने का सामान अपने आदमियो के साथ भेजा है ।' बाजीराव ने दोनों सामन्तो की ओर देखा । बाजीराव की रहस्यमय दृष्टि को देखकर सुमन्त बोला– महाराज निजाम इस बार विशेष खातिर दारी कर रहा है क्या बात है ? कई बार मिलने का मौका पड़ा परंतु इस बार की खातिरदारी कुछ और हा है । ' बाजीराव ने मुस्कराकर कहा ' इस बार कुछ विशेष बात ही है ।' पान के बीडों की रकाबी आ गई । सब ने पान लिया । बाजीराव ने पान को चबाते हुए संकेत किया । राव सुमन्त ने बाहर जाकर निजाम के प्रतिनिधि तुर्क ताज खां से मिले और अन्दर लेकर आये ।

तुर्क ताज खा ने कोहनी तक झुक कर मुजरा किया और अरज करी–नवाब बहादुर ने सैनिकों के लिए तुच्छ तोहफा भेजा है और अरज करी है कि पंडित पेशवा महाराज को भेंट कर दुआ सलाम कहना और अरज करना कि पधारने में शीघ्रता करें ।" पेशवा ने मुजरा स्वीकार करते हुए कहा कि मेरी ओर से नवाब बहादुर से सलाम बोलना और इस

सामान के लिए शुक्रिया भदा करना। तब तक चिटनिस ने भेंट लाकर तुकताज खा को दी।

उसने सम्मानपूर्वक बख्शीश लेकर पीछे कदम रखता हुआ मुजरा करके बाहर हो गया। उसके बाद बाजीराव ने बताया कि 'निजाम को बजीर बनाने के लिए दिल्ली बुला रहे हैं वजीर बनाकर उसे दक्षिणियो को, गुजरात, मालवा बुन्देलखण्ड से बाहर निकालने का काम सौंपा जावेगा। इस काम में सहयोग देंगे मोहम्मद बंगस अभयसिंह। दिल्ली जाने के पूर्व नासिर जंग संधि करना चाहता है कि मराठे हैदराबाद पर आक्रमण नहीं करेंगे और हैदराबाद मराठा के किसी मामले में रोड़ा नहीं अटकायगा। जब मराठे उत्तरी भारत में होंगे हैदराबाद मराठों पर आक्रमण नहीं करेगा। इस तरह की अनाक्रमण संधि मराठों और हैदराबाद के बीच करने के लिए निजाम बुला रहा है। इस संधि से मराठों को सरदेशमुखी और चौथ बराबर मिलती रहेगी। मराठों को कुछ भी नुकसान नहीं है। सबने स्वीकार किया" तब चिटनिस की तरफ खरीता भेजने का संकेत किया।

'श्री महाराज राजेश्वर शाहू महाराज से बाजीराव पंडित का आपका कुशल समाचार ईश्वर से सदा भला चाहिए। यहां की सब कुशल परमात्मा की कृपा से अच्छी है। आगे समाचार है कि मैं जल्दी ही रवाना होकर लातुर की तरफ गया। वहां मालूम पड़ा कि नवाब के पास मिलने के लिए और सारी बातों को तय करने के लिए सुमन्त को भेजा। सुमन्त का उत्तर जल्दी ही मिला मुझसे मिलने के लिए नवाब सुविधा से खुली जगह आकर ठहर गया। 27 दिसम्बर को मैं सुविधा से सेना लेकर नवाब के शिविर के पास गया। मेरे आने का समाचार सुनकर नवाब ने अपने दरवाजे के सभी रक्षकों को हटा दिया और श्री रावसुमन्त रावरम्भा और तुकताज खा को फाटक के पास मेरा स्वागत करने के लिए खड़ा कर दिया

मैं अपनी सेना को पीछे छोड दो सौ अग रक्षकों का साथ लेकर गया। नवाब के खास आदमी मुझे लेकर अन्दर गये। फरीद खां और हमीद खां मेरा स्वागत करने के लिए बाहर खड़े थे। मैंने आगे जाने के पूव स्वागत अधिकारियों से बात करी। पीछे उन्होने मेरा नवाब से परिचय करवाया। तब नवाब खा ने बडे आदर से मेरा स्वागत किया। नवाब ने मुझे सात वस्त्र, मोती दो जोडा दो घाडे और एक हाथी भेंट किया। खुले दरबार मे थोडे समय तक बात की। एक दूसरे का हाल चाल पूछा और स्वागत किया। पीछे नवाब खास बात करन के लिए मेरा हाथ पकड कर दूसरे तम्बू म ले गया। मरे साथ राव सुमन्त, राव रम्भा थे। नवाब से मेरी बात खुले मन से हुई। नवाब ने आपकी और मेरी खूब प्रशसा की। एक घडी तक बात हुई। दिन रहते मैं वापस अपने तम्बू में आ गया। नवाब ने हम सब लोगो के खाने के लिए सामान व फल भिजवाये। मैं नवाब से बहुत बार मिल चुका हू। परन्तु आज तक दिल खोलकर बात नही हुई जितना इस बार हुई। पहले आपको जितना भय था वह दूर हो गया होगा। सधि हो जाने पर सभी शर्तों का सन्धि पत्र आपके पास भिजवा दूगा।"

चिटनिस ने रजी डालकर स्याही सुखाकर खरीते को गोल लपेट-कर लोहे की भूगली मे डालकर ऊपर से ढक्कन लगाया। सील मोहर करके कपड को थला मे डालकर बन्द करके हरकारे के साथ शाहू महाराज के पास पहुचाने का निर्देश दिया।

दूसरे दिन निजाम के साथ सन्धि करके पेशवा जब वापस आया तो पूणें से खरीता आया हुआ था। इससे मालूम पड़ा कि पेशवा बाजीराव के मस्तानी के गर्भ से पुत्र उत्पन्न हुआ है।

सैना में खुशी के दो समाचार पले। मानन्द की लहरों से मस्त हो उठी। मराठवाड़े म एक नया उत्साह फैलने लगा।

मालवा से महाराजा जयसिंह के बार बार खरीते मा रहे थे कि दिल्ली दरबार से संधि की शर्तें तय करने में काफी समय लग रहा है फिर भी भाप निश्चिन्त रहे। एक न एक न्नि संधि हो ही जावेगी। बाजीराव मन में हंसा कि, "दिल्ली दरबार दुमरियाँ खेल रहा है।"

× × × ×

पुत्रोत्सव

बाजीराव जेष्ठ के उतरते उतरते पूणे पहुच गया। गर्मी भयकर थी। मास्कर भीषणता से तपने लगे थे। दिनभर भयकर धूप पड़ती। हवा बन्द रहता। शरीर पसीने से तर रहता एक प्रहर दिन चढने के बाद घर मे निकला मुश्किल था। मराठी सेना दिन में पेड़ो के नीचे विश्राम करती और रात का सफर। रास्ते के नाले सूख गये थे क्षीए पड़ गये थे। नदिया खाली थी। बाजीराव शाहू से मिलकर संधि की सारी स्थिति बताकर आया परन्तु प्रश्नवाचक भी लगा दिया था कि निजाम का कभी भी विश्वास नही किया जा सकता। वह कब पलट कर काट सकता है। फायदा इतना ही है कि 6 लाख रोकड़ा अभी मिल गये। निजाम ने मराठों का गुजरात, मालवा और बुन्देलखण्ड पर अधिकार मान लिया। शाहू दूरदर्शी व चतुर था। इसलिए उसने एक सलाह दी कि उसके यहां खबरनवीस जरूर रखे जावे ताकि उसके दरबार के हाल चाल मालूम होते रहें।

पूणे पहुचने की सूचना पहले से भिजवाई हुई थी। जब तक बाजीराव का स्वागत करने की खूब तयारिया हो रही थी। जगह जगह तोरण द्वार बनाये। पानी का छिड़काव किया और शनिवार बाड़े मे बन्दन वार लगाई गई। जब पेशवा पूणे मे पहुचा तो जनता ने फूलो की बरसात की। तोपें दागी गई। जनता ने उत्साह के साथ छत्रपति शिवाजी की जय बाजीराव पेशवा की जय के नारे लगाकर सारा आसमान गुजा दिया। बाजे बजाये। औरतो ने घरो की छत पर खड़ी होकर पेशवा का दर्शन

किया। फूल बरसाये। जगह जगह लोगों ने न्यौछावर की। गणेश दरवाजे के पास पेशवा घोड़े से उतर कर श्री गणपति की आरती के दर्शन करने गया। गणपति का प्रसाद लेकर अपनी माई राधा बाई को पावाधोक दी। माँ ने दही का थक्का व बूरा दकर मुह मीठा कराया और हल्दी व कुकुम का तिलक किया। फिर दरबार लगा। सब सामन्तो ने पेशवा को नजर की। पेशवा ने पद के अनुसार सभी सामन्तों का बख्शीश दी। समारोह खत्म होते होने एक प्रहर रात गुजर गई थी। सामन्ता को गुलाब का शरबत व पान के बीडे देकर विदा किया।

शनिवार बाडा दिवाली की तरह जगमग कर रहा था। मस्तानी के महल का भाग पलक पावडे बिछाकर पेशवा का स्वागत कर रहा था। शनिवार बाडे का कोणा कोणा दमक रहा था। मस्तानी के महल के फाटक पर पीपल के पत्तों की वन्दनवार लगी हुई थी। दासी ने मुजरा करके पेशवा को माग दिखाती अन्दर ले गई। सारा महल सुगन्ध से महक रहा था। जगह जगह समइयाँ जल रही थी। बाजीराव के प्रवेश करते ही आनन्द की लहर महल में दौडने लगी। दासियां में भाग दौड मचगी।

मस्तानी ने मुजरा किया। बाजीराव टकटकी लगाकर देखने लग। ऐसा मालूम पडता है इसने आज तक मस्तानी को देखा भी नहीं है। उसके सामने प्रश्न खडा हो गया कि यह कौन है? मस्तानी के शरीर का निखार द्विगुणित हो गया था। पुष्पवती होने के कारण उसके सौदय म माधवी का आकषण था जो माला देकर बुला रहा था।

'आलिजा! इस तरह क्या देख रहे हैं' लज्जित होती मस्तानी बोली। कोयल की कुहूक कान में पडते ही बाजीराव का मन जगह पर आया और मुस्कराता हुआ बोला—' मस्तानी! मुझे ऐसा मालूम पडता है कि मैं आज तुम्हारे जिस रूप को देख रहा हू उसे पहले कभी देखा ही नही था। तुम्हारे शरीर से चुम्बक की लहरें निकल कर मुझे तुम्हारी ओर आकर्षित कर रही हैं।"

मस्तानी शर्मिन्दा होकर नीचे देखने लगी।

भावाज करती हुई धाय एक मासूम बच्चे को बाजीराव का लाकर दिखाया। पेशवा कभी उसे देखता कभी मस्तानी को। वह सौन्दय बाध की कल्पना मे खोने लगा। मस्तानी की नजर भी मासूम बच्चे के चारों भोर घूम रही थी। दोनो की नजर मिलते ही बाजीराव मुस्करा उठा भौर बोला माँ भौर बेटा दोना ही रूप की राशि हैं। यह कहता हुमा मोती की माला न्योछावर करके धाय को दी भौर दासियों को सोने की मोहरें देने का भादेश दिया। धाय बच्चे को लेकर चली गई। बाजीराव ने मस्तानी को बाहुमों मे समेटता बोला–' मेरे पास एक चीज थी वह तो तुम्हे पहले ही दे चुका हू। रिक्त होने से तुम्हें क्या दू ? ' इसके साथ ही चुम्बन लेने लगा। मस्तानी भौर लज्जा से लाल होती बोली–' कोई देख लेगी। बाजीराव ने गले का मोतियो का हार निकालकर मस्तानी के गले में डालता हुमा बोला– इनायत स्वीकार हो।' बाजीराव भौर मस्तानी दोनों पलग पर जाकर बेठ गये भौर बातें करने लगे।

मेरा भभाव भापको –

तुम्हारा भभाव मन ही बता सकता है।

"कुछ भापको ही पता होगा "

' लो सुनो ' छाती से लगाता बाजीराव बोला–'मस्तानी! समय का दबाव जितना गहरा होता गया तुम्हारी याद उतनी ज्यादा भाती रही। तुम्हारे साथ न होने के कारण हम इस भभियान में भकेले थे। बहुत कुछ करना चाहता था परन्तु मेरी पीठ सुरक्षित नहीं थी। जब भाज तुम्हें देखा तब ऐसा मालूम पडता है बहुत वर्षों के बाद देखा है। मेरी थकान एक विडम्बना है। तुम्हारे पास भाने के बाद मेरी सारी थकान दूर हो गई। एक नये उत्साह से मेरा जीवन फिर शुरू हो गया। मैं फिर समस्याभों से भूमने के लिए तयार हो जाऊगा। तू मेरा समाधान है भौर मैं तुम्हारी समस्या।'

रात गहरी होती जा रही थी। दूर दूर तक झिंगुर बोलने लगे थे। अचानक बाजीराव की दृष्टि मस्तानी पर पड़ी। उसने देखा कि मस्तानी के कपड़े अस्तव्यस्त हैं। उसके पीन पयोधरों पर बाजीराव की हथेली थी। शरीर कुन्दन की तरह चमक रहा था। शरीर से मीठी व मादक सुगन्ध निकल रही थी। उनीन्दी आँखें मद भरे प्यालों सी थी। काली लम्बी भौंहें कटार की तरह तिरछी थी। सुनहरा चमकता भाल चन्द्रमा के समान था। छाती सुमेरू सी खड़ी था और उस पर फिरती हथली छोटी पड रही थी। पेट की त्रिवली यौवन सी गम्भीर थी। गोल नाभि गहराई की सूचक थी। बाजीराव मद के प्याल के समान मस्तानी को देख रहा था। जो बार बार पीने पर भी खाली नही होता था। इसका आकर्षण प्रतिफल गहरा होता जाता है। मस्तानी के शरीर पर हाथ फेरता फेरता नाभि में कुछ खोजने लगा। गुदगुदी होने से मस्तानी नींद म बोली—'ऐसे क्या कर रहे हैं?"

'गहराई देख रहा हू।'

'वह क्या यहाँ है? आलिजा! बहुत दिनो के बाद आज सुख की नीद ले रहा हू। मुझे नींद लेने दें।' आलिंगन मे कसती हुई बोली।

तुम्हारे जिस्म से मधु का नाला चल रहा है जिसे पीता जाता हू फिर भी वह चुकता नहीं।

'छी"

"छी क्या तुम्हारा आकर्षण तुम नही समझती। यह तो मुझे मालम है। कितने समय से तुम्हें देख रहा हू। सुगन्ध के पास सोना नहीं होता है और सोने म सुगन्ध नही होती है। परन्तु तुम्हारा जिस्म सुनहरा है और उसमे से एक गहरी सुगन्ध उठ रही है जिसमे मैं सराबोर हो जाता हू और उसमें से निकलने का यत्न भी नही करता हू।' यह कहता हुआ बाजीराव मस्तानी को छाती से चिपकाकर, आख मूद अतीन्द्रीय सुख लेने लगा। मस्तानी के शरीर क हजारो रोम एक साथ खुलकर मस्ती छोड़ने

लगे और बाजीराव उस मस्ती में डूबने लगा ।

'मद पीए हुए सा क्या देख रहे हैं' पर ऊपर रखती मस्तानी बोली ।

'अभी तो मद का पान किया है । मैं उसमे डूबना चाहता हू ।' चुम्बन लेता हुआ बाजीराव बोला । मस्तानी अपने अधरों को बाजीराव के अधरो से मिलाती बोली 'इनका घुटका लेवा । सब भूल जायेंगे ।' मद का नाला लबालब भर के चला जिसमे दोनो सरोबेर होकर डूबने लगे ।

रात गहरी होती जा रही थी ।

× × × ×

शाहू के पास

सूर्योदय होने के पूव ही गर्मी बढने लगी। हवा बन्द थी। पूणे की घाटी तपने लगी प्रहर भर दिन निकलने के बाद बाहर निकलना मुश्किल था। पहाडी चमकने लगी थी। धूप चमचमाहट करने लगी थी। पशु वृक्षो की छाया मे बठकर जुगाली करने लगे थे। पक्षी पेडो पर बठे थे। पसीना जोर से बहने लगा। वस्त्र शरीर से चिपक गये थे। आकाश साफ था व धूप से भरा था। आज ऐसा मालूम पडता था कि सारा ससार भयकर गर्मी से भस्म हो जावेगा। शरीर म आग लगी हुई थी। सूय की गर्मी के कारण माखर भी आग उगलने लगे। पूणे जाने वाला सवार बड की छाया मे बैठा था। लोटडी मे से घू ट घू ट पानी पीता था जसे कजूस अगूठे और अगुली से रगड कर छदाम खच करता है। जीवन कितना लम्बा है और आवश्यकता कितनी बडी है। कदम कदम पर आवश्यकता अपने नये नये रूप मे खडी होती है। वह कभी घोडे की ओर देखता है जो इतनी दूरी तय करके आ रहा है। पिछली एक टाग लटका के आराम कर रहा है। सारा शरीर पसीने से तर था। पसीने के नाले चलते चलते बुक्तरी मे सूख रहे थे। सवार की इच्छा थी कि माग मे कोई नदी या नाला मिले जहा वह स्नान करे व घोडे को भी करावे। परन्तु अभी तो वह पसीने से ही स्नान कर रहा था और बुक्तरी पसीने से कडी होती जा रही थी। उस पर जमती हुई खक से शवाला स भरी थी। हार के वह उठा केतली कधे पर रख कर रकाब मे पर डाल कर घोडे पर चढकर, चल पडा। एक कोस चलने

के बाद पूणे की चौकी आ गई। गारदियों के पास जाकर अपनी जानकारी दी। गारदियों ने धूप टालकर जाने की सलाह दी। सवार ने सलाह मान ली दो घड़ी विश्राम करके दोपहर ढलने के बाद पूणे के लिए रवाना हो गया।

गणेश मंदिर की आरती के वक्त दरवाजे के पास पहुंचा। द्वार रक्षक को अपनी जानकारी दी तब एक रक्षक साथ होकर बाजीराव के दीवान खाने की ओर ले चला।

वह घोड़े की लगाम पकड़े चल रहा था।

× × × ×

बरामदे में ममाल जल रही थी। दीवान खाने में समई का प्रकाश फैल रहा था। दीवानखाना खाली था। ऐसा मालूम पड़ रहा था कि अभी अभी दीवान खाने में से उठकर गये हैं। गारदिया चिंतित हुआ। यह क्या हो गया। रात के दो घड़ी तक सब काम करते हैं आज इतने जल्दी कैसे चले गये। इतने में टहलवा आता हुआ दिखाई दिया। गारदिये ने हाथ से इशारा करके पूछा–' कहा हैं ?" टहलवे ने कहा– 'आज पेशवा साहब को बाहर जाना है इसलिए जल्दी ही उठकर चले गये।" सवार को देख कर बोला–' जपुर से पधारे हैं क्या ? '

"हां।"

' आपके लिए संदेश है कि एक प्रहर गुजरने के बाद मस्तानी के महल के नीचे पहुंच जावें। '

दोनों चुपचाप मस्तानी के महल के नीचे बरामदे में खड़े हो गये। गारदिया बोला–' अभी पंडितजी पधारने वाले हैं। आपको सूचना उनके पास पहुंच चूकी है।" जिरह बख्तर पहने हुए बाजीराव महल से नीचे उतरे। सुमन्त मुजरा करने लगा। सुमन्त को देखकर वे भी मुजरा करके खड़े हो गये। सुमन्त ने इशारा किया। सवार ने फिर मुजरा करके कोपली

निकाल कर सामने करी। सुमन्त ने कोथली लेकर सील तोडकर खरीता निकालकर धीरे धीरे पढ कर सुनाया। खरीता सुनकर बाजीराव बोले- उत्तर मिजवावो कि दशहरे के बाद उदयपुर होता हुआ आपसे मिलने के लिए आ रहा हू।' बाजीराव वापस महल मे चले गये।

सुमन्त ने सवार को एक दिन पुण म ठहरने के लिए कहा और गारदियों को उसकी व्यवस्था करने का इशारा कर दिया। दोनो चले गये।

थोडे समय के पश्चात बरामद के सोपानो के पास सुरक्षा कवच लगाए हुए घोडे लकर गारदिए आ गय। जिरह बख्तर पहने हुए दो जवान नीचे उतरे और घोडो पर सवार होकर गणश दरवाजे के बाहर निकले। उनके पीछे पीछे अगरक्षक भी चल पडे।

बाहर निकल कर घोडो क ऐड लगाई। घोडे सरपट दौडने लगे।

ज्यों ज्यो रात गहरी होती गई सवारो की चाल तेज होती गई।

सवार तेजी स आग बढ रहे थे। सामने उठला हुआ भास्वर था। वहां एक गढी थी गढी के बाहर किलेदार खडा था। गढी का फाटक उत्तर दिशा की ओर था। गढी के च रो ओर बुज बने हुए थे। बुर्जों पर मशाल लिए सनिक खडे थे। जिससे दूर से आने वाले को गढी की जानकारी हो जावे। किलेदार के पास मशालची और सनिक खडे थे। शुक्ल पक्ष की अष्टमी थी। चाद अभी निकला नही था। चारो ओर गहरा अधकार था। अधकार म गढी गहरी काली दिखाई दे रही थी। तलवार और भाला लिए सनिक खडे थे। पून मथरी चाल से चल रही थी। गढी म आज विशेष हलचल थी जसे कोई खास मोअज्जिज सामन्त आने वाला है। चहल पहल ज्यादा थी। किलेदार अधीरता से प्रतीक्षा कर रहा था। उसके ललाट पर चिन्ता की रेखायें आ जा रही थी। अपने आप दुश्चितायें खडी कर रहा था और खुद ही समाधान कर रहा था। वह बार बार पूणे के माग की ओर देख रहा था। अन्धकार ने सारी पहाडी को अपने आचल में छिपा रखा था। मशालें जुगुनुओ की तरह चमक रही थी। रात तारों से

के बाद पूणे की चौकी भ्रा गई। गारदियों के पास जाकर भ्रपनी जानका
दी। गारदियों ने धूप टालकर जाने की सलाह दी। सवार ने सलाह मा
ली दो घड़ी विश्राम करके दोपहर ढलने के बाद पूणे के लिए रवाना ह
गया।

गणेश मदिर की भ्रारती के वक्त दरवाजे के पास पहुचा। द्वार
रक्षक को भ्रपनी जानकारी दी तब एक रक्षक साथ होकर बाजीराव के
दीवान खाने की भ्रोर ले चला।

वह घोड़े की लगाम पकड़े चल रहा था।

× × × ×

बरामदे मे मसाल जल रही थी। दीवान खाने मे समई का प्रकाश
फल रहा था। दीवानखाना खाली था। ऐसा मालूम पड़ रहा था कि भ्रमी
भ्रमी दीवान खाने में से उठकर गये हैं। गारदिया चिंतित हुआ। यह भय
हो गया। रात के दो घड़ी तक सब काम करते हैं भ्राज इतने जल्दी करे
चले गये। इतने मे टहलवा भ्राता हुआ दिखाई दिया। गारदिये ने हाथ से
इशारा करके पूछा–"कहा हैं ?" टहलवे ने कहा– भ्राज पेशवा साहब को
बाहर जाना है इसलिए जल्दी ही उठकर चले गये।" सवार को देख कर
बोला–"जपुर से पधारे हैं क्या ?"

"हां।"

"भ्रापके लिए सदेश है कि एक प्रहर गुजरने के बाद मस्तानी के
महल के नीचे पहुच जावें।"

दोनो चुपचाप मस्तानी के महल के नीचे बरामदे म खड़े हो गये।
गारदिया बोला–"भ्रमी पडितजी पधारने वाले हैं। भ्रापकी सूचना उनके
पास पहुच चूकी है।" जिरह बख्तर पहने हुए बाजीराव महल से नीचे
उतरे। सुमत मुजरा करने लगा। सुमत का देखकर वे भी मुजरा करके
खड़े हो गये। सुमत ने इशारा किया। सवार ने फिर मुजरा करके कोथली

"तुम्हारी मावज"

"पधारियो। किलेदार ने सबको किले के अन्दर किया तब तक द्वितीय प्रहर की तोप दागा गयी।

सारी घाटी तोप की ध्वनी से प्रतिध्वनित हो उठी।

किले के फाटक बन्द होने लगे।

× × × ×

सतारा एक पहाडी पर बसा हुआ छोटा सा गाव था। छत्रपति ने सुरक्षा की दृष्टि से यहा पर एक गढी का निर्माण करवाया। छत्रपति के गालाव वास हान व परिवार म कलह शुरू हो जान के कारण यह गढी उजडन लगी। जब औरगजब दक्षिण में आया तब गढी की रही सही व्यवस्था भी बिगड गई। गढी के उजडने क कारण यह किलेदारों की बस्ती बन गई। 5– रक्षक रह गये। जो खेती करते और बठे रहते गढी अब बच्चा की किलकारियां से गूजने लगी। रक्षक समय के साथ साथ स्वग सिधार गय। तब गढी खडहर होने लगी। मरहट्टो के कई परिवार एकत्रित होकर आस पास के गावों में धाडा मारते और यहा आकर छिप जाते। बरसात म खेती करने लगे। किसी तरह अपन परिवार को पालते थे।

दक्षिण में जब दामाडे अपनी शक्ति बढाने लगा तब इस गढी के मराठो का उससे सम्पक हुआ। वे उसकी सेना म भर्ती हो गय। गगाधरराव उनमें तेज था। इस कारण उसको सामन्त के समान माना जाता था। शाहू जब औरगजेब की जेल से जब छूटकर आया तब वह बालाजी के साथ शाहू क साथ हो गया। शाहू ने उसको गढी का किलेदार बना दिया। किले की चाबियां उसे सौंप दी। उसकी देख रेख म गढी की मरम्मत हुई। महल बने। शाहू ने मुगलों की शान शौकत देखी थी व भोगी थी उसके अनुरूप ही गढ़ी की व्यवस्था की। गढ़ी अब शाहू की राजधानी सतारा के रूप में शान से बढ़ने लगी। सामन्तो के घर बनने लगे शाहू के देखा देखी सामन्तों ने भी शान शौकत को अपनाना शुरू कर दिया। सतारा राजधानी होन के

गरी थी। शुक्र का तारा गढ़ी पर चमक रहा था। पवन ठहर ठहर कर चल रही थी। जसे जस रात गहरी होती जा रही थी। किलेदार की चिन्ता बढ़ती जा रही थी। उसका एक जगह खड़ा रहना मुश्किल था। टहलता जाता और सोचता भी जाता। धीरे धीरे अदृश्य अशुभ की चिन्ता की कल्पना से ललाट पर परेशानिया उभरने लगी। त्रिपुण्ड का चन्दन ललाट की रेखाओं म फलने लगा। हल्की हल्की नजदीक आती हुई टाप सुनाई दी तब चिन्ता कम होने लगी। आवाज की तरफ़ कान करके ध्यान से सुना तो मस्तिष्क में फिर सशय पदा हुआ कि एक ही घोड़े की टाप क्से। अपने सहायक की ओर सकेत किया। उसने धरती पर कान लगाकर सुना और वाला कोई खबरनवीस आ रहा होगा। धीरे धीरे घोड़े की टाप नजदीक से नजदीक आती गई और अन्त म खबरनवीस से सूचना मिली पडित पेशवा पधार रहे हैं।

आधी प्रहर के बाद बहुत सारे घोड़ो की टापें नजदीक आती हुई सुनाइ दी। तब सबको सन्तोष हुआ। टापो का आवाज स ऐसा मालूम पड़ता था कि वे जल्दी जल्दी गढ़ी क पास पहुचना चाहते हैं। धीरे धीरे मालर की चढ़ाइ पर चढ़ता हुई छायाएँ उभरन लगी। आसमान म चांद झांकने लगा। साफ साफ दिखाई देने लगा कि आने वाले कितनी तेजी से गढ़ी की ओर आ रहे हैं। घोड़ों की धोकनिया सी चलती हुई सास साफ सुनाई देने लगी। घाटी प्रतिध्वनि से गू जने लगी। मन तेजी से भागने लगा। हवा गहरी होती जा रही थी।

जिरह बख्तर पहने हुए सवार पास आकर रुके। किलेदार का मन खुशी से फूल उठा और मुजरा किया। पेशवा ने अपने घोड़े से उतर कर किलेदार को गले से लगाया।

किलेदार ने कहा–'आपने आने मे बहुत देरी की।' दूसरे जिरह बख्तर पहने सामन्त की ओर देखकर पूछा–

'आप ?'

सतारा एक पहाडी पर बसा हुआ छोटा सा गांव था। [illegible]
ने सुरक्षा की दृष्टि से यहा पर एक गढ़ी का निर्माण कराया था। [illegible]
के गोलोक वास होने व परिवार में कलह शुरू होने के कारण यह गढ़ी
उजडने लगी। जब औरंगजेब शक्ति में आया तब गढ़ी की रही सही
व्यवस्था भी बिगड गई। गढ़ी के उजडने के कारण यह किरायेदारों की बस्ती
बन गई। 5- रक्षक रह गये। जो बस्ती कभी और [illegible] रहती गढ़ी अब
बच्चो की किलकारियो में गूंजने लगी। [illegible] समय के साथ साथ स्वर्ग
सिधार गये। तब गढ़ी खण्डहर होने लगी। मराठों के कई परिवार एकत्रित
होकर आस पास के गांवों में धावा मारते और यहां आकर छिप जाते।
बरसात में खेती करने लगे। किसी तरह अपने परिवार को पालते थे।

दक्षिण में जब दाभाडे अपनी शक्ति बढ़ाने लगा तब इस गढ़ी के
मराठो का उससे सम्पर्क हुआ। वे उसकी सेना में भर्ती हो गये।
उनमें तेज था। इस कारण उनका सामन्त के समान माना जाता था। गंगाधरराव
जब औरंगजेब की जेल से जब छूटकर आया तब वह बालाजी के साथ शाहू
के साथ हो गया। शाहू ने उसका गढ़ी का किलेदार बना दिया। शाहू
चाबियां उसे सौंप दी। उसकी देख रेख में गढ़ी की मरम्मत हुई। किले को
बने। शाहू ने मुगलो की शान शौकत देखी थी व भोगी थी उसके अनुरूप
ही गढी की व्यवस्था की। गढ़ी पर शाहू की राजधानी सतारा के रूप में
शान से बढने लगी। सामन्तो के घर बनने लगे शाहू के देखा देखी सामन्तो
ने भी शान शौकत को अपनाना शुरू कर दिया। सतारा राजधानी होने से

भरी थी। शुक्र का तारा गढ़ी पर चमक रहा था। पवन ठहर ठहर कर चल रही थी। जसे जस रात गहरी होती जा रही थी। किलेदार की चिन्ता बढ़ती जा रही थी। उसका एक जगह खड़ा रहना मुश्किल था। टहलता जाता और सोचता भी जाता। धीरे धीरे अदश्य अशुभ की चिन्ता की कल्पना से ललाट पर परेशानियां उभरने लगी। त्रिपुण्ड का चन्दन ललाट की रेखाओं में फलने लगा। हल्की हल्की नजदीक आती हुई टाप सुनाई दी तब चिन्ता कम होने लगी। आवाज की तरफ कान करके ध्यान से सुना तो मस्तिष्क में फिर सशय पदा हुआ कि एक ही घोडे की टाप कसे। अपने सहायक की ओर सकेत दिया। उसने धरती पर कान लगाकर सुना और बोला कोई खबरनवीस आ रहा होगा। धीरे धीरे घोडे की टाप नजदीक से नजदीक आती गई और अन्त म खबरनवीस से सूचना मिली पडित पशवा पधार रहे हैं।

आधी प्रहर के बाद बहुत सारे घोडा की टापें नजदीक आती हुई सुनाई दी। तब सबको सन्तोष हुआ। टापो की आवाज से ऐसा मालूम पडता था कि वे जल्दी जल्दी गढ़ी के पास पहुचा चाहते हैं। धीरे धीरे मालर की चढ़ाई पर चढ़ती हुई छायाएँ उभरने लगी। आसमान म चांद झांकने लगा। साफ साफ दिखाई देने लगा कि आने वाले कितनी तेजी से गढी की ओर आ रहे हैं। घोडों की धोकनियों सी चलती हुई सांस साफ सुनाई देने लगी। घाटी प्रतिध्वनि से गू जने लगी। मन तेजी से भागने लगा। हवा गहरी होती जा रही थी।

जिरह बख्तर पहने हुए सवार पास आकर रुके। किलेदार का मन खुशी से फूल उठा और मुजरा किया। पेशवा ने अपने घोडे से उतर कर किलेदार को गले से लगाया।

किलेदार ने कहा—'आपने आने मे बहुत देरी की।' दूसरे जिरह बख्तर पहने सामन्त की ओर देखकर पूछा—

'आप ?'

था। आर्थिक समस्या का समाधान भी उत्तरी भारत मे था। बुन्देलखण्ड प बाजीराव का पारिवारिक और राजनतिक सम्बन्ध होने के कारण इलाहाबाद की हर घटना उसको प्रभावित करती थी।

दाभाडे आर्थिक दृष्टि से कमजोर आलसी व दम्भी था। राजनीति म नम्रता प्रमुख है। सेना को सेनापति योग्य चतुर कूटनीतिज्ञ व आग मींचकर मरवाने वाला नही च हिए।

सेनापति की मां शाहू के पास फरियाद लेकर आई। इस कारण सतारे मे आज अच्छी हलचल थी।

गगाधरराव को किलेदार बनाने मे बाजीराव का बडा हाथ था। गगाधरराव बाजीराव का एहसान मानता था। बाजीराव अपने आने जाने की सभी सूचनाए किलेदार के माफत ही शाहू के पास भिजवाता था और उसकी हवेली म ठहरता था। दूसरे सामन्तो को घटना के घटित होने क बाद जानकारी होती।

× × × ×

सतारे में अफवाहो का जोर था। पेशवा आ गये हैं। बडी शिकायतें करेगा। बदला लेगा शाहू की सब पर समान मेहरबानी है। इसलिए पेशवा दडित किया जावेगा। नई और पुरानी न जाने कितनी अफवाह तेजी से फल रही थी।

दूसरे दिन बाजीराव और शाहू की सारी स्थिति पर बात हुई। शाहू को सारी घटनाओ की सही जानकारी हो गई। बाजीराव ने पिछले बखेडो म न उलझकर भावी योजना पर विशेष जोर दिया और राजपूतो क बनते हुए मधुर सम्बन्धो की विशेष चर्चा की। भविष्य मे मराठा राज्य के निर्माण व विस्तार म राजपूतो का पूरा सहयोग मिलने की चर्चा की। जयपुर महाराजा के खरीतो का जिक्र आया। बाजीराव ने बताया कि मेरे पास खरीता आ गया है और उसका उत्तर भी दे दिया है कि इस बार मुलाकात जरूर करूगा। स्थान और समय भी उनसे तय कर लेंगे। दिल्ली दरबार

कारण प्रतिनिधियों के आने जाने के कारण उसकी रौनक बढने लगी। सतारे म चमक आने लगी। पश्चिम दक्षिण मे होने क कारण निजाम व मुगलो से सुरक्षित थी। चारो ओर के वारिद मराठी होने से शाहू का मन भी अधिक लगने लगा। सेना की राजधानी पूणे थी ओर राजनैनिक हलचल का केन्द्र सतारा था। राजनतिक शक्ति खरीता, परवानों म थी इस कारण सतारा डाक का मुख्य के द्र था। काम शान्ति पूवक चलता रहता। पेशवा सनिक अभियानों मे लगा रहना था ओर शाहू खतो खिताबत म अपना समय व्यतीत करता था। पेशवा जब शाहू के दरबार म आता तब हलचल अच्छी होती। बाजीराव का पशवा ओर सेनापति के दोनो पदो पर स्वामित्व हाने क कारण विरोधी और समयक ऐसे मौके पर जरूर दरबार म उपस्थित होत शाहू की मुग्य धुरी पेशवा था। इस कारण शाहू बाजीराव का विरोध कभी भी नही करता था मत भिन्नता पर भी सलाह हो दता था। राज्य का आधार अथ ओर सेना थी। सनापति दाभाडे से बाजीराव के सम्बन्ध अच्छे नही थ अत बाजीराव ने सनिक शक्ति का केन्द्र पूणे में रखा ताकि सामरिक हलचलों की शाहू को जानकारी पेशवा के भेजने पर ही मिले। आन्तरिक कलह क कारण दाभाडे अपना वचस्व खोता जा रहा था। और बाजीराव का प्रभुत्व बढता रहा।

राजनीति के दांव पेच बडे गहरे ओर दिलचस्प होते हैं। राजनीतिज्ञों का अवसरवादी व्यक्तित्व मौके की तलाश में घुमता रहना और अवसर आते ही एक पासा फेंक कर सारी स्थिति को पलट दत हैं। शाहू मुगल दरबार की उथल पुथल देख चुका था। अनुभव कर चुका था। इस कारण उसन दाभाडे ओर बाजीराव को अलग अलग सूबों का काम सभलवा कर निश्चिन्त होना चाहता था। परन्तु महत्वाकांक्षी पुरुष प्रतिबन्धित घेरे के बाहर रहकर स्वतन्त्र रूप से खेलना चाहता है।

बाजीराव की गिद्धदृष्टि उसे उत्तरी भारत की ओर ले जाने के लिए बराबर लालायित कर रही थी। उत्तरी भारत मे विशाल मुगल साम्राज्य टूटकर गिरने के लिए तयार था ओर करारी चाट की प्रतीक्षा कर रहा

ऊमाबाई अपने बेटे के साथ सामने के फाटक से अन्दर आई बाजीराव ने उठकर वन्दना की।

शाहू ने कहा—"यह आपका ही बेटा है। आशीर्वाद दो। मा अपने पुत्र के सभी अपराध क्षमा करती है।"

रोती हुई ऊमाबाई ने बाजीराव को छाती से लगाया। पास म आने पर शाहू ने कहा कि "आज मरे दरबार मे आपके बेटे को सेनापति के वस्त्र पहना दिए जायेंगे।' बाजीराव की ओर देखकर बोले—'राज्य का पेशवा और मराठा की शान है।" यशवन्तराव की ओर मुख करके बोले—'प्रणाम करो। इनकी आज्ञा की अवहेलना मत करना।" ऊमाबाई जनाम खाने म चली गई।

शाहू महाराज व बाजीराव हिसाब की बातो में लग गये। क्या देना रहा। आगे कितना आवेगा। कहा कहा से कितना कितना आवेगा। खच की व्यवस्था कसे होगी। आदि सभी बातों पर विस्तार से चर्चा होती रही। कही कही तो धय सीमा छोड देता है परन्तु यहा तो धय हाथ बाधे सामने खडा था। सारी बातें इतनी जल्दी और इतनी सरलता से सुलझ जावेंगी किसी को कल्पना भी नही थी।

शाम को दरबार लगा। सामन्त उत्सुकता स घटना क्रम पर नजर रखे हुए थे। स्वस्ति वाचन के बाद यशवन्तराव दाभाडे को सेनापति के वस्त्र पहनाने का हुकम हुआ। यह नाटकीय परिवतन देखकर सभी स्तम्भित रह गये। यशवन्तराव दाभाडे आगे आया और उसे सेनापति के वस्त्र दे दिए गये। विरोधी सामन्तो की आशा के विपरीत काम हुआ। सारे दरबार मे बाजीराव की काय प्रणाली को स्वीकृति मिल गई। उत्तराधिकार पद देकर बात वहीं समाप्त कर दी। बाजीराव के पक्षधर खुशी से नाच उठे और ऊमाबाई के समथक मुह लटकाए मानो अपनी हवेली चले गये।

से तय होने वाला सनदो के बारे में विस्तार से चर्चा हुई । शाहू महाराज को पक्का विश्वास था कि सारी शर्तें तय हो जावेंगी । तब बाजीराव ने बताया कि दिल्ली मे सनदो पर निर्णय ग्राज होगा न कल । समय निकालने की योजना चल रही है । निजाम को उत्तर भारत में व वजीर का पद देने के लिए बुलाया है । निजाम की इच्छा है कि वजीर का पद रहने के साथ हैदराबाद की सल्तनत उसके बेटे क पास रहे । जब भी उसको मागना पड़े गगा ग्रौर यमुना पर बुन्देलखण्ड के रास्ते से हैदराबाद पहुच जावे । वजीर के पद का लाभ मिले तो सेना लेकर पूणे का नाश करदे । इस तरह निजाम दो पासे एक साथ फक रहा था । मराठा के साथ सन्धि की है ग्रौर वजीर का पद लेने दिल्ली जावेगा । बाजीराव ने दो प्रहर तक बातचीत की ग्रौर सलाह मशवरा करता रहा ग्रौर फिर इजाजत लकर गगाधरराव का हवेली ग्रा गया ।

दो दिन बातों में निकल गये । रात के प्रथम प्रहर गगाधरराव ग्रौर बाजीराव बातें कर रहे थे कि दासी ने ग्राकर सूचना दी की निलाम्बकर राव ग्राया है । स्वीकृति मिलने पर खाजी निलाम्करराव ग्रन्दर ग्राया । उसने मुजरा करके निवेदन किया कि "महाराजा शाहू ग्राज सतारे से बाहर जाकर ऊमाबाई की ग्रगवाणी करके लाये हैं । यशवन्तराव दाभाड साथ है ।'

ठीक है । जाग्रो ।"

दोना वापस चले । बाजीराव ने कहा–' इसीलिए मुझे ग्राज मिलने ग्राने से मान किया था ।'

× × × ×

दूसरे दिन बाजीराव जब शाहू महाराजा से मिलने गया तब महाराजा शाहू शान्ति मे बठे पान चबा रहे थे । बाजीराव मुजरा करके बठ गया बातचीत होने लगी । तब द्वारपाल ने ग्राकर सूचना दी ऊमाबाई मुजरा करने ग्राना चाहती है । स्वीकृति लेकर द्वारपाल गया । थोडी देर मे

ऊमाबाई अपने बेटे के साथ सामने के फाटक से अन्दर आई बाजीराव ने उठकर वन्दना की।

शाहू ने कहा–"यह आपका ही बेटा है। आशीर्वाद दो। मां अपने पुत्र के सभी अपराध क्षमा करती है।"

रोती हुई ऊमाबाई ने बाजीराव को छाती से लगाया। पास म आने पर शाहू ने कहा कि "आज मरे दरबार में आपके बेटे को सेनापति के वस्त्र पहना दिए जायेंगे।' बाजीराव की ओर देखकर बोले–'राज्य का पेशवा और मराठा की शान है।" यशवन्तराव की ओर मुख करके बोले–'प्रणाम करो। इनकी आज्ञा की अवहेलना मत करना।" ऊमाबाई जनान खाने म चली गई।

शाहू महाराज व बाजीराव हिसाब की बातों में लग गये। क्या देना रहा। आगे कितना आवेगा। कहा कहा से कितना-कितना आवेगा। खच की व्यवस्था क्से होगी। आदि सभी बातों पर विस्तार से चर्चा हाती रही। कहीं-कहीं तो धैय सीमा छोड देता है परन्तु यहा तो धय हाथ बाधे सामने खडा था। सारी बातें इतनी जल्दी और इतनी सरलता से सुलझ जावेंगी किसी को कल्पना भी नही थी।

शाम को दरबार लगा। सामन्त उत्सुकता स घटना क्रम पर नजर रखे हुए थे। स्वस्ति वाचन के बाद यशव तराव दामाडे को सेनापति के वस्त्र पहनाने का हुकम हुआ। यह नाटकीय परिवतन देखकर सभी स्तम्भित रह गये। यशवन्तराव दामाडे आगे आया और उसे सेनापति के वस्त्र दे दिए गये। विरोधी सामन्तो की आशा के विपरीत काम हुआ। सारे दरबार में बाजीराव की काय प्रणाली को स्वीकृति मिल गई। उत्तराधिकार पद देकर बात वहीं समाप्त कर दी। बाजीराव के पक्षधर खुशी से नाच उठे और ऊमाबाई के समथक मुह लटकाए अपनी अपनी हवेली चले गये।

दरबार की समाप्ति के बाद आशा और निराशा लेकर गये ।

पिछले दिन बड़े साफ सुथरे रहे । आज सुबह से मौसम मे थोड़ा परिवर्तन आने लगा । आकाश एक दम साफ था परन्तु क्षितिज पर कालो रेखाए उभरने लगी । पवन की गति मे तेजी थी जो प्रतिपल बढ़ती जा रही थी । बिजली की चमक दीखने लगी ।

वापस पूणे जाने की तयारी पहले से ही थी । बाजीराव और अगरक्षक घोड़ो पर सवार होकर रवाना हो गये । सतारे से बाहर निकले तब प्रथम प्रहर की तोप दागी गई थी । चांद निकल रहा था ।

उत्तर की ओर जाता हुआ कारवां तेजी मे था ।

× × × ×

शाहू के खरीते बराबर आ रहे थे । उन मे एक ही सलाह रहती कि जयपुर महाराजा से जरूर इस बार मिलले । उनसे मिलकर सधि की शर्तें तय करले । मराठी राज्य का हित इसी मे है । मुगलों और राजपूतो के बराबर सहयोग रहे । शाहू की महज एक चिन्ता थी मराठा राज्य चारो ओर दुश्मनो से घिरा था । मुगल, निजाम अंग्रेज और पुतगाली । मराठा राज्य की उतराधिकारी ताराबाई भी अपने पुत्र शिवाजी द्वितीय के साथ मिलकर शाहू के अस्तित्व को खतरा पदा कर रही थी । शाहू ने जिस दिन बाजीराव को पेशवा की पोशाक दी थी उसी दिन बुजर्गो ने सलाह दी थी जिसके दूधियादांत अभी टूटे नही है उसे आप नवोदित राज्य का प्रमुख पद देकर कोई समझदारी की बात नहीं कर रहे हैं । सेनापति दाभाडे इसी पद की आशा कर रहा था । इससे वह निराश हुआ और उसके मन मे द्वेष तेजी से फैलने लगा । प्रत्यक्ष रूप से कुछ कहा तो नही परन्तु ईर्ष्या के वशीभूत होकर पेशवा के आदेशो की अवहेलना करने लगा । जिसके पास सेना हो वही प्रभावशाली योग्य होता था । बाजीराव ने इस विषम स्थिति का मुकाबला चतुराई से किया और कूटनीति की चालो से सेनापति ने

विश्वस्त सामन्तों को छत्रपति शिवाजी के नाम मराठा राज्य की सौगंध दिलाकर शाहू के पक्ष में करने लगा। उनके साथ सद्व्यवहार और राजनैतिक मामलों में सलाह लेकर उन्हें अपना विश्वस्त बना लिया। अपनी योजनाओं को सफल बनाने में उनका पूरा सहयोग लिया और आर्थिक लाभ भी पहुंचाया और शाहू महाराज का उनकी प्रशंसा लिखी। इससे वे शाहू के प्रति आस्थावान हो गये। इस नीति से दाभाडे को अकेला कर दिया और एक दिन उसे मार्ग से हटा ही दिया।

समस्या का अन्त तो ठीक हो गया परन्तु शाहू ने दाभाडे के पुत्र यशवन्तराव को सेनापति के वस्त्र देकर नई समस्या फिर खड़ी कर दी। बाजीराव ने इसका समाधान तरकीब से निकाला। यशवन्तराव को शाहू की सुरक्षा का भार सौंपकर ताराबाई से उलझा दिया। यशवन्तराव अपने बापू की तरह घमण्डी, तुनकमिजाजी और मोटी बुद्धी का था। शाहू के पास रहकर छुटपुट लड़ाइयों में उलझा रहा। बाजीराव ने शाहू की चिन्ता को निर्मूल कर दिया और उसकी शंका को उसके पास ही रहने दिया ताकि न तो वह शाहू से दूर हो और न ही दूसरों के लिए सरदर्द हो।[1]

बाजीराव के सामने उत्तरी भारत का विशाल क्षेत्र था। शाहू के खरीते बराबर जयपुर महाराजा से मिलकर सारी बात करने के लिए आ रहे थे। जयपुर महाराज भी बराबर मिलने के लिए खरीते भेज रहे थे। बाजीराव ने खरीता भिजवाया कि वह शीघ्र ही उदयपुर महाराणा के दर्शन करता हुआ आपके पास आ रहा है।

बाजीराव की माता राधाबाई और पत्नी काशीबाई उत्तरी भारत की तीर्थ यात्रा के लिए पहले ही चल पड़ी थी। उदयपुर जयपुर मथुरा वृन्दावन होती हुई वापस पूणे पहुंचने वाली थी। राजपूताने के राजाओं के अलावा निजाम और सूरजमल जाट ने इनकी खूब आवभगत की। सभी स्थानों पर उनके आदमी सेवा चाकरी के लिए हाजिर मिलते और रक्षकों का टुकड़ी साथ रहती। इससे वे अति प्रभावित हुई।

सारा काय निपटने के बाद बाजीराव उठा तब तक एक प्रहर गुजर गई थी। सारा पूणे सद्यस्नाता की तरह ज्योत्स्नामे विभोर था तारे बिखरे विचारो की तरह फल हुए थे। बाजीराव के आगे आगे दासी माग दिखाती चल रही थी। मस्तानी खिडकी के पास उदास मन से खडी थी। परो की चाप सुनकर पीछे देखा और बाजीराव को पास आते देखकर मुडकर दो कदम आगे बढकर मुजरा किया। समई के प्रकाश मे उदास मुह देखकर बोला–'*आज उदासी किस तरह ?*"

"कहां ?"

"तुम्हारे में। महल में सब जगह ही।"

"नही तो।"

'इस नहीं में भी है।"

'क्या कहू। होठों पर आती हुई बात रह जाती है "

हसता हुआ *बाजीराव बोला*–"*तुम्हें अब पता चला है। मुझे* तो शुरू से ही जानकारी थी ?' आश्चर्य से देखती बोली– 'सच '"

"हा"

"मुझे कभी बताया नहीं।"

"*मैं उसे बताने लायक समझता ही नही था।*"

नाराज होती बोली–' मेरे साथ ज्यादती करी"

'*तो सुनो। तुमने मुझे जाति से च्युत कर दिया।*'

"हां'

'*मेरा धम या जाति क्या इतनी हल्की है जो इन छोटी मोटी* बातों से बिगड जाती है। यह महाराज शाहू को मालूम है। उन्होंने कभी भी इस बारे मे बात नहीं करी। वे मुगल हरम की बातों को देख चुके हैं। मै जन्म से ब्राह्मण हू काय से क्षत्रिय। इसलिए मेरा आचरण दोनों

जातियों जैसा है।' नफरत से भर कर बोला– 'हल्की बात हल्के आदमी करते हैं। इससे हम अपने जीवन में विष क्यों घोलें। सतपथ से क्यों विचलित हों। हमारे सामने विशाल उद्देश्य है उसे पूरा करें। निकम्मे और काहिल निन्दा करते हैं। उनके पास इसके सिवाय और कुछ भी है ही नहीं।" जोश से बोला– 'हमारे सामने महाराज छत्रपति का विशाल स्वप्न है। हमें उसे पूरा करना है। हमें लोगों की ओर नहीं दखना है।'

मुझे तो यह बात शूल की तरह चुभती है। जो उनकी बातों को सुनकर दु:खी होता है उसे ही लोग सुनाते हैं। बातें सुनकर हम अपने महान उद्देश्यों को भूलकर उनसे कफियत लें? महान व्यक्ति आदर्शों की ओर देखता है पीछे नहीं। तुमने जीवन को विविध दृष्टियों से देखा है। "तुम तो प्रनामी मत को मानती हो। मेरे सामने स्त्री एक अमूल्य रत्न है।

"मालिजाह! आपके विचार कितने ऊंचे हैं। वहां तक मेरा पहुचना मुश्किल है।'

"तुम्हें वहां तक मेरे साथ पहुचना है।" आलिंगन करता बोला।

× × × ×

दीप-दान

बातें चलती रही और वक्त गुजरता गया। एक दिन बाजीराव अपनी सेना के साथ अभियान पर रवाना हो गया। मराठवाड़े में ठंड नहीं के बराबर थी, परन्तु ज्यों ज्यों सेना उत्तर की ओर बढ़ने लगी ठंड बढ़ने लगी। सेना रात दिन चलती चलती नर्मदा के पास पहुँची। चिमनाजी अप्पा पहले से ही डेरा डाले पड़ा था। सैनिकों ने विश्राम करके घोड़ों को स्नान करवाया मालिश की और नर्मदा में पितरों का तर्पण किया। बाजीराव ने भी स्नान करके तर्पण किया। नर्मदा की पूजा की। नित्यकर्म में दिन ढलने लगा। सर्दी में दिन छोटे होने लगे और रातें लम्बी। परन्तु सैनिकों के लिए रात और दिन बराबर होते हैं। रात कहां गुजारते हैं और दिन कहां। बैठक में आने पर पता चला कि चिमनाजी अप्पा अभी अभी आकर बैठे हैं। चिमनाजी ने प्रणाम किया और घर के समाचार पूछे। बाजीराव ने राधाबाई और काशीबाई की तीर्थ-यात्रा के सारे समाचार बताये और निजाम के बारे में जानकारी चाही।

"निजाम दिल्ली गया है।'

"वह जरूर खुराफात करेगा।"

"आपकी योजना क्या है ?" इतने में सूखे मेवे और पान के बीड़े आ गये। सब लोगों ने लिये।

"मैं हिन्दुओं के सूरज उदयपुर के महाराणा के दर्शन करके जयपुर महाराजा से मिलकर संधि की शर्तों पर दिल्ली दरबार की मोहर लगाने की

सोच रहा हू । परन्तु निजाम के दिल्ली चले जाने से वहा फिर उथल पुथल होनी स्वाभाविक है । वजीर बदला जावेगा । मालवा की मनसबदारी जयपुर महाराजा से छीन ली जावेगी । मेरे विचार से राजनीति में कुछ परिवतन जरूर आने वाला है । रकम पुणे भेजी ?'

"पहले भेजी थी, उसके बाद नही ।'

'तुम बुन्देलखण्ड की ओर जाओ । चौथ संग्रह करके पुणे भेजो । इसके साथ निजाम पर निगरानी रखो ।"

'ठीक है ।"

'मैं एक दो दिन जयपुर महाराजा के खरीते के आने के बाद नमदा के किनारे किनारे धुआधार होता हुआ होसंगाबाद के पास से बास-मती घाट से नमदा पार करके उदयपुर होता जयपुर महाराजा से मिलने जाऊगा । श्रीनाथ जी के दशन करूगा । आगे जसा मेरा विचार होगा उसकी सूचना देता रहूगा ।"

थोडे समय तक बातचीत होती रही । तब अन्दर से आरोगण के लिए पधारने का संदेश आया । चिमनाजी की इच्छा खाने की नही थी पर तु इ कार मुश्किल था । इस कारण सकोचवश साथ चल पडा । दो थाल परीसे हुए थे । दोनो खाने बैठे तब बाजीराव ने कहा-'भोजन सात्विक है । तुम्हारा धम भ्रष्ट नही होगा । आराम से खाओ ।'

आरोगन किया । पान के बीडे लेकर दोनो बठकी मे पधारे । बातचीत करते रहे रात को गहराते देखकर बाजीराव ने डेरे पर जाने की इजाजत दी । मैकाल पवत की अमर कटक चोटी से निकलकर नमदा नदी उत्तर और दक्षिण भारत को दो हिस्सो में विभाजित करती हुई पश्चिम बहती खम्भात की खाडी मे गिरती है । इसके तट पर भारत के प्रसिद्ध तीथ हैं । मराठे नमदा नदी के तट पर आते समय और इस पार कर वापस जाते समय इसकी पूजा करते हैं । पितरो का तपण करते हैं । एक दो दिन

विश्राम करते हैं। जबलपुर से एक पहाड़ी की दूरी पर धुम्रांधार प्रपात है। नमदा ऊंचाई से गिरकर पानी अगनित बूंदों में बिखरकर धुंए के समान चारों ओर बिखर कर फिर धरती पर गिरता है। चारों ओर जल के कण धुंए का भ्रम पदा करने लगते हैं इस कारण इस स्थान को धुआधार कहते हैं। इसके बाद नमदा का पानी दोनो ओर 40-45 हाथ ऊंची मकराने का सफेद व काली चट्टानो के बीच होकर तेजी से बहने लगता है। कहीं कहीं तो नमदा का तट इतना कम चौड़ा हो जाता है कि बन्दर इधर से उधर छलांग लगाकर पार कर जाते हैं। इस कारण इस स्थान को बन्दर कूद कहते हैं। इसके बाद होसगाबाद है।

नरसिंहपुर का बरमान घाट ही होसगावाद का जानकी सेठानी घाट है। यहां से आगे निमाड़ जिले मे आद्य शंकराचार्य की तपोभूमि ओंकारेश्वर का मंदिर है। होसंगाबाद के सेठानी घाट पर नमदा नदी का जयन्ती पव हर वर्ष मनाया जाता है। नर्मदा के बीचो बीच सैंकड़ो नावें एक साथ खड़ी कर उन के ऊपर लकड़ी के तख्ते डालकर एक मंच बना लिया जाता है। सूर्यास्त के पहले अड़ोस पड़ोस के नामी विद्वान मां नर्मदा की पूजा अर्चना और अभिषेक की तयारी करने लग जाते हैं। नर्मदा के दोनो तट स्त्री पुरुषों और बच्चों से भर जाते हैं। सूर्यास्त के साथ पूजा शुरू होती है। सारा वन प्रान्त नगारो घड़ियालो व शंख ध्वनि से गूंजने लगता है। नर्मदा मां की जय से आकाश प्रतिध्वनित हो उठता है।

अर्चना के बाद लोग भविष्य की मंगल कामना के लिए दीपदान करते हैं।

बाजीराव ने सेना सहित होसंगावाद के सेठानी घाट पर मां नर्मदा के सालाना पूजा समारोह के दर्शन करने के लिए घाट से कुछ दूरी पर अपना पड़ाव डाला। नर्मदा के बीच मे नावों को एक दूसरे से बांधकर उन नावो पर तख्ता का डालकर मंच बना था। दोपहर के बाद आस पड़ोस के संस्कृत के नामी विद्वान गुरु शिष्य परम्परा के अनुसार उस मंच पर

एकत्र होने लगे। छ मुखी आरती को घृत से भरकर तयार करते थे। प्रमुख पंडित ने आरती का दोनों हाथों से पकड़ कर वत्तियों को जलाकर आरती शुरू की तब झालर शख व तासे नगाडे बजने शुरू हो गये थे। मा नर्मदा की इतनी उत्साह से पूजा हुई कि सारा वातावरण शुद्ध सात्विक हो गया।

बाजीराव मस्तानी को लेकर आरती देखने आया नमदा के दोनों तट स्त्री-पुरुषों व बच्चों की भीड से कोहलाहलमय था। चारो ओर जोर से आरती का पाठ हो रहा था। जलते हुए धूप की गध चारों ओर फली हुई थी। आरती का ऊपर नीचे कर घुमाने से नमदा की लहरों मे ऐसी सैकडों आरतिया उभर कर नदी को आरतीमय कर रही थीं। जसे नमदा स्वय अपनी आरती कर रही है। हिलती हुई आरती ऐसी मालूम पड़ती थी जसे नमदा आचल मे दीप छिपाकर शिवार्चन के लिए जा रही है। एक प्रहर तक आरती होती रही। बाजीराव आरती की पुनरावृति करता रहा है। जयघोष के साथ आरती का समापन होने के साथ सब नतमस्तक होकर नमदा को नमस्कार करने लगे। बाजीराव ने भी नत मस्तक होकर व दना की। मस्तानी ने भी वन्दना की। बाजीराव ने कहा– मस्तानी हिन्दुओं का जावन कितनी आस्था और विश्वास से भरा है। धरती को भी मा और नदी को भी मा मानकर पूजा करते हैं। अचना करते हैं।" 'आलिजाह। इनके इस विश्वास और आस्था ने ही अबतक इनको जीवित रखा है अन्यथा तमाम हिन्दू जाति बरबाद हो जाती। आओ हम भी भविष्य की उज्ज्वल मगल कामना के लिए दीपदान करें।'

दोनों ने वन्दना करके नदी में दीपदान किया। दीपक लहरों पर चढ कर उतर कर आगे जाने लगे। बाजीराव देख कर मुस्कराया और मस्तानी की ओर देखकर बोला मस्तानी देख यह कितनी बडी विडम्बना है जिसका जीवन घोड़े की काठी पर गुजर रहा है। मौत जिसके आग पीछे

घूमती है । जो जीवन को एक खेल समझकर खेल रहा है" —।' बीच मे टोक्ती हुई मस्तानी बोली—"प्रालिजाह प्रापका यह खेल कब तक चलेगा । इसका पता किपी को नहीं है । कल प्राप भी शाहू महाराजा की तरह पूणे में रहकर प्रपने पुत्रों द्वारा इस खेल को खेलने लगेंगे । इस बारे मे कौन कह सकता है ।'

'प्रगर मैं ऐसा करने लगा तो सारे मराठा मुझ प्रलग कर देंगे' हँस के बाजीराव ने कहा– तुम्हे पता नही है । मराठा मुँह के मीठे हैं । इनके साथ रहने वालों को प्रपनी पीठ कच्छप को सी रखनी पडती है । कब क्या कर बठें कुछ पता नही चलता है ।'

इस पर विश्वास तो नही होता है ।'

यह प्रनुभव न हो तभी प्रच्छा है ।

'प्राप्रो चलें ।

दोनों चल पडे । थोडी दूर पर रक्षक घोड़े लिए खडे थ । दोनो घोडो पर चढकर छावनी पहुचे तब तक रात प्राधी होगई थी ।

मस्तानी जनानखाने में चलीगई प्रौर बाजीराव वठक मे गया । तब सुमन्त ने बताया कि महाराजा जयपुर का खरीता प्र या हुप्रा है । बाजीराव ने खरीता पढकर उसका उत्तर भिजवाया । सेना के लिए प्रादेश दिया कि वह बूदी के पास से होती हुई जहाजपुर के नजदीक डेरा डाले । एक खरीता दिल्ली दरबार मे रहनेवाले मराठा प्रतिनिधि महादेवभट्ट हिंगने को उदयपुर पहुचने का लिखवाया । बाजीराव प्रपने साथ रक्षक सेना लेकर उदयपुर की प्रोर रवाना हो गया ।

महाराणा ने बाजीराव के ठहरने की व्यवस्था चम्पा बाग मे की । महादेव भट्ट हिंगले महाराजा जयपुर के दीवान प्रयामल के साथ बाजीराव से पहले ही उदयपुर पहुच गये थे ।

उदयपुर की सीमा के पास जब बाजीराव पहुचा तो महाराणा के प्रतिनिधि ने दिल खोलकर स्वागत किया और लवाजमे के साथ हाथी के हाद पर वठाकर उदयपुर नगर मे प्रवेश कराकर चम्पा बाग के महल में ठहराया।

× × × ×

दूसरे दिन बाजीराव अपने अ गरक्षकों के साथ किले मे आया। सूरजपोल से बढत ही देखा कि सोने का बना हुआ सूय, सूय की तेज किरणों मे सूय की तरह ही चमक रहा है। उस सूय में सिवाय चमक क और कुछ भी दिखाई नहीं देता है परन्तु इस सूय मे मुह नाक आख दिखाइ दत हैं। आश्चय के साथ बाजीराव ने महाराणा के प्रतिनिधि की और देखा। उसने अरजकरी कि जब महाराणा शिकार पर हात है तो जनता इसके दशन करके खाना खा लेती है अन्यथा महाराणा प्रतिदिन झरोख से दशन देते हैं। उत्तरी भारत की जनता का महाराणा पर इतना विश्वास देख कर बाजीराव आश्चय से भर गया। आगे बढने पर महाराजा के दरबार की सीढिया चढ़ने लगे। दोनो ओर चोवदार छडी लिए हुए थ। सबने मुजरा किया दरवाजे क पास से ही महाराणा का भव्य दरबार दिखाई देता था। सभी उमराव अपने पद और रुतवे के अनुसार वठे थे खडे थे। महाराणा सामने राजगद्दी पर विराजमान थे। महरावे देकर दरबार हाल खूबसुरती से बना था। भव्य लगरहा था। महाराणा हिन्दू जाति के गौरव लग रहे थे। उनक चेहरे की दमक सूय के समान थी। कुर्बानी और गौरव से ललाट दीप दीप कर रहा था।

बाजीराव को फाटक स प्रवेश करते देख कर महाराणा उठ कर सामन आये और हाथ पकड कर राज-सिहासन तक लाये। सभी सर-दारो ने महाराणा की जय बाजीराव पेशवा की जय के नारे लगाकर दरबार को प्रतिध्वनित कर दिया। महाराणा ने अपने पास लगे छोने के सिहासन पर बठने का सकेत किया। बाजीराव ने एक क्षण सोचा

ग्रौर फिर ग्ररज करी 'ग्राप हिन्दूवान सूरज हो। ग्रापके बराबर बठने में ग्रसमथ हू । मेरा स्थान तो ग्रापके चरणों में है।" यह कहता हुग्रा महाराणा के चरणों में धम्म से बठ गया। मराहठा के वाक्चातुय ग्रौर नम्रता से सभी प्रभावित हुए। ग्रन्त मे महाराणा के विशष ग्राग्रह के कारण बाजीराव को चांदी के सिंहासन पर बठना पड़ा। बाजीराव की नम्रता को देखकर दरबारियों ने वाह-वाह करी। महाराणा ने बाजीराव को सिरोपाव व बहुमूल्य उपहार दिए। सभी की कुशल क्षम पूछी। शाहू महाराज के समाचार मालूम किए। ग्रौपचारिक वार्तालाप के बाद दरबार बरखास्त हुग्रा। राजकुमार पेशवा को फाटक तक छोड़ने ग्राया।

राजनतिक वार्तालाप चलता रहा। सन्धि की शर्तों पर विचार विनिमय होता रहा। बाजीराव ने महाराणा का जल महल देखा। किले की बनावट देखकर बाजीराव दग रह गया ग्रौर बोला ऐसा सुदढ किला उसने नही देखा है। ग्रपनी सुन्ठता के कारण ही इसने मुगलों के इतने हमले सहन कर लिए। ग्राज भी सीना ताने सर उठाए शान के साथ हवा से बातें कर रहा है। ग्राकाश को चूम रहा है। यह हमारे लिए भी गव की बात है। महाराणा से सन्धि हो जाने के बाद बाजीराव ने श्री नाथजी के दशन किए। विशेष पूजा की। वहां स रवाना होकर बूंदी से चालीस कोस हटकर जहाजपुर पहुँचा। सेना तो पहले स ही वहां पहुचकर बाजीराव की प्रतीक्षा कर रही थी।

× × × × × ×

जहाजपुर के तालाब की पाल पर मराठी सेना का डेरा था। बाजीराव के जहाजपुर पहुचने के बाद जयपुर महाराजा का खरीता ग्राया जिसम उन्होंने लिखा कि मैं ग्राहली ग्राकर ठहर गया हू। मिलने के स्थान ग्राप ग्रपनी सुविधा के ग्रनुसार तय करके लिख दें। सुमन्त ने बताया कि हमारे खोजी ने उपयुक्त स्थान का पता लगा लिया है वह है

बमदोला। दानो के पास मे भी है और चारा ग्रोर से खुला है। समय और स्थान की सूचना दे दी गई। चारा और सफाई करके तम्बू लगाकर स्थान को उपयुक्त कर दिया। दोनो ओर की रक्षक सेना समुचित स्थाना पर मुस्तदी से पहरा देन लगी महाराज जयपुर और पशवा हाथी पर चढकर आये। एक दूसरे को देखकर होदे से उतर कर दोनों आगे बढ ग्रोर गले मिले महाराज जयपुर बाजीराव का हाथ पकड कर तम्बू म मसनदो के सहारे वठ गये। महाराज जयपुर ने सबकी कुशल क्षेम पूछ ग्रौर राधाबाई और काशीबाई की तीर्थ यात्रा के समय किए गये स्वागत म कोई कमी ता नहीं रह गई। उन्ह यात्रा में किसी प्रकार की तकलीफ नो नहीं हुई। यह पूछा। पेशवा ने बताया कि आपकी खातिरदारी से वे लोग आत्मविभोर हैं। आप लोगो ने उनकी जो खातिरदारी की उसके लिए मैं आपका आभारी हू।

वे हमारी मा की तरह पूजनीय हैं। उनकी सेवा करना हमारा परम पुनीत कर्त्तव्य है।

दिल्ली दरबार की स्थिति किस तरह बिगड रही है इसका कुछ अन्दाज नही लगता

यहां के मनसबदार स्वार्थी और लालची हैं। दिल्ली के सिंहासन के प्रति वफादारी किसी की नहीं।

ईरानी और तूरानी सरदारों की क्या मानस है। वे लोग भी इसी प्रकार स्वार्थी हैं।

थोडे समय के बाद दोनो दरबार को छोड़कर पीछे सलाह के लिए बने तम्बू मे चले गये।

दिल्ली दरबार से तय करवाने वाली शर्तों पर बातचीत की और खाना खाकर वापस बाहर आये और अपने अपने डेरों पर चले गये।

दो दिनों तक शर्तों पर विचार विमर्श होता रहा और अन्त मे

निर्णय हुआ कि महादेव भट्ट यादवराज मुंशी और गिरधरराज तीनों दिल्ली जाकर बादशाह सलामत से शर्तों के बारे में बात करलें और मिलन का स्थान व समय करके वापस आवें तब आगे किस प्रकार करना है इस पर विचार करना तय हुआ।

दरबार में सब बठे थे। बाजीराव और जयपुर महाराजा दोनों एक ही मक्सन के सहारे बठे थे। मुसाहिब लोग भी दोनों और बठे थे। नाच-गाना हो रहा था। अयामल के पास द्वार रक्षक संदेश लेकर आया। वह चुपचाप उठकर बाहर आया। मुगल दरबार के प्रतिनिधि यादगारखां को सामने देख कर अयामल की भकुटी तनने लगी। उसने मुजरा करके कहा बादशाह सलामत ने खरीता भेजा और कहलवाया है कि महाराजा साहब खरीते में लिखी हुई बातों के आधार पर पेशवा से सन्धि की शर्तें तय करके सन्धि करलें। अयामल यादगार खां से खरीता लेकर उसे तम्बू मे लेजाकर अपने पास वठा लिया। महाराजा और महादेव भट्ट उसे पहचान गये। दोनों ने आंखों के इशारों से बात की। इन सबका देख कर बाजीराव को शका हुई।

गाना पूरा होने पर महाराजा ने इशारे से अयामल को अपने पास बुलाया। उसने खरीता देकर सारी बात बताई है। जयपुर महाराज और बाजीराव अयामल को लेकर पीछे के तम्बू में गये। खरीता पढ़ते ही महाराजा एक दम सफेद पड़ गये। चहरे पर उदासी छाने लगी। आखों मे बचैनी झांकने लगी। खरीता बाजीराव के सामने कर दिया बाजीराव जी खरीता पढ़ते ही आग बबूला हो गया। आख लाल हो उठी। होठ फड़कने लगे। बाजीराव आग बबूला होकर महाराजा से बोला आपका मालूम ही है कि मराठों की राजनीति तलवार के नोक पर है। आपने जो प्रयत्न किया। उसके लिए मैं आपका आभारी हू। जब तक मैं दिल्ली जाकर इनकी नाक नहीं काट लेता तब तक कोई सधि नहीं होगी।

खाना खाकर दोनों अपने डेरे चले गये। बाजीराव ने डेरे पर पहुंचते ही सुमन्त को दिल्ली खरीता भेजने का आदेश दिया और समचार लिखवाये। उसी रात का खरीता धोंडो गोविन्द और बाबूराम के साथ दिल्ली भिजवाया। उनके रक्षक बनकर खोजी गये जो सारे रास्ते व दिल्ली के मार्गों की सही जानकारी लेकर आये। दूसरे दिन महाराज से मिल कर, पूणे के लिए रवाना हो गया। जाते जाते चिमनाजी अप्पा मलहारराव हौल्कर रानो सिंधिया को मालव में रहकर युद्ध की तैयारी करने का आदेश भिजवाया।

यह पहला अवसर था कि मराठे बरसात में उत्तरी भारत में ठहरे। भविष्य में मालवा मराठों की अस्थायी छावनी बन गया।

× × × × × ×

वर्षा-ऋतु अभियान की तैयारी में निकल गई। पूणे हलचल का केन्द्र था। कारखानों में युद्ध के सामान की तयारी तेजी से हो रही थी। रात दिन काम हाता रहता। सामरिक दृष्टि से चौकसी का काम ज्यादा मुस्तदी पर था। खोजी एक-एक जगह को सूंघते थे। आने जाने वालो पर नजर रखी जा रही थी। रात दिन काम होता रहता। सामरिक दृष्टि से तैयारी होने से चौकसी का काम ज्यादा मुस्हदी पर था। खोजी एक-एक जगह को सूंघते रहते थे। आने जाने वाला पर नजर रखी जा रही थी। खरीते रात दिन आते रहते और जाते रहते। लम्बे अभियान की तैयारी मे लगा होने के कारण बाजाराव महल मे मुश्किल से एक दो प्रहर के लिए जा पाता था। कब सूर्योदय होता और कब ढलता किसी को पता नहीं चलता। समझ ही बनाती की रात हो रही है दिन निकल रहा है। जयपुर महाराजा व जाट राजा सूरजमल के भी संदेश आते रहते। इस हलचल के कारण पूणे काफी परेशान रहता। बाजीराव का सबसे ज्यादा चिन्ता बात की रहती कि कल यह अभियान असफल ही जावे।

दिल्ली जाकर घोडो गोविन्द और बाबूराव मल्हार वापस आ गये थे। दिल्ली दरबार पेशवा के खरीते को पढते ही भड़क उठा। शर्तो ने आग में घी का काम किया। बादशाह का फरमान भेजकर सभी मनसबदारों को दिल्ली बुला कर मराठों को मालवा और गुजरात से बाहर निकालने का हुक्म दे दिया। सहादत खां मोहम्मद बंगश वजीर कमरुद्दीन के सहायक बनकर युद्ध की तयारी करने लगे। बाजीराव को चिन्ता इसी बात की थी कि आज तक उसने मनसबदारों को अलग-अलग हराया है तब तीनों एक साथ मिलकर यानी सारी मुगलसत्ता एक साथ प्रयाण करके मराठों को उत्तर भारत से बाहर करेगी। महाराजा जयपुर ने सदेश भिजवाया कि उसने भरे दरबार में इसका विरोध किया है। महाराज अभयसिंह भी उनके साथ था। परन्तु मुगल मनसबदार मराठों से खार खाये बठे हैं सभी अपनी पिछली पराजयों का बदला लेना चाहते हैं। इसलिए आप समलकर रहें काम भी होशियारी से करें। बाजीराव की भूख और प्यास बन्द हो गई। न खाने का पता न सोने का। सुबह दोपहर कुलथी की कढ़ी लेना और रात को ही आरोगण करते।

मस्तानी को परेशानी बहुत थी। बाजीराव के स्वास्थ्य की चिन्ता और घर में उठती कलह। कलह के कारण मस्तानी का स्वभाव थोड़ा रूखा होता जा रहा था। उसकी यह चेष्टा रहती कि पेशवा परिवार की औरतें थोड़ा संयम करें। वह उनकी बातों को अजब करने का प्रयत्न करती परन्तु कड़वी बातों का घाव नासूर बन रहा था। वह घर की राड़ को छिपाना चाहती थी परन्तु राड चिन्गारी की तरह सुलगती हुई धुआं देती जा रही थी मस्तानी उसमें सुलगती जा रही थी।

X X X X X

जन्माष्टमी का त्योहार नजदीक था। मंदिरों में जन्माष्टमी के त्योहार को मनाने को तयारी की जा रही थी। मस्तानी ने बोलना

वाली कि अगर घर की लडाई का वातावरण शात हो जाय तो मैं एक सौ रोकडा व दही की मटका चढाऊं। मन म निश्चय करके चादी का टका कपडे से बांधकर तवक मे रख दिया। त्यौहार के नजदीक आजाने के कारण औरतो का ध्यान नुक्ताचीनी से हटकर व्रत के दिन फलहार व भगवान श्री कृष्ण क ज म पर छप्पन भोग का सामान बनाने की ओर लग गया। आदमी जब काम म लग जाता है तो नि दा-स्तुति से परे हो जाता है।

बरसात खत्म तो नही हुई थी परतु दिन साफ था। गर्मी कम, उमस ज्यादा थी। हवा चल रही थी। धूप म चलने से हवा गरम लगती और छाया मे बठने से हवा ठडी महसूस होती।

दीवानखान म बाजीराव बठा हुआ आये हुए खरीते पढ रहा था और उनके उत्तर लिखवा रहा था। सुम त लिखता जाता था। एक आदमी पखा खीचकर हवा कर रहा था। सामन देखने पर प्रकाश चकाचौध पदा कर रहा था। द्वार रक्षक न आकर सूचना दी कि बु देलखण्ड स खरीता आया है। बु देलखण्ड से गोवि द बलाल न अरज की कि यमुना नदी के तट के पास गाजीपुर के पास एक फतहपुर नामक छोटी सी जागीर है। वहा का जागीरदार भगव तसिह था। बजीर कमरुद्दीन का भतीजा शमशुदान गाजीपुर का सूबदार था। उन दोना म किसी छोटी सी बात का लकर भगडा हो गया। सूबेदार शामशुदीन का अपन चाचा की बजीरी का घमण्ड था और भगव तसिह सच्चा राजपूत था। शमशुद्दीन शिकार खलन वहा क जगल मे गया। जागीरदार भगव तसिह मन म आट रखकर यमुना क तट पर चौकसी रख रहा था। मौका देखकर सूबेदार शामशुदीनखा का उसक अग रक्षको सहित अकेला पाकर ललकारा और लडाई म सब का मार दिया। यह जानकारी जब वजीर कमरुद्दीन को मिली तो उसने सहायतका क साथ सना भेजकर पाठ पढान को कहा। जागीरदार भगव तसिह उस लडाइ म मारा गया। परतु उसका इकलौता बेटा रूपसिह किसी प्रकार वहा स

दिल्ली जाकर घोडो गोवि द और बाबूराव मल्हार वापस आ गये थे। दिल्ली दरबार पेशवा के खरीते को पढते ही भड़क उठा। शर्तों ने आग मे घी का काम किया। बादशाह का फरमान भेजकर सभी मनसबदारो को दिल्ली बुला कर मराठो को मालवा और गुजरात से बाहर निकालने का हुकम दे दिया। सहादत खां मोहम्मद वगश वजीर कमरुदीन क सहायक बनकर युद्ध की तैयारी करने लग। बाजीराव को चिन्ता इसी बात की थी कि आज तक उसने मनसबदारो को अलग-अलग हराया है तब तीनो एक साथ मिलकर यानी सारी मुगलसत्ता एक साथ प्रयाण करके मराठो को उतर भारत से बाहर करेगी। महाराजा जयपुर ने संदेश भिजवाया कि उसने मरे दरबार मे इसका विरोध किया है। महाराज अभयसिंह भी उनके साथ था। परंतु मुगल मनसबदार मराठो से खार खाये बठे हैं सभी अपनी पिछली पराजयो का बदला लेना चाहत हैं। इसलिए आप समलकर रह काय भी होशियारी से करें। बाजीराव की भूख और प्यास बन्द हो गई। न खाने का पता न सोने का। सुबह दोपहर कुलथी की कढी लेना और रात को ही आरोगण करते।

मस्तानी को परशानी बहुत थी। बाजीराव के स्वास्थ्य की चिन्ता और घर मे उठती कलह। कलह क कारण मस्तानी का स्वभाव थोड़ा रूखा होता जा रहा था। उसकी यह चेष्टा रहती कि पेशवा परिवार की औरतें थोडा सयम बरतें। वह उनकी बातो को जज्ब करने का प्रयत्न करती परन्तु कडवी बातो का घाव नासूर बन रहा था। वह घर की राड को छिपाना चाहती थी परन्तु राड चिन्गारी की तरह सुलगती हुई धूआं देती जा रही थी मस्तानी उसमे सुलगती जा रही थी।

X X X X X

जन्माष्टमी का त्यौहार नजदीक था। मंदिरों मे जन्माष्टमी के त्यौहार को मनाने की तयारी की जा रही थी। मस्तानी ने बोलना

बोली कि अगर घर की लड़ाई का वातावरण शांत हो जाय तो मैं एक सौ राकड़ा व दही की मटकी चढ़ाऊं। मन में निश्चय करके चांदी का टका कपड़े से बांधकर तबक में रख दिया। त्यौहार के नजदीक आ जाने के कारण औरतों का ध्यान नुक्ताचीनी से हटकर व्रत के दिन फलहार व भगवान श्री कृष्ण के जन्म पर छप्पन भोग का सामान बनाने की ओर लग गया। आदमी जब काम में लग जाता है तो निन्दा-स्तुति से परे हो जाता है।

बरसात खत्म तो नहीं हुई थी परन्तु दिन साफ था। गर्मी कम, उमस ज्यादा थी। हवा चल रही थी। धूप में चलने से हवा गरम लगती और छाया में बैठने से हवा ठंडी महसूस होती।

दीवानखाने में बाजीराव बैठा हुआ आये हुए खरीते पढ़ रहा था और उनके उत्तर लिखवा रहा था। सुमन्त लिखता जाता था। एक आदमी पंखा खींचकर हवा कर रहा था। सामने देखने पर प्रकाश चकाचौंध पैदा कर रहा था। द्वार रक्षक ने आकर सूचना दी कि बुन्देलखण्ड से खरीता आया है। बुन्देलखण्ड से गोविन्द बल्लाल ने अरज की कि यमुना नदी के तट के पास गाजीपुर के पास एक फतहपुर नामक छोटी सी जागीर है। वहां का जागीरदार भगवन्तसिंह था। वजीर कमरुद्दीन का भतीजा शमशुद्दीन गाजीपुर का सूबेदार था। उन दोनों में किसी छोटी सी बात को लेकर झगड़ा हो गया। सूबेदार शमशुद्दीन को अपने चाचा की वजीरी का घमण्ड था और भगवन्तसिंह सच्चा राजपूत था। शमशुद्दीन शिकार खेलने वहां के जंगल में गया। जागीरदार भगवन्तसिंह मन में आंट रखकर यमुना के तट पर चौकसी रख रहा था। मौका देखकर सूबेदार शमशुद्दीनखां को उसके अंग रक्षकों सहित अकेला पाकर ललकारा और लड़ाई में उस को मार दिया। यह जानकारी जब वजीर कमरुद्दीन को मिली तो उसने सहादतखां के साथ सेना भेजकर पाठ पढ़ाने को कहा। जागीरदार भगवन्तसिंह उस लड़ाई में मारा गया। परन्तु उसका इकलौता बेटा रूपसिंह किसी प्रकार वहां से

निकलकर हमारी शरण में आ गया है। हमसे उसने सहयोग देने की अरज करी है। आगे आपकी इच्छा। इस समाचार को पढ़कर बाजीराव चिंता में पड़ गया। बाजीराव के सामने कोई रास्ता नहीं था। मुगलों से युद्ध अनिवार्य था। कारण कुछ भी हो। जागीरदार के पुत्र रूपसिंह को लेकर भी झगड़ा हो सकता है। सरदेशमुखी और चौथ को लेकर झगड़ा होना तय था। किसी की मदद के नाम पर मुगलों से युद्ध ज्यादा लाभदायक रहेगा। यह सोचकर बाजीराव ने लिखवाया कि रूपसिंह की मदद की जावे और उसे सुरक्षित रूप से रानोजी सिंधिया के पास पहुंचा दिया जावे। उसकी जीवन की सुरक्षा पर विशेष ध्यान रखा जावे। बाकी की बातों पर यहां आने पर विचार किया जावेगा। मुंशी से खरीता लिखवा कर रजदानी से रजी डालकर स्याही सुखाकर फिर ठरका देकर रजी झाड़ी और हस्ताक्षर करवा के गोंद करके लाल लगाई और थैली में डालकर भिजवाने की व्यवस्था की।

इस खरीते को आते ही पूणे में यह विचार होने लगा कि बाजीराव कब अभियान पर निकल पड़े। घर के वातावरण में एक साथ परिवर्तन आ गया। सभी औरतें व्रत पूजा पाठ में लग गई।

मस्तानी ने अपने महल के आगे देवगृह के पास के अटारी पर रस्सी बांधकर उसमें एक हांडी आधा दही में भर कर श्रीफल एक सौ चांदी का टका डालकर ऊपर से लाल कपड़ा बांधकर लटका दी। यह युवाओं को चुनौती थी कि जो भी इस हांडी को उतार ले वह टका का हकदार हो जावेगा। युवकों ने इसको देखा पर हिम्मत नहीं हुई। मनचलों से रहा नहीं गया। उन्होंने नीचे ज्यादा उसके ऊपर कम उसके ऊपर कम उसके ऊपर और इस प्रकार एक तम्बू बनाकर एक जवान ऊपर जाकर हांडी उतार कर लाया। सबने मिलकर दही खाया और टका बांट लिए। मस्तानी के मनकी मुराद पूरी हो गई॥

रात को श्री कृष्ण का जन्म हुआ। छप्पन भोग का प्रसाद बांटा गया। और शाम को मराठी सेना अभियान पर मालवा की ओर चल पड़ी।

दिल्ली अभियान

दिल्ली दरबार म वातावरण गरम था। मराठा न बार-बार आक्रमण कर मुगल सत्ता को सर आम चुनौती थी। मुगल मनसबदारा क लिए एक खुली चुनौती थी। एक-एक करक सभी मनसबदार मराठा से हार चुक थ। गुजरात, मालवा, बुन्देलखण्ड की सरदेशमुखी और चौथ का मराठो क हक म मुगल सुल्तान से फरमान दिलवाकर अधिकार पत्र दिलवान का वादा करते और लाखा टका देकर समझौता करते। इस कारण सभी मुगल मनसबदार आपस म स्वार्थो का लेकर लडते परन्तु एक स्थान पर सभी एक थ कि मराठा का उत्तरी भारत स निकाल दिया जावे। भर दरबार म जयपुर महाराजा न इसका विरोध किया। परतु वजीर कमरुद्दीन, सहादतखा, मोहम्मद बगश और निजाम एक होकर महाराजा जयपुर का विरोध करने लगे और मराठो की बढती हुई ताकत का मुगल सता के लिए खतरा बताने लगे। देशी रजवाडे मुगल मनसबदारा का विरोध करक जागीर म हाथ धोना नही चाहत थे। मनसबदारो के सहयोग से ही उनका दिल्ली दरबार स आर्थिक सहयोग बराबर मिलता रहता था उसे खोना नही चाहत थे।

मराठा को दबाने का श्रेय सभी मनसबदार खुद लना चाहत थ। इस कारण व देशी रजवाडा को आर्थिक सहयोग देकर अपनी ओर मिलाकर

रखना चाहते थे। मुगल दरबार जिसे हा सेनापति बनाकर भेजे वा मनसबदार उसके पर काटन लग जाते । इस कारण सार मन एकमना होकर मराठा का एक साथ मुकाबला नहीं किया । जो भी म दार वजीर बनता वह अपन ही आदमियों को गुजरात मालवा बुंदेलखण्ड का मनसबदार बनाकर भेजता । देशी रजवाडे इस द दरबार क चश्मदीठ गवाह थ ।

इन विषम परिस्थितियों को देखकर मुगल दरबार म निणय गया कि सब मिलकर एक साथ मराठा पर आक्रमण करें। बाद विशाल सेना क साथ सब मनसबदारा को रवाना किया ।

× × × × ×

भिलसा के पास रानाजी सिंदिया स मिलकर बाजीराव बुंदेल की ओर रवाना हो गया । रानाजी सिंधिया का यमुना पार कर इलाहाबाद स सरदेश मुखी और चौथ वसूल करन का आदश दि मल्हार राव होल्कर का यमुना पार करके मुगल सूब म आग बढ़ आदेश दिया और आवश्यकता पडन पर दानो एक दूसरे की सहायता सकें यह ध्यान म रह। बाजाराव दानों की सुरक्षा का ध्यान रखता पीछे-पीछे चलने लगा ।

मराठी सेना न मडाना और अटेरा पर अधिकार कर लिया लू खूब धन मिला । लूट का माल जनादन बाबा के कठोर नियत्रण म छाड आगे बढते गय ।

मल्हारराव होल्कर और बाजीभीम राव की सम्मिलित र यमुना पार करक आग बढी । खाजी आग आग जा रह थ और दोआब छुटपुट लूटमार कर रहे थ । उनका अचानक ही सहादतखा की मुख्य स मुकाबला हो गया। सभी खोजी मारे गय कुछ पीछे भाग ग सहादतखा न इन खोजिया को मराठा की सेना समझा और बादशाह

पास घमड से भरकर खरीता भिजवाया कि मराठो की सेना का मारभगाया है। बचीखुची सेना यमुना म डूबकर मर गई है। आगे से मराठा कभी भी धावा मारने इधर नही आवेगें । दोआब मे मराठों का एकदम सफाया करके यमुना पार बुन्देल खण्ड म प्रवेश करूगा । मनसबदार सहादतखा खुश होकर यमुना तट पर पडाव डालकर नाच-गानो म झूमने लगा ।

इस समाचार के पहुचते ही दिल्ली दरबार झूम उठा । खूब नाच-गान होने लगे । शराब की नदिया बहने लगी । मराठा प्रतिनिधि महादेव भट्ट ने इसकी सूचना बाजीराव को भेजी । बाजीराव इस समाचार को पढते ही आग बबूला हो उठा और बोला मुगलो की इतनी हिम्मत मेरे रहते हुए उन्होंने सभी मराठो को मार दिया है। अब कभी भी दिल्ली की ओर मुह नही करेगें। सहादतखा की यह औकात ? मुगल भूल गये उस दिन को जब मैं बाबा के साथ सय्यद बन्धुओं के साथ दिल्ली गया था । लालकिला खून से लथपथ था । रोज सुबह एक बादशाह का राजतिलक होता और शाम को उसकी कत्ल हो जाता। हमारी सेना की ताकत पर ही बलवे को दबाकर शासन को स्थिर किया । आज वे कहते है मराठा को मार कर यमुना पार निकाल दिया है। बठकी पर बठते हुए कहा– सुमन्त खरीता लिखो । एक महादेव भट्ट को कि वह दिल्ली छोडकर बाहर निकल कर रायसीन पहाडी पर चला जावे । मल्हार राव होल्कर और बाजी भीमराव को लिखा कि वह सहादतखा पर नजर रखें । मैं रायसीन पहाडी की ओर जा रहा हू । चिम्मनाजी अप्पा को लिखा कि वह निजाम पर चौकसी रखें । मैं रायसीन पहाडी की ओर जा रहा हू । यह व्यवस्था करो कि सेना का सारा भारी सामान बुदलखण्ड भेज दिया जावे । खोजी को हिदायत देवो कि वह मेवात के रास्ते से जाट राजा सूरजमल का सहयोग लेकर मथुरा के पास यमुना पार करने की व्यवस्था करे व रायसीन पहाडी पर निगरानी रखें ।

दो दिन म सारी व्यवस्था हो गई । सेना हल्की होकर तेजी से आगे बढने म सक्षम हो गई । दक्षिणियो की सेना तेजी से मेवात होकर मथुरा के

पास यमुना नदी को पार करके तीन पड़ाव में ही रायसीन पहाड़ी के पीछे एक भाग थी उसके तट पर पहुंच गई। एक दिन और एक रात सेना ने वहां विश्राम किया। सुबह रामनवमी था। दिल्ली के धार्मिक उत्सव मनाने में लगे हुए थे। दिल्ली दरवाजे के बाहर लालकिले के सामने दयों मंदिर था। वहां खूब भीड़ थी। पूजा हो रही थी। मेला लगा हुआ था। अचानक ही मराठी सेना आकर लूट-खसोट करने लगी। लोग भागने लगे। सैनिक हल्की चोटें मारने लगे। सारे वातावरण में आतंक छा गया। लोग भागने लगे। औरतें रोने लगीं। लोगों को पहले तो यह भ्रम रहा कि डाकू आये हैं। परन्तु जब मराठों ने छत्रपति महाराज की जय। पेशवा बाजीराव की जय। हर हर महादेव के जयकारों से आकाश गूंजने लगा तब सबको पता चला कि यह तो मराठा का आक्रमण है। कुछ लोगों के चोट आई। चाय और मिठाइयां बिखर गई। भागते हुए पुरुषों और औरतों की जूतियां पड़ी रह गईं। जगह जगह खून के धब्बे पड़े थे। मराठे आधी घड़ी तक साधारण मारकाट करके वापस चले गये। मराठों को जहां भी मुगल सैनिक मिले उनको उन्होंने जरूर मार दिया। सारा वातावरण घिनौना हो गया।

मराठा सैनिकों ने इतना संयम जरूर बरता कि दिल्ली शहर में प्रवेश नहीं किया। दिल्ली के दरवाजे दोपहर को ही बन्द हो गये।

बाजीराव ने मस्तानी को रायसीन पहाड़ी पर ले जाकर दिल्ली में होने वाली भगदड़ को दिखा दिया और बताया सामने वाला लालकिला है। इसमें भारत का बादशाह रहता है। इसके सामने परकोटे में जो शहर है वह दिल्ली है। मस्तानी ने हंस के कहा– जिसके छाती पर सेना पहुंच चुकी है फिर भी सोया हुआ है। वह क्या बादशाहत करेगा ? ऐसे क्लीव से तो औरतें अच्छी।

'जिसको जनाने खाने से बाहर निकलने का फुरसत ही नहीं वह राज्य क्या करेगा। यही बात है।

इशारे करते हुए कहा-- यह मुगलो का लाल किला है। मुगल सेना का कवच है। बादशाह का जिरहबख्तर है। विशाल है। आठ पहल धगदादी है। दीवारें लाल पत्थर की है। दीवारो मूडेरो तथा मोहरियो तक ऊचाई पच्चीस हाथ है। इसमे इक्कीस बुर्ज है। इसमे चार फाटक व दो द्वार है। इसकी खाई बीस गज चौडी और दस गज गहरी है। नहर के पानी से भरी हुई है। नहर दोनो ओर से यमुना मे गिरती है। पीछे यमुना नदी इसकी दीवार तक है। खास महलो मे चादी की छत है। जो सुनहरा बुर्ज दिखाई देता है। उसके नीचे बादशाह का शयन कक्ष है। खास इमारतें अच्छे फर्शों से जो कश्मीर तथा लाहौर मे पश्मीने के हर महल के लिए बडी कारीगरी से तैयार किए गये है मढे हुए है। प्रत्येक कोठा तथा कमरो मे जरदोजी कामदानी कलाबूत तथा मखमल के पर्दे जो गुजरात के कारीगरो द्वारा तैयार किए गये थे लटके हुए है। हर महल मे जडाऊ सोना व मीना के सिंहासन काम के या सादे है। हर फर्श पर ऊचे मसनद लगाये गये, सुदर गिलाफो मे बडे तकिए लगाकर सुनहरे बिछाने बिछे हुए है। विशाल और शानदार कमरो मे तीन और चादी की धूप दानिया और झरोखे के आगे सोने की धूपदानिया रखी हुई है। हर ताक सुनहरे तारे सोने की सिगडी से लटकाकर उस आकाश सा बना दिया है। बडे कमरे के बीच मे चौकोर चौकी लगाकर तथा उसके चारो ओर सोने की धूपदानियो सजा कर उस पर जडाऊ सिंहासन रखा है। जो सूर्य के समान प्रकाश कर रहा है। ऊपर सुनहरा शामियाना मोतियो की झालरों सहित लगा है। भस्तानी! जब मै बाबा के साथ सैयद भाइयो की सहायता के लिए आया था तो मेरी उम्र 8 बरस की थी। इस किले को मैंने बडे ध्यान से देखा है। जनान खाने का फर्श तो खून से भरा रहता था। जो हत्याए होती थी। सबमे सशय था। एक-दूसरो को शक की नजर मे देखा जाता था। लगभग एक माह तक हम लोग सेना के साथ रहे। घृणा से थूकता हुआ कहता है कुजदिल कहीं के। दुश्मन चौखट पर खडा है और सलामत सो रहे है। आओ चले। दोनो मुडकर अपने डेरे मे आ गये।

तीसरे प्रहर म बादशाह को सूचना मिली कि मराठे दिल्ली म आ गये है। चारो ओर भय फल गया। जनता आतंकित व भयभीत है। इतना सुनते ही बादशाह के होश उड गये। गुलाब जल के छिन्के देने स बादशाह का दिमाग ठिकाने आया और उसने पेशवा के पास खरीता भेजा कि अपने प्रतिनिधि को दरबार म भेजें। हमसे विचार विनिमय करले।

शाम के समय यह खरीता बाजीराव के पास पहुचा। बाजीराव ने सदेश भिजवाया कि सेना के आने स जनता भयभीत हो उठी है। कल कोई आक्रोश म हमारे प्रतिनिधि की हत्या करदे तो उसकी जिम्मेदारी किस की होगी। इस कारण उसको भेजना सभव नही है।

दूसरे दिन बादशाह ने किसी प्रकार मराठा के आक्रमण को रोकने के लिए रक्षको को भेजा। वे घडी भर भी न लड सके। बहुत सारे मारे गये। भाग खडे हुए या छिप गये रात का मराठा ने स्थान बदल कर यमुना के पार चले गये।

यमुना तट पर सहादतखा के पास मोहम्मद बगस भी अपनी सेना लेकर पहुच गया था। वजीर कमरुदीन भी वही पहुच गया। जब उनको समाचार मिला कि बाजीराव दिल्ली के लालकिले के फाटक पर दस्तक दे रहा है तो सभी हडबडी म लालकिले की सुरक्षा के लिए दौड पडे। उधर मल्हारराव होलकर व बाजी भीमराव ने उनके तम्बू को खूब लूटा और माल हस्तगत किया।

रात को ही बाजीराव की सेना ने लम्बा प्रयाण करके रवानी जयपुर होती हुई सिरोज के पास पहुच गई।

× × × ×

मुगल मनसबदार जब दिल्ली पहुचे तो देखा कि मराठो का एक भी सनिक वहा नही है। उनको विश्वास भी नही हो रहा था कि बाजीराव इतना जल्दी दिल्ली कस आ गया। बादशाह बहुत भयभीत व सशकित

था। चेहर की हवाइया उडी हुई थी। लालकिला ग्रातकित था। जनता डरकर घरो मे ब द थी। बाजार ब द था। रौनक नेस्तानाबूद थी। सब मनसबदारा ने मिलकर बादशाह को सचेत किया और जनता को डरने से मना किया। परतु कई दिना तक जनता का भय बना रहा कि कही मराठे वापस न आ जावें।

मराठा सना ग्वाडी के पास पहुची तब मोहम्मद बगस सेना सहित दिल्ली पहुचा लालकिला और दिल्ली पर मातम छाया हुआ था। लालकिले के सामने मराठो द्वारा का गई मारकाट लूटमार के निशान पडे थ। मुगल सनिको की लाशे सड रही थी। चीले गीध और कौवे चारो ओर बठे थे। गीधा की पचायतो स कौवो द्वारा दखल करने पर गीधा के आक्रमण स भयभीत हाकर कौवे काव काव करत उड रह थे। दिल्ली इतनी बुजदिल हो गई थी कि मृत और घायल सनिको को कोई उठाने वाला भी नही था। मुगल झडा दखकर सनिक लालकिले से बाहर निकल। मोहम्मद बगस न चारा और सफाई करने का आदेश दिया और शाह माहम्मद स मिलन गया। शाह मोहम्मद की नीद हराम हो गई थी। रात दिन मराठा के सपन दखने लगा। मराठे आये मराठे आये कहकर चिल्ला उठता था। मोहम्मद बगम मिला तब शाह ने उस खूब फटकारा। मुगल सल्तनत की नाक कटवादी। मराठा को मार भगा दिया। क्या बाजीराव का भूत आया था। जिसने दिल्ली का दरवाजा खट-खटा दिया। खुदा न महर की कि उसन दिल्ली को लूटा नही उजाडा नहा। शहर म प्रवेश नही किया। अगर वह चाहता तो लाल किले को उडा कर रख देता।

शाम को दरबार लगा। सभी मनसबदार थे। वजार भी था। शाह आलम क चेहरे की हवाइया उडी हुई थी। सब सर नीच झुक हुए थ। सहादतखा बेहद शर्मिंदा था। उसकी हेकडी निकल गई। शाह ने मीरबक्शी से निजाम उल मुल्क को खरीता भिजवाया कि वह यथाशीघ्र दरबार म हाजिर हो। निजाम जब सिरोज पहुचा ता उस मालूम पडा कि

बाजीराव पेशवा पास म ही है। औपचारिकतावश मिलना जरूरी था। उसने मुलाकात की। निजाम कुशल राजनीतिज्ञ था। उसन दिल्ली जाने का कोई कारण तो नहा बताया परन्तु सम्राट ने दरबार म हाजिर होने का फरमान भिजवाया है। इसलिए जा रहा हू। उसे बाजीराव की दिल्ली यात्रा की जानकारी थी परन्तु उसन इस बार म एक शब्द भी नही कहा। निजाम का दिल्ली पहुचने पर शानदार स्वागत किया। बादशाह ने अपने रसोवडे से निजाम के लिए खाना भिजवाया। निजाम बादशाह की आवश्य कता को समझता था। बडा ही नम्र रहा। जब बादशाह न निजाम को मुगल सल्तनत का वफादार सनिक कहकर मराठा स बदला लेने के लिए उसे चुना है तब निजाम मधुरता से बोला-- जहापनाह आपका आदेश शिरोधाय है। दुघटना घट गई जिसके कारण आप उन्ह दण्डित देखना चाहत हैं। 'बादशाह न मारी घटना धय से बताई। घटना सुनकर निजाम ने कहा" मैं ता आपका फजबन्द चाकर हू। आपका आदेश सर माथे परन्तु अगर आप सारा भार मेरे ऊपर डालत हैं तो सबसे पहले मालवा और गुजरात की सूबदारी मेरे पुत्र के नाम की जावे। युद्ध के लिए 50000000 (पाच करोड) टका मुफ्त ा लिया जावे ताकि सामरिक तयारी करके मराठो को सूबो स निकाल सकू। बादशाह न उसकी सेनापति बनाकर उसकी सारी बातो को स्वीकार कर लिया। निजाम न अपने बडे बेटे नासिर जग के लिए मालवा और आगरा की सूबेदारी हासिल की। इलाहाबाद गुजरात और अजमेर की सूबदारी निजाम के द्वारा सुझाये गये व्यक्ति को दी जावेगी।

छ माह दिल्ली म रहकर निजाम न सेना की तयारी की और सर्दी शुरू होने के पूव ही विशाल सेना लेकर आगरे के पास से यमुना पार कर के कालपी होता हुआ बुन्देलखण्ड पहुचा। नासिर जग को आदेश भिजवाया कि वह भी सेना सहित तयार रहे। जसे ही उत्तर से मुगल मराठो पर आक्रमण करे वह दक्षिण स आक्रमण शुरू कर दे। मराठे दोहरी मार म मारे जायेंगे।

चिमनाजी अप्पा नासिर जग की गतिविधियो पर ध्यान रख रहा था और उसकी बराबर सूचना बाजीराव के पास भेज रहा था। मल्हार राव होल्कर व बाजीराव भीम निजाम की सारी जानकारी पूणे भिजवा रहे थे। निजाम के दिल्ली रवाना होने की सूचना के साथ ही साथ बाजीराव भी पूणे से रवाना होकर सिरोज की ओर बढने लगा।

मुगलो की विशाल सेना और निजाम के सेनापतित्व ने बुन्देलखण्ड म दहशत फैला दी और निजाम बुन्देलखण्ड पर विजय प्राप्त करता हुआ मालवा म निकला वहीं छावनी डालकर बाजीराव की प्रतीक्षा करने लगा। मल्हार राव होल्कर के खोजी न सारी जानकारी लेकर मराठो को सचेत कर दिया और हरावल दस्त न अपना काम शुरू कर दिया। हरावल दस्ते की चौकसी और रात दिन की जानकारी छीना भपटी स निजाम परेशान रहन लगा। हरावल दस्ते न दिल्ली स आनवाली सहायता को बीच म ही लूट-पाट करके निपटा देत इससे निजाम पर दोहरी मार पडन लगी। पास की सामग्री खत्म होती जा रही थी और पीछे स आन वाली सहायता अनिश्चित थी। विशाल सेना को सामग्री भी विशाल रूप म चाहिए। इस आशका से चिन्तित होकर निजाम भोपाल की ओर बढने लगा। हरावल दस्ता यही चाहता था कि मुगल सेना भोपाल के किले म कद हो जावें। मराठो ने भोपाल के आने वाले सभी मार्गों पर अधिकार करके भोपाल प्रवेश क सभी रास्त बन्द कर दिए।

भोपाल का घेरा

निजाम को किले म हालत खराब होने लगी। पानी खाद्य सामग्री और घास का अभाव होने लगा। सनिक सामान लाने वाले पशुओ को मार कर खाने लगे। घास के अभाव स पशु बीमार हो गये थ और उनका मास खाने से पेचिश हैजा आदि बीमारिया फलने लगी। इसका परिणाम यह निकला कि अधिक स अधिक सेना भूख व बीमारी से मरने लगी। अपने साथियो को मरते हुए देखकर सनिको का मनोबल टूटने लगा और निजाम के प्रति विद्रोह करने का मानस बनाने लगे। युद्ध के सामान खाद्य सामग्री व घास का अभाव तो था ही साथ म सनिको को वतन भी नही मिला था। किले म बन्द होने के कारण सनिक न तो कहा लूटमार कर सकते और न भाग सकते थे। एसी विषम परिस्थिति म निजाम के सलाहकार घर खाने की बात करने लगे। बीमारी तेजी स फल रही थी। गीध व चीलें किले पर मडराने लगी। सनिक उनसे डरने लगे।

मुश्किल स दो महिने निकले होंगे निजाम को मौत सामने दिखाई देने लगी। उसने नुसरतखा को खरीते भेजने का बहुत ही प्रयत्न किया परन्तु पेशवा के सनिको ने उन्हें पकड कर कैद कर लिया और उसके भेजे हुए खरीता से मराठो को निजाम की सही हालत की जानकारी मिल गई इससे मराठो का मनोबल बढने लगा।

भोपाल के किले को मौत की विकराल छाया से घिरा हुआ देखकर निजाम ने संधि के लिए बाजीराव के पास विनती भेजी। संधि की बात कई दिनों चलती रही परन्तु निजाम की इच्छा यह रही कि संधि की शर्तें तय होती रहेंगी किले में भूख से मरते सैनिकों को बाहर जाने दें।

बाजीराव ने अपने सैनिकों की देखरेख में किले का फाटक खोलकर मुगल सैनिकों बाहर निकलने दिया। सेना की हालत बहुत ही खराब थी। अधिकतम पशु मर गये थे। जो पशु जीवित थे उनके हड्डियां ही रह गई थी। चलते-चलते गिर पडते थे। सैनिकों का मनोबल टूट चुका था। शरीर हड्डियों का ढाचा मात्र रह गया था। होठों पर परतें जम गई थी। गाल चिपक गये थे। आखे धंस गई थी और गीड से भरी थी। जिह्वा तालू से चिपक रही थी। पर इधर-उधर पड रहे थे। सैनिक चलते फिरते मुर्दे थे। कपडे फटे हुए थे। सब बेहाल थे। निजाम पेशवा से मिलने डेरे पर आया। पेशवा ने आगे बढकर सम्मान किया। निजाम का चेहरा सुस्त था। पेशवा के अहसानों से इतना दबा हुआ था कि जबान से बात ही नही निकल रही थी। शरीर से भी और मन से भी दुर्बल था, फकीर था। रौनक गायब थी। पेशवा ने इज्जत से अपने पास बैठाया भेंट दी। सन्धि की शर्तों पर बात होती रही। निजाम ने कहा– आप जो भी शर्त लगायेंगे मुझे मंजूर हैं। आपने मुझे जीवन दान देकर जो उपकार किया है उसका अहसान कभी नही भूलूंगा।"

एक माह के बाद पेशवा के यहां खुला दरबार हुआ जिसमें निजाम अपने सरदारों सहित उपस्थित हुआ। बाजीराव ने सबका दिल खोलकर स्वागत किया व पद के अनुसार उपहार दिया। बाजीराव की इस उदारता से सभी खुश हुए। कुछ दिनों के बाद भोपाल का किला वीरान हो गया द्वार रक्षक ही रह गये।

बाजीराव ने अपनी सेना को बरसात के पूर्व पूणे पहुंचने का निर्देश दिया और अपने रक्षकों के साथ वहीं ठहर गया।

बाजीराव दीवानखाने म बैठा था । सुमन्त पास म बैठा था कुछ लिख रहा था । शमा जला दी गई थी । सामन रकाबी म पान के बीड़े थे। बाजीराव के चहरे पर गहरे आनन्द की रखायें मल रही थी । ललाट का त्रिपुण्ड कुछ बिखर रहा था । एक दो स्थाना से केसर व चन्दन की पपडिया उतर गई थी । पान चबाता-चबाता बाजीराव बोला– 'शाहू महाराज न लिखा हैं कि 5–6 दिनो क बाद तुम यहा मे रवाना होकर पूर्ण पहुच जाओ । परन्तु निजाम पर मरा विश्वास नहा है । अब वह क्या कर सके ? अभी वह अपने प्राण बचाकर भाग रहा है। उसकी कुछ भी करने की हिम्मत नहा है । यह ठीक है । कुचला हुआ सप ज्यादा खतरनाक होता है । अभी एसा कुछ दिखाई भी नहीं देता है । सही है । परन्तु यहा ठहरने म कुछ नुक्सान ता है नहीं । देखिय ' खाजी क्या खबर लात हैं ? उसके आधार पर विचार होगा । इस विषय पर फिर सोचेग यह कहता हुआ बाजीराव जनानेतम्बू म चला । सुमन्त ने भी कागज-पत्र खरीत समेटकर रख रजदानी कलम दवात सील को रखा ताली लगाई और अपने तम्बू म चला गया । मस्तानी पान लगा रही थी । बाजीराव की पद चाप सुनकर मुड कर देखा और उस आते हुए देखकर मुजरा किया और पान का बीडा उठाकर मनुहार करती बोली ।

आलीजा इस स्वीकार करें लाजवाब है तुम्हारी हर बात लाजवाब होती है यह आपकी अनुकम्पा है नही तुम्हारे हाथ लाजवाब बनाते हैं पलग पर बठत बाजीराव बोला– इस बार पूर्ण जाने का मन नही करता है । तबियत तो ठीक है" ललाट पर हाथ रखती बोली हैं। शरीर तो स्वस्थ है परन्तु मन उदास है ।

आप मत पधारिये ' शाहू महाराज बराबर मिलने आने के लिए लिख रहे हैं" सोता हुआ बाजीराव बोला इस बार लफड़े बहुत हैं । भगवान की मेहरबानी रही कि हम सभी जगह सफलता मिली । तुम्हारा प्ररणा भी सफलता मे भागीदार है" । 'आज सुरत कसे दिखाई दे रहे हैं"

पास में बग्ली बाली । "यह ता मुझे पता नहीं" । परन्तु मेरे मन मे एक गहरी उदासी ह जो मुझे पूर्ण जान म मना कर रही है मस्तानी का हाथ सहलाते हुए बाजीराव बाला– 'कोई सामाचार है कि नहीं तो फिर इस तरह के विचार क्या ?" इतने समय म दासी प्याला और शराब रखकर चली गई । लो ।" अभी उदासी भाग जायेगी ' जाम भरती मस्तानी बोली । "मस्तानी । यह जाम मुझे भ्रमित कर सकता है । परन्तु अब मैं तुम्हारी आखो के जाम म एक साथ श्वेत श्याम और रतनार के देखता हू तो मैं इस दुनिया को भूलकर उसम रमने लगता हू । जाम लेता हुआ बाजीराव बोला । चुस्की लेने लगा, फिर बोला– मस्तानी । मेरी छाती वच्च की हैं और पीठ ? पीछे देखता हू तो मुझे सुनसान नजर आती है । मेरी छाती के सामने सब सीना तानकर खडे रहते हैं । पीठ पीछे कोई दिखाई नही देता हैं । आपके भाई हैं । लम्बा चौडा परिवार है । आदेश के साथ हाजिर हैं । बुन्देलखण्ड आप के साथ है । सारा मराठवाडा आपके साथ है । फिर आप इतने निराश क्या हैं ? ' 'नही मस्तानी मुझे ऐसा मालुम पडता हैं कि मैं अकेला हू । मेरी छाया मुझ से दूर भागती जा रही है" । मस्तानी न ताली वजाई । एक दासी हाजिर हुई । राज वद्य को बुलाने के लिए कहा । थोडे समय मे वद्यराज प विट्ठल महादेव न पधार कर बाजीराव की नाडी देखी । ललाट पर हाथ रखकर देखा । सब कुछ ठीक लगा । तब बोले– हरारत है । आराम करन स सब ठीक होगा । शहद के साथ स्वण का योग दिया और बताया कि इससे मन को ताकत मिलेगी । सुबह तक आराम करें ' । बाजीराव ने 3–4 दिना तक आराम किया । मौसम म परिवतन आने लगा । हवा ठड का आभास देने लगी । खोई–खोई गध आने लगी । क्षितिज पर काले बादलो के निशान होने लगे । हवा मे सीलन होने से मिट्टी पर उसका असर होन लगा । दिन म हवा गरम रहती परतु शाम के बाद सुहावनी चलने लगता । बरसात की आशा होती जा रही थी । बाजीराव ने निणय लिया कि अमावस्या नजदीक आ रही है । अपन को नमदा के तट पर चल कर स्नान करना चाहिए ।

नर्मदा के तट पर डेरा लगा लिया। रात होने के बाद दोनों नर्मदा के तट पर घूमने गये तट पर हवा ठंडी थी। घूमते हुए बाजीराव ने कहा–, मस्तानी यह नर्मदा नदी पापों से मुक्ति दिलाने वाली है। जब मैं इसके तट पर आ जाता हूं तो बड़ी शान्ति मिलती है। मैं तमाम चिन्ताओं से मुक्त हो जाता हूं। पाप व पुण्य की सीमाओं से परे जाता हूं। मुझे यह स्थान रमणीक लगता है। आपकी कर्मभूमि होने के कारण आपका इसमें नेह है।' सच मेरे जीवन का दूसरा नाम नर्मदा है। चारों ओर बोलते हुए मेंढक लहरों पर उड़ते हुए जुगनू एक नये संसार का निर्माण करते हैं। मेरी इच्छा रहती है कि मैं इसे रात भर देखती रहूं। मेरे मन का सारा भार उतर जाता है मुझे फिर जीवन के कर्म क्षेत्र में उतरने की प्रेरणा यहीं से मिलती है। यह सुखद पवन जीवन को रस प्रदान करती है। मेरी एक महती कल्पना है कि मैं इसके किनारे ही रहूं। इसमें क्या बाधा है? साल के आठ मास तो यहीं गुजरते हैं'। चार ओर सही। आपका हुक्म हो तो। अपने लोगों को कौन यहां रहने देगा। सतारा और पुणे रात दिन इन्तजार करते रहते हैं। अपना जीवन यहां और वहां गुजरेगा।" ठंड बढ़ने लगी। दोनों छावनी की ओर चल पड़े।

खुला दरबार

जब बाजीराव पेशवा पुणे पहुचा तो उसका खूब शानदार स्वागत किया। जगह–जगह स्वागत द्वार बनाए हुए थे। बन्दनवार बांधी गई। मार्ग के दोनों ओर जनता खड़ी हुई थी। फूलों की बरसा कर रही थी। शिवाजी महाराज शाहू महाराज व बाजीराव की जय जयकार कर रही थी। सारा मराठवाड़ा आनन्द के समुद्र में लहराने लगा। बाजीराव का यह अभियान सर्वोत्कृष्ट माना गया। दिल्ली का दरवाजा खट खटा कर और मुगल सेना के योग्यतम सेनापति निजाम को हरा कर उसने भगवा झंडे की इज्जत ही नहीं रखी बल्कि समस्त भारत में यह प्रचारित कर दिया कि मराठा सेना भारत का गौरव है और कूटनीतिज्ञता में बाजीराव सर्वश्रेष्ठ है। निजाम की यह पराजय दिल्ली और निजाम दोनों के लिए महंगी पड़ी। मराठों का सितारा बुलन्दी पर था और उसका सिरमौर बाजीराव था। धाम का विघ्न हरण की विशेष पूजा का आयोजन किया गया। गणेश की बड़ी मूर्ति साक्षात् विजय श्री लिए हुए था। चमकता चेहरा मराठी गौरव की गाथा कह रहा था। सारा नगर विशेष पूजा, वंदन करने व प्रसाद लेने आया। पेशवा का सारा परिवार पूजा में सम्मिलित हुआ। बाजीराव सुनहरे वस्त्र पहने हुए था। गले में मोतियों का हार था। कानों की बालियों में दोनों ओर मोती थे व बीच में लाल। विशेष पूजा का आयोजन होने के कारण दोपहर तक गणेश स्तोत्र का सस्वर पाठ होता

रहा। प्रसाद के रूप में मोदक वितरित हुए। ऐसा मालूम पड़ने लगा कि मराठाराज उत्तरी भारत में शीघ्र ही स्थापित होने वाला है। जयपुर और जोधपुर महाराज के वकील (प्रतिनिधि) भी इस समारोह में विशेष रूप से बधाई देने उपस्थित हुए थे।

बाजीराव महल में जाने के पूर्व आई राधा बाई को प्रणाम करने गया। राधाबाई ने हल्दी व रोली का तिलक किया और दही का पेड़ा व बूरा देकर युग-युग जीने का आशीर्वाद दिया।

दूसरे दिन शाम को शनिवार बाड़े में खुला दरबार हुआ। बाजीराव के दाहिने हाथ की ओर गणेश का विशाल तैल चित्र था। पास में एक तबक रखा था जिसमें पेशवा की पगड़ी व कटार पड़ी हुई थी। सभी सामन्त व सेठ साहूकार दरबार में बैठकियों पर बैठे थे। शाहू महाराज ने बाजीराव के लिए सरोपाव सोने का काम किया हुआ जमदर भेंट किया। सभी सामन्तों ने अपने पद के अनुसार बाजीराव को नजराना दिया। शाहू की ओर से सभी सामन्तों को उपहार दिया गया। आधीरात तक खुले दरबार में नाच-गान चलते रहे। सारा पुणे आनन्द में डूबा हुआ था। एक सप्ताह तक इस पुणे आनन्द में डूबा रहा। आनन्द के पैर नहीं होते हैं। वह हवा में तैरता रहता है। धरती पर कभी भी ठहरता नहीं। आनन्द अशरीरी है। यह वातावरण में कुछ दिनों के लिए रहता है और धीरे-धीरे वहां से अलग होकर व्यक्तिगत जीवन में जगह-जगह फिरने लगता है। वातावरण अपने असली रूप में आने लगा। बाजीराव हिसाब किताब में इस तरह उलझा कि कब बरसात शुरू हो गई और आधी ऋतु भी निकल गई। बाजीराव के घर में अशांति थी और दिवानखाने में कलह का शोर।

बाजीराव के लड़के बड़े हो गये थे। उनका यज्ञोपवित संस्कार करके विवाह करना जरूरी था। पंडितों ने घर वालों को ऐसा बहकाया कि वे यज्ञोपवीत संस्कार करवाने में आना-काना करने लगे। पाठ

पीछे कहने लगे यह ब्राह्मण नहीं रहा । सब कुछ खाना-पीता है । पेशवा से जो नाराज थे उन्होंने इस मौके का फायदा उठाना चाहा । जनता में चर्चा करने लगे पेशवा ब्राह्मण नहीं रहा । उसका खानपान सही नहीं है। बाना का बवडर शनिवार बाडे के चारो ओर घूमने लगा । इसको फलाने म सहयोग दिया घर की औरतो ने । उनको सह मिली पुरुषो से । इस अदृश्य वातावरण से बाजीराव उदास व गम्भीर रहने लगा । उसे यह महसूस होने लगा कि जिस काम को वह घर पर रहकर शान के साथ करना चाहता है उसे यह मौका नहीं मिलेगा । उसके सामने एक अनुत्तरित प्रश्न था । न तो वह पूछ सकता था और न सुलझा। उन्हीं को लेकर व महल मे गया । दासी उसे मस्तानी के पास ले गयी । मस्तानी ने उसे गम्भीर व सुस्त देखकर पूछा- आजकल सुस्त दिखाई दे रहे है तबीयत तो ठीक है"? यह कहती हुई उसने ललाट पर हथेली रखदी । फिर बोली- लगती तो ठीक है फिर क्या बात हो गई ?" बात क्या है ? यहां के लोगों का दिमागी खराब है । बात का बतगड बनाना जानते हैं फिर भी क्या बताऊं । पीठ पीछे कहते है पेशवा ब्राह्मण नहीं है । घर से बाहर निकलकर दुनिया को देखा नहीं । इनको मराठवाडे से बाहर ले जाकर गुजरात माल्वा हैदराबाद और बुन्देलखण्ड दिखा दिया । उदयपुर जयपुर जोधपुर भी दिखा दिया । दिल्ली तक ले जाकर ले आया । परन्तु विचार नहीं बदले रहे । इन लोगो की बातो का मुझे इतना दुख आज हुआ जितना पहले कभी नहीं हुआ । जब मैं 8-9 बरस का था धनाजी जादव को शिवाजी ने किस प्रकार अपनी ओर मिला लिया था । उनका बेटा चन्द्रसेन इस बात को लेकर मेरे बाबा से नाराज रहने लगा । उस समय हमारी लडाई परिवार से चल रही थी । ताराबाई हर जगह हारती जा रही थी । पीठ हटती हुई वह भागकर काल्हापुर के किले म चली गई हमारी सेना का दबाव लगातार बढता जा रहा था । उन्हीं दिनो धनाजी जादव बीमार होकर रामशरण हो गये । शाहू महाराज ने उनका पद उनके बेटे चन्द्रसेन

को दे दिया। चन्द्रसेन शाहू से नाराज था। और बालाजी विश्वनाथ के बढ़ते हुए प्रभाव से भी वह नाराज था। मौका देखकर वह तारावाई के पक्ष में जाना चाहता था। चुनार के किले पर बालाजी और चन्द्रसेन दोनों की सेनाओं ने मिलकर आक्रमण किया 2 दिन की लड़ाई में ही करीम बेग हार गया और किले पर भगवा झंडा फहरा दिया। किला बड़ा एक छोटी गढ़ी थी। सारी सेना उसमें रह नहीं सकती थी इस कारण सेना भाखर में बिखरी पड़ी थी।

उन दिनों में गर्मी काफी तेज थी। भाखर मिट्टी की तरह तपते थे। दिन में हवा भी बन्द रहती थी। आग के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे थे। शाम के बाद थोड़ा आराम मिलता था। भाखर ठंडे होने लगते थे। सूर्योदय के साथ फिर वही स्थिति होने लगती।

एक प्रहर दिन निकल गया था। भाखर तपने लगे थे। बालाजी का एक हरकारा सन्देश लेकर आ रहा था। हरिण देखकर उसने गोली मारी। घायल हिरण भागने लगा और वह भी पीछे-पीछे भागने लगा। हिरण भागकर चन्द्रसेन जाधव के डेरे पर व्यासराव जो रसोई बना रहा था उसके तम्बू में चला गया। हरकारा भी पीछे-पीछे गया। व्यास राव ने हरिण देने से मना कर दिया परन्तु हरकारा मांगता रहा। बात बढ़ने लगी। चन्द्रसेन ने कह दिया कि बालाजी आकर युद्ध करलें। जो जीतेगा वह हरिण को रखेगा। चन्द्रसेन धोखा देकर हम दोनों को कैद कर लिया और अपनी गढ़ के करहड में डाल दिया। खुद सेना लेकर तारावाई के पास कोल्हापुर चला गया। हम लोग छः माह तक उसकी जेल में रहे। चावल गुड़ खाकर दिन निकाले। मुझे उन दिनों में भी इतना दुख नहीं हुआ जितना आज हो रहा है। कितनी ओछी बात है कि मैं ब्राह्मण नहीं हूं। क्या मेरा ब्राह्मणत्व इतना हल्का है कि वह खानपान से गिर जायेगा।

शाहू महाराज के पास जब वह खबर पहुची तो उनको काफी दुख हुआ। उनका चन्द्रसेन पर पहले भी विश्वास नहीं था। शाहू महाराज ने सेना भेजकर कर हन पर अधिकार करके हम लोगो को आजाद किया।

मराठे कितने स्वार्थी हैं। मैंने उत्तर भारत का उनके लिए दरवाजा खोल दिया। सोने के ढेर लगा दिये। राजपूतो के साथ दोस्ताना तालुकात करके उत्तरी पश्चिमी भारत मे मराठा का वचस्व कायम किया। निजाम को कई बार पराजित किया। लाल किले का दरवाजा खोलकर मुगलो का खोखलापन सबको दिखा दिया। उपेक्षा के साथ कहा– उसने खाना–पीना शुरू कर दिया तो उसकी जात ही चली गई। ये मराठी ब्राह्मण कितने घटिया विचारा के है? उनको कमा के देवे तो अच्छा है और उनकी बाता का विरोध करे तो धम भ्रष्ट हो गया।

आप इतन निराश क्यो होत हैं? जनता अपना काम करती है। और आप अपना। सारा भारत आपका जानता है इनका नहा।

पदचाप सुनकर मस्तानी न पीछे देखा। दासी न सामान लाकर सामने रखा और वापस जाकर पान के बीडे लाकर दिए। बाजीराव धीरे-धीरे चुस्किया लेता रहा। मन बडा ही नाजुक है। कभी से बडी पीडा सहन कर सकता है। परन्तु कभी–कभी ककर की चोट स टूट जाता है। भाग्य की विडम्बना कितनी अजीब है। खुदा किसी को देता नही है और दता है तो छप्पर फाडकर दता ह। मराठा न कभी किसी को बरदा नहीं। यहा तक कि छत्रपति को भी नही। जीवन एक पृष्ठ है। जिसमे बहुत सारी बातें लिखी हुई हैं। छठी के लेख भी उसम लिखे हुए हैं। अच्छे भी हैं। बुरे भी। कई अस्पष्ट भी। उसे फाडा नही जायगा। सहेज कर रखा जायगा। खटटे मीठे अनुभव ही इन्सान का निर्माण करत हैं। जिसम आप खरे उतरत है। आपन उन सार अनुभवा को सजोकर अपने पास रखा है परन्तु उनका प्रभाव आप अपने पर नही आने देते हैं। उनके आधार पर

आप अपने जीवन का निर्माण करते हैं। एकलव्य की तरह जगे हुए हैं। रात बहुत हो गई है। पिछले अनुभवों को भूलने के लिए आदमी नींद लेता है। सुबह तरोताजा होकर उठता है और जीवन संघर्ष में फिर लगकर अनुभव प्राप्त करने जुट जाता है। यह संसार का अटल नियम है यह कह कर मस्तानी ने बाजीराव के हाथ से प्याले लेकर रखते हुई अपना चाही में मुस्कराते हुए कहा।

वसई का अभियान

आज शनिवार वाडे म सुबह-सुबह ही हलचल हाने लगी । बरसात आ ा वाली थी इस ऋतु म मराठी सेना अपन घरा म विश्राम करती है। कुछ दिन पहले ही मराठी सना लम्बे अभियान स लौटी है और वापस प्रयाण करने की तयारी करने लगी है । वसइ बन्दरगाह पर पुर्तगालिया न धावा बोल दिया है। इस कारण उसकी सुरक्षा क लिए वहा जाना जरूरी है। रात ढलन क साथ-साथ हरावल दस्ता रवाना हा गया और उसक एक प्रहर के बाद सेना की एक टुकडी रवाना हा गई। सामन्त आत जाते रह थ और कूच की तयारी म लगत जात। हरकार सदश लत हुए फिर रह थ। खरीते आ रह थ और खरीते जा रह थे। गर्मी क दिन बडे लम्ब थ। काम की मार अधिक थी इस कारण दिन गुजरन का पता नहा चलता था। दिन छाटे लगन लग थ। गर्मी बढती जा रही थी। काल बादला की छाया सूर्यास्त के साथ-साथ आकाश म छान लगी। पवन क पर तजा स उठन लग। एसा महसूस हान लगा कि पच्चास कास का दूरी पर बरसात हुइ है। बाजीराव की यह इच्छा था कि बरसात हाने क पहल ही बसई का अभियान चालू हा जाय। परन्तु मानसून न प्रतीक्षा नहीं की और पहल ही आ गयी। एक रात आर एक दिन गहरी बरसात हुई। इच्छा होने के बाद भी बाजीराव पुणे स नहा निकल सका। शनिवार वाड का बाग पानी स लबा लब भर गया। सूर्यास्त होने के पूव ही सूय दिखाई दना बन्द हा गया।

ऐसा मालूम पड़ने लगा कि रात हो गई है। मशालें जलाई गई। पवन की गति म तीव्रता थी। फुहारे बरामदे म गिर रहे थ, ठहर-ठहर कर बिजली चमक रही थी। बादलो की गरजन से पुणे काप रहा था। दीवानखाने के फाटक बन्द कर काम करना पड़ता। कल सुबह आप लोगो को अभियान पर चलना है। सारी तयारीया हो चुकी हैं। 'ठीक ह । बाजीराव उठकर महल म आ गया। दासी माग दिखाती अन्दर ले गई। मस्तानी बाजीराव को आते हुए देखकर उठी और मुजरा करके बोली— आज काफी थके हुए मालुम पड रहे हैं' यह कहते हुए पान की तश्तरी उठाकर सामने करी। पान की बीडा मुह म रखते हुए कहा— बरसात होने के कारण मौसम सुहावना हो गया है। इससे थकान काफी कम हो गई है। बरसात का प्रभाव कम होते ही अभियान को चलना है।

आपको ही पधारणा है क्या? यहा यज्ञोपवीत सस्कार होगा। महाराज शाहू पधारेंगे। मेरा जाना अच्छा नही लगता । मस्तानी। तुम समझती नही हो। तुम्हे मेरे साथ चलना चाहिए। 'आलीजा' आप जानते है। आपके बिना मेरा मन नहा लगता। परन्तु क्या करू आपकी आई ने कहलवाया है कि इस समय तुम्हारा यहा रहना आवश्यक है। उनके आदेश की अवहेलना करना अच्छा नहा रहेगा। आज तक उन्होने कभी कुछ भी नहीं कहा"। 'जसी तुम्हारा इच्छा' भारी मन से बाजीराव ने कहा। उसे अदृश्य भविष्य सामने दिखाई देने लगा। घर कितना अच्छा है। बाजीराव के सामने एक प्रश्न खडा हो गया जिसका उत्तर न तो बाजीराव के पास था और न ही मस्तानी के पास। एक दुघटना घटने वाली है जिसका साथी है बाजीराव। प्रश्न आग की तरह धधक रहा था। जिसमे जलकर सब भस्म हो रहे थे। स्वय बाजीराव भी। ललाट पर पसीना आ गया। चादर से पसीना पोंछा तब तक दासी प्याला और मदिरा रखकर चली गई। आखो म जिज्ञासा थी। काया भारी थी। चादर का पल्ला झटकाया फिर मुह पोंछा जसे सारी अज्ञात आशकाओ को पोंछकर अलग कर दिया हैं। बाजीराव की जीभ तालु छोड ही नही रही थी। 'हा' और ना दोनो ही

श द वाहर नहीं निकल रहे थे। इनका सम्ब ध न तो शाह से था और न शनिवार वाडे से। बाजीराव से जुडा हुआ प्रश्न बाजीराव के चारा ओर ही घूम रहा था। बाजीराव ऊबडबुब मे था। कुछ कह नही पा रहा था। उठकर महल मे घूमन लगा। पिछले वरस आखो के सामने दौड़ने लग। बुदेलखण्ड घूम रहा था। मालवा घूम रहा था। नमदा घूम रही थी। लाल किला घूम रहा था। मस्तानी घूम रही थी। और वह उन सबके बीच-बीच घूम रहा था। "आलीजा" प्याला भरकर देती हुई मस्तानी बोली—'आप इतनी चि ता किस बात की कर रह है मैं आपको यहा मिलूगी।

बाजीराव बठका पर बठकर मदिरा की चुस्किया लेन लगा और बोला—'मस्तानी कल क्या होगा? इसकी न तो तुम्ह जानकारी है और न मुझे। कल मर घोडे की टापा के नीचे होगा। यह घोडा खाडा की लहरिया पर होगा। हार-जीत भाग्य की तरह अगम्य है। मैं हार को जीत मे पलटन की कोशिश म लगा हू। मरे सामन सबसे बडा अहम् प्रश्न यही ह।

आखा म सुर्खी दौडन लगी। मादकता की छाया फलन लगा। मदिरा स गहरी मादकता मस्तानी क जिस्म म था जिस बाजीराव सहलाता जा रहा था। मस्तानी भारी पलक पावडे बिछा रही थी। नाद मधुपान कर के धरती पर उतरन लगी और मस्तानी उसमे गहरा गई। बाजीराव की आखा म नाद नही थी। विकराल भविष्य था। जिसम सारा परिवार उलझा हुआ था। मुलगा व आई मन तक कि शनिवार वाडे की एक-एक इट भी उलझी हुई थी। मस्तानी के जिस्म से एक महक उठ रहा थी। बाजीराव उस महक का आनन्द ले रहा था। आज की रात इतनी विभात्स होगी। इसका पता ही नही था। मस्तानी। जीवन एक अन्तहीन माग है। उसम कौन कब साथ छोड दे इसकी किसी को जानकारी नहीं ह। आज मैं उसी माग पर जा रहा हूँ। इस विडम्बना के साथ कि मैं सबका साथ छोड रहा हू। तृतीय प्रहर का घण्टा अपनी ककश आवाज के साथ गूज

उठा। बरसात मन्द पड गई थी। बाजीराव ने मस्तानी को उठाया और कहा जाने की तयारी कर रहा हू, रात की चादर सिमटती जा रही थी।

सूर्योदय के पूर्व ही मराठी सेना पुणे से अभियान पर चल पडी। बाजीराव का मन बार-बार पीछे भाग रहा था। मार्ग पानी से भरा था। नाला उफनता हुआ बह रहा था। मार्ग पहाडी था। इस कारण बरसात का सारा पानी बहकर निकल गया था। परन्तु कहा-कही खडडे पानी से भरे हुए थे। सेना तेजी से चलती जा रही थी। कही-कही जहा नाला पार करना पडता वहा चाल में धीमापन आता था। एक प्रहर सेना चलती रही। बरसात होने के कारण उमस बढी हुई थी। पसीना चोटी से ऐडी तक चल रहा था। आज आकाश साफ था। सूर्य चमकने लगा। धीरे-धीरे सूर्य तपने लगा। मार्ग में सघन वृक्ष आ जाने के कारण ठडी छाया भी मिल जाती थी परन्तु अधिकतर मार्ग सूना था। घोडे एक चाल से चल रहे थे। कभी-कभी पत्थर आने से घोडा ठोकर खा जाता था। सवार और घोडा दोनो सभलते और फिर उसी रफ्तार से आगे बढने लगते।

भयकर गर्मी पडने लगी तब नाले के पास में थोडा विश्राम किया। घोडो को पानी पिलाया। सैनिको ने मक्के की रोटी प्याज से खाई और पानी पीकर पुन स्वस्थ हो गये। सेना फिर आगे बढने लगी। रात पड गई परन्तु सेना चलती रही। एक प्रहर रात गुजरने के बाद एक झील के पास पहुचे। वहाँ आकाश दीप जल रहा था। समझ गया कि वहा पहुच कर ठहरना है। धीरे-धीरे तम्बू की छाया उभरने लगी। पास में जलते हुए पुआल भी दिखाई देने लगे। घोडो की टापो की आवाज ज्यो-ज्यो नजदीक पहुची तो हरकारो के कान खडे होते जा रहे थे। सेना चारो ओर जगल में बिखरने लगी। बाजीराव तम्बू के पास पहुचा तो सबने खडे होकर मुजरा किया। अगरक्षक तम्बू तक साथ चले। बाजीराव घोडे से उतर कर तम्बू में चला गया। दो चार तम्बू और लगे थे। उनमें हलचल होने लगी। बाजीराव ने स्नान करके शिव की स्तुति की। पाठ सम्पूर्ण होने को था तब तक सुमत

माहिम से आये हरकारे को लेकर तम्बू में आकर बैठ गया । बाजीराव पूजा करके दफ्तर में आया और सुमन्त को बैठा देखकर पूछा–"कोई विशेष बात ?" सुमन्त ने खड़े होकर मुजरा किया और बोला– "माहिम से हरकारा खरीता लेकर आया है" खरीता सामने करते हुए कहा– 'इसी कारण मैं हाजिर हुआ हूं।'

'पढ़कर सुनाओ" "सेना पहुंच गयी है" माहिम को घेर लिया है। पुर्तगालियों के सहायता के मार्ग बन्द कर दिये हैं। उनको हमारे पहुंचने की आशा ही नहीं थी। ठीक है। वापस खरीता भेजा कि माहिम के पीछे तारापुर व असरी पर आक्रमण करना है। वाडी की ओर से धावा मारना है। सभी तयारी रखें। हम पहुंच रहे हैं। सेना पर चौकसी रखी जाय सुमन्त ने उत्तर लिखा कर भिजवाया। सुमन्त को आज कुछ अभाव खटक रहा था। जैसे यहां आत्मा नहीं है शरीर ही दिखाई दे रहा है। बाजीराव चौकसी रखने का कहकर अपने सोने के तम्बू में चला गया। दासी ने सब व्यवस्था कर रखी थी। चुस्कियों के साथ अपने इतिहास की पुनरावृत्ति होने लगी।

तम्बू प्राणहीन था। बाजीराव निराश इन्सान की तरह चुस्कियां ले रहा था। अपने दुख को टुकड़ों में बांटकर गले से उतार रहा था और सोचता जा रहा था कि इस मराठा राज्य का क्या होगा? मेरे ही आत्मीय मेरी लाश देखना चाहते हैं। शाहू महाराज ने इसकी इजाजत भी दी है या नहीं। शाहू महाराज मेरे विरुद्ध में नहीं जायेंगे। उन्होंने पहले ही मेरे व्यक्तिगत जीवन में कुछ भी करने से इन्कार कर दिया था और सलाह दी थी कि मुगलों का हाल देखो तब कोई बात करो। मेरी आई मेरे विरोधियों से मिल गई है। मेरे पुत्र का यज्ञोपवीत संस्कार हो और उस समय में घर से दूर धावे पर रहूं। भाग्य की विडम्बना सहूं। मस्तानी! अब तुम्हारे साथ क्या होगा? इसकी कल्पना से ही कांप मैं उठता हूं। सब इकट्ठे होकर तुम्हें मुझ से खींचकर अलग कर देंगे। शायद मैं तुम्हारा चेहरा भी न देख सकूगा। मद के प्याले

के साथ-साथ मस्तानी सामने आकर खड़ी हो गई। मस्तानी, तुम सच हो या कल्पना सच है। मस्तानी। तुम्हारा सहयोग लेकर मैं समय पर गहरी छाप लगाना चाहता हूँ कि आने वाले के लिए एक उदाहरण बन सके। धरती का चप्पा चप्पा कह सके कि बाजीराव यहा आया था। इतिहास का सफर मेरे घोड़े की सरपट चाल के साथ साथ चले। आलीजा। इतिहास आपके साथ साथ चले या न चले। परन्तु मेरा नाम आपके नाम के साथ चलेगा। इतिहासकार लिखेंगे कि मस्तानी नामक एक औरत थी जिसने बाजीराव के जीवन म आमूल चूल परिवर्तन कर दिया। मेरी गरम-गरम सासो से मिलने की आशा है। आलीजा। मेरा जिस्म मिलने के आनन्द के लिए आतुर है। बाजीराव विस्फारित नत्रों से देख रहा था। दासी खाली प्याले को लेती हुई कह रही थी सरकार। अब और ज्यादा नहीं। हम खास हिदायत है कि ज्यादा न लेने दें। रात आधी से ज्यादा व्यतीत हो गई हैं। अब आप आराम कीजिए।" कहकर बाजीराव सोने लगा। परन्तु नींद कहा उसकी आनी तो डरावने सपने के साथ। वह कभी मस्तानी की हत्या करते हुए लोगो को देखता। कभी खुद को नर्मदा म डूबता हुआ देखता। कभी युद्ध म मरते हुए सनिको की गहरी चीत्कार सुनता। खून के फव्वारे चलते हुए देखता और खुद को उस गरम-गरम खून म स्नान करता हुआ देखता। रात भयकर सपनों म ही निकल गई। कभी-कभी स्वय बाजीराव चीख उठता परन्तु चतुर दासी सारी घटना को छिपाकर रखती थी।

बाजीराव माहिम के पास से होता हुआ तारापुर के पास पहुचा। खाड़ी के मुहाने पर तारापुर की गढ़ी थी। बाजीराव की अचानक मुहिम से किलेदार हक्का-बक्का रह गया। सेना के आक्रमण से बाजीराव के नाम का आक्रमण ज्यादा खतरनाक था। रात के समय गढ़ी म सुरगें डालकर दीवार उड़ा दी। मराठा सेना गढ़ी म प्रवेश कर गई और दोपहर तक भगवा झण्डे को गढ़ी पर फहरा दिया। वहा से बाजीराव उमेगी की गढ़ी की ओर आगे बढ़ा। किलेदार ने बाजीराव के धावे का

ा म सुनकर ही गढी खाली कर वसई म जाकर ग रण ले ली। अपरी म हौज को भी साथ ले गया। दोनो स्थानो पर अधिकार करने के बाद चेमनाजी अप्पा का पुणे जाकर नारायण राव का यज्ञोपवीत सस्कार करन और वहा उपस्थित शाहू महाराज का यथाचित सम्मान करने के लिए ापस पुणे भेजा।

पिछले दो महिना स वरसात हो रही। नाली ।नी मे लबालब भरी थी इस कारण बसई पर धावा नहीं बोला जा सका। पुतगाल सरकार मराठो की चौकसी के कारण सहायता पहुचान म असमथ थी। सारा ी ापू पानी से भरा था। मराठी सेना टापू के किनार डेरा डाले पडी थी। बरसात का मौसम जाने लगा। आकाश साफ हाने लगा। नाला का पानी कम पडने लगा। वसई का किलेदार साच रहा था कि मराठो का धावा 20–25 दिनो के बाद होगा तब तक सहायता पहुँच जावगी। 5–7 दिन मुश्किल म गुजर होग कि मराठी सेना रात को धारावी टापू पर उतर गयी और सूर्योदय के साथ–साथ किले की घेराबन्दी करनी शुरू कर दी। खाद्य सामग्री और बारूद का आना असभव हो गया। पहल वरसात होने के कारण खाडी के रास्त म सामान आना मुश्किल था और अब घराव ो के कारण।

मराठो ने किले के पीछे की तरफ 10–12 जगह बारूद की सुरग डालकर रात का पलीता म आग लगाय दी। किले की दीवार न टूटकर बहुत सारे भाग बना दिय। मराठी सना दाखिल हान लगी। किले दार ने सनिको व सभी बच्चा की प्राणा की सुरक्षा का ध्यान म रखकर सफेद झडा किले पर फहरा दिया और अस्त्र–शस्त्र डाल दिय। सलाह–मशविरा शुरू हो गया। पुतगाली किलेदार किले को खाली कर औरता और बच्चा को लेकर सुरक्षित रूप स बाहर निकल गया। सनिक सामान छोडकर किले को खाली कर दिया। भगवा झडा फहरा दिया। सारी सना निकल गई।

के साथ-साथ मस्तानी सामने आकर खड़ी हो गई। मस्तानी, तुम सच हो या कल्पना सच है। मस्तानी। तुम्हारा सहयोग पाकर मैं समय पर गहरी छाप लगाना चाहता हूं कि आने वाले के लिए एक उदाहरण बन सके। धरती का चप्पा चप्पा कह सके कि बाजीराव यहां आया था। इतिहास का सफर मेरे घोड़े की सरपट चाल के साथ-साथ चले। 'आलीजा। इतिहास आपके साथ-साथ चले या न चले। परन्तु मेरा नाम आपके नाम के साथ चलेगा। इतिहासकार लिखेंगे कि मस्तानी नामक एक औरत थी जिसने बाजीराव के जीवन में आमूल चूल परिवर्तन कर दिया। मेरी गरम-गरम सांसों में मिलन की आशा है। आलीजा। मेरा जिस्म मिलन के आनन्द के लिए आतुर है। बाजीराव विस्फारित नत्रों से देख रहा था। दासी सालों प्याले को लेती हुई कह रही थी सरकार। अब और ज्यादा नहीं। हम खास हिदायत है कि ज्यादा न लेने दें। रात आधी से ज्यादा व्यतीत हो गई है। अब आप आराम कीजिए।" हूँ कहकर बाजीराव सोने लगा। परन्तु नींद कहां पलकों आती तो डरावने सपने के साथ। वह कभी मस्तानी की हत्या करते हुए लोगों को देखता। कभी खुद को नर्मदा में डूबता हुआ देखता। कभी युद्ध में मरते हुए सैनिकों की गहरी चीत्कार सुनता। खून के फव्वारे चलते हुए देखता और खुद को उस गरम-गरम खून में स्नान करता हुआ देखता। रात भयंकर सपनों में ही निकल गई। कभी-कभी स्वयं बाजीराव चौंक उठता परन्तु चतुर दासी सारी घटना को छिपाकर रखती थी।

बाजीराव माहिम के पास से होता हुआ तारापुर के पास पहुंचा। खाड़ी के मुहाने पर तारापुर की गढ़ी थी। बाजीराव की अचानक मुहिम से किलेदार हक्का-बक्का रह गया। सेना के आक्रमण से बाजीराव के नाम का आक्रमण ज्यादा खतरनाक था। रात के समय गढ़ी में सुरंगे डालकर दीवार उड़ा दी। मराठा सेना गढ़ी में प्रवेश कर गई और दोपहर तक भगवा झण्डे को गढ़ पर फहरा दिया। वहां से बाजीराव उमेरी की गढ़ी की ओर आगे बढ़ा। किलेदार ने बाजीराव के धावे का

न म सुनकर ही गढी खाली कर वसई म जाकर शरण ले ली। अर्नरा म फौज को भी माय ~ गया। दोनों स्थानो पर अधिकार करने के बाद चिमनाजी अप्पा को पुणे जाकर नारायण राव का यनोपवीत सस्कार करने और वहा उपस्थित शाहू महाराज का यथोचित सम्मान करने के लिए वापस पुणे भेजा।

पिछले दो महिना र वरसात हो रही। खाडी ।नी मे लबालब भरी थी इस कारण वसइ पर धावा नहीं बाला जा सका। पुतगाल सरकार मराठा की चौकसी के कारण महायता पहुचाने म असमथ थी। सारा टा टापू पानी स भरा था। मराठी सेना टापू के किनारे डेरा डाल पडी थी। बरसात का मौसम जाने लगा। आकाश साफ होने लगा। नालो का पानी कम पडने लगा। वसई का किलेदार सोच रहा था कि मराठो का धावा 20–25 दिनो के बाद होगा तब तक सहायता पहुँच जायगा। 5–7 दिन मुश्किल म गुजर होगे कि मराठी सेना रात को आरावी टापू पर उतर गयी और सूर्योदय के साथ-साथ किले की घेराबन्दी करनी शुरू कर दी। खाद्य सामग्री और बारूद का आना असभव हो गया। पहले वरसात होन के कारण खाडी क रास्त म सामान आना मुश्किल था और अब घेराबन्दी के कारण।

मराठो ने किले के पीछे की तरफ 10–12 जगह बारूद की सुरग डालकर रात को पलीतो म आग लगाय दी। किले की दीवार न टूटकर बहुत सारे माग बना दिये। मराठी सना दाखिल होन लगी। किलेदार न सनिको व सभी बच्चो की प्राणो की सुरक्षा का ध्यान म रखकर सफेद झडा किले पर फहरा दिया और अस्त्र-शस्त्र डाल दिये। सलाह-मशविरा शुरू हो गया। पुतगाली किलेदार किले को खाली कर औरतो और बच्चो को लेकर सुरक्षित रूप स बाहर निकल गया। सनिक सामान छोडकर किले को खाली कर दिया। भगवा झडा फहरा दिया। सारी सना निकल गई।

गोविंदराव का हरकारा सतारे से रवाना होकर पुणे पहुंचा। वहां उसे पता चला कि बाजीराव वसई पर धावा मारने गया है। वह वहां से वसई पर पहुंचा। वसई के किले पर बाजीराव का दरबार लगा था। हंसी मजाक चल रही थी। बाजीराव के सैनिक सचालन का इतना प्रभाव पड़ा कि सभी मराठा सरदार चकित रह गये। बाजीराव को साधुवाद दिया मराठा का भगवा झंडा मुम्बई से लेकर वसई तक फहराने लगा। सिद्दी और पुर्तगाली दोनो ही मराठा सीमा से दूर हो गये। मराठा राज्य की सीमा अरब सागर में लग गई। हरकारे ने सबके राजी खुशी के समाचार लिए और बताया कि शाहू महाराज व किल्दार गोविंदराव काफी चिंतित हैं। आपका खरीता पिछले कई महीनों से सारा नहीं पहुंचा।

आपका स्वास्थ्य तो ठीक है? आप कुछ अस्वस्थ लग रहे हैं। नहीं तो, धावे के कारण आराम नहीं कर सका। इसकी थकान है। बाजीराव डेरे पर आया हरकारे ने बताया कि पुणे में षडयन्त्र चल रहे हैं। शाहू महाराज आपको नाराज नहीं करना चाहते हैं। नीचा मुंह करके हरकारा बोला— मैं आपके साथ नमक हरामी नहीं कर सकता। पुणे में यह अफवाह जोरों पर है कि यज्ञोपवीत संस्कार के बाद शाहू महाराज के पुणे से विदा होने के बाद मस्तानी को कैद कर लिया है या मार दिया है। मैं मस्तानी महल के पास गया। वहाँ कड़ा पहरा है। मुझे ऐसी शंका है कि वह वहीं कैद है।

मेरा गुनाह माफ हो।

तुम जाओ और किसी को कुछ कहना नहीं। कल तुम को खरीता मिल जायगा' इस सूचना ने बाजीराव के पैरों के नीचे की जमीन ही खिसका दी। वसई का किला घूमता प्रतीत होने लगा। डेरा घूमने लगा।

बठा से निकल कर सोन के कमरे म गया दासी बाजीराव को अचानक इधर जाते देखकर सशंकित हुई और बोली– सब ठीक तो है ?"

'हां पलंग पर बठता हुआ बाजीराव निराश बोला– सामान ले आवो।

इस वक्त'।

'हाँ

दासी ने सामान लाकर रख दिया। बाजीराव पीने लगा और तब तक पीता रहा कि जब तक प्याला हाथ से गिर नहीं गया। दासी ने दो तीन बार बीच म रोकने का प्रयत्न किया परन्तु बात नही बनी। बाजीराव रात भर पीता रहा और बड बडाता रहा। दासी समझ गई कि मस्तानी के साथ कोई अनहोनी हो चुकी है। जिस कारण बेहद परेशान है। रात भर बाजीराव बठता रहा सोता रहा बडबडाता रहा कि मेरा कलेजा कहाँ है ? प्रान द कहां है ? उसके सारे प्रश्नों का उत्तर एक ही था कि कहीं नहीं है। जीवन म सुख कहां है ? मैं तो पच पचकर मरने वाला हूँ। जिसे तुम अपना मानते हो वे सब विरोधी हैं।

मस्तानी तुम्हें कितनी बार समझाया था कि तुम पीछे मत रहो। तुम इनको पहचानती नहीं हो। तुम्हारे साथ इन्होंने कितना दुर्व्यवहार किया है। मैं भी इनको इतना गिरा हुआ नहीं समझता था कि मेरे पीछे तुम्हारी यह गति करेंगे। मेरा तो सारा आधार ही निकल गया है मैं न तो किसी से शिकायत कर सकता हूँ और न उलाहना दे सकता हूँ। मेरा कौन ? जो लोग मेरे सुख को दुख मानकर चलते हैं उनसे किस बात की आशा ? बाजीराव पश्चाताप करता रहा। कभी उठकर बैठ जाता कभी पीने लगता एक गहरी वेदना थी। रात पहाड़ की तरह काली व भारी थी जो कटती ही नहीं थी। दासी हथेली पर मालिश कर रही थी। दासी को ऐसा लग रहा था कि बाजीराव एक रात में ही बूढ़ा हो गया है। सुबह जाकर आंख लगी। उसके जीवन के प्रति जो आस्था और विश्वास था वह उठ गया। बाजीराव सुबह उठा तब तक एक प्रहर दिन चढ़ गया था।

उस के दिल म हलचल हो उठी कि बाजीराव के क्या हो गया। समुद्री वातावरण अनुकूल नहीं पडा इस कारण तबियत खराब हो गई। भूतनी पीछे लग गई। राजवैद्य देखने आया। शुश्रूषा शुरू हुई। झाड फूक भी की गई परन्तु कोई लाभ नहीं हुआ बाजीराव 2–3 दिनों तक सोचता रहा कि क्या करूं और क्या नहीं ? सुमन्त के सिवाय किसी से मिला भी नहीं। बाजीराव सोच रहा था कि स्वप्न भी कितने सुन्दर होते हैं जो इहलोक और परलोक से मिला देते हैं। ये स्वप्न मुझे भी जीवन पर्यन्त आते ही रहें। मुझे और कुछ नहीं चाहिए। मैं रात दिन इनको देखता रहूं।

"मैं मस्तानी को देखता रहूँ। परन्तु स्वप्न भी संसार की तरह असत्य हैं। स्वयं आयेंगे और छूते ही अदृश्य हो जायेंगे। कल्पना की तरह मधुर हैं इसलिए इनका आना भी जरूरी है। मस्तानी तुम मेरे सामने साकार होती रहो मैं उस निराकार को स्वयं में साकार देखकर कल्पना के सहारे निशा को व्यतीत कर सकूं। मैं जानता हूं स्वप्न में तुम्हें देखना उतना ही दुखदायी है फिर भी मैं देखना चाहता हूं।

कब सूर्योदय हुआ और कब अस्त बाजीराव को कुछ भी पता नहीं चला। स्वप्नों के अतीन्द्रिय सुख में पांच दिन निकल गये। दृढ निश्चय करके बाजीराव उठा। महा प्रलयकारी शिव की आराधना की। बाल पत्र चढाए। स्वस्थता का साग लेकर दरबार किया। सबने सुखद स्वास्थ्य की कामना की। खराते आय पडे थे उनके उत्तर भिजवाये। किलेदार की नियुक्ति करके कुछ सुरक्षा सेना को वहां छोडकर बाकी के सभी सामन्तों को वापस पुणे जाने का आदेश दिया।

बाजीराव ने तय कर लिया कि दिल के दर्द को खुद ही भोगना है। राष्ट्र का काम मात्र नियम चलाना है। दिन भर स्वस्थ मन से राष्ट्र का काम करना है और रात को एकान्त में बैठ कर सिर धुनना है। मराठों को मेरे दुख से किसी प्रकार का लेना–देना नहीं। अगर ज्यादा प्रेम

करूगा तो सात्त्वना के दो शब्द कहेंगे। कष्टों के लिए अपशब्दों का व्यवहार करेंगे। इससे न तो मेरा घाव भरेगा और न उनको किसी प्रकार का नुकसान होगा।

दूसरे दिन बाजीराव पुणे के लिए रवाना हो गया। मराठों का पुर्तगाली सेना से काफी वर्षों से संघर्ष चला आ रहा था। मराठा राज्य को सदा ही पुर्तगालियों से खतरा बना रहता था। छत्रपति शिवाजी के समय से यह संघर्ष चला आ रहा था। पुर्तगाली जब भी कमजोर पड़ते तो सिद्दी और अंग्रेज उन्हें सहयोग देकर मराठी राज्य को खतरा पैदा कर देते थे। सिद्दी भाइयों के पराजित हो जाने से मराठों की शक्ति काफी अधिक हो गई। उत्तरी भारत के विशाल अभियानों और सेना के लम्बे प्रयाणों के कारण मराठा सेना कुशल व अनुभवी हो गई। पेशवा के प्रभावशाली व्यक्तित्व व कुशल नेतृत्व के कारण पुर्तगालियों को बम्बई खाली करनी पड़ी और उस पर मराठों का भगवा झंडा फहराने लगा। इस विजय से मराठा राज्य की पश्चिमी सीमा अरब सागर से आकर मिल गई। बाजीराव सैनिक अभियानों में कहीं भी असफल नहीं रहा। ज्यों-ज्यों बाजीराव ऊंचाइयों को छूने लगा मराठी समाज ने उतनी ही निर्ममता से उसके पर काटने शुरू किए। उसने सामरिक दृष्टि से विजय प्राप्त की परंतु समाज में हार गया। अपनी समस्त पीड़ा को गरल की तरह पीकर अधरों से मुस्कान बिखेरता रहा। छाती के गहरे घावों को इतमिनान से सहन कर लिया और दूसरों के सामने उफ तक नहीं की। विजय के उन्माद में सेना पुणे की ओर जा रही थी। बाजीराव सेना के पीछे था।

पुणे से दो पड़ाव पहले ही जंगल में बाजीराव की सेना पड़ाव डाले ठहरी हुई थी। सेना पहाड़ की आधी चढ़ाई पार कर चुकी थी और आधी चढ़ाई शेष थी। चारों ओर का पानी इकट्ठा होकर एक नैसर्गिक तालाब का रूप ले लिया था। सेना उसके पास के जंगल में बिखरी पड़ी थी। जगह जगह अलाव जल रहे थे। धुआं ऊपर उठ रहा था। कुछ सैनिक नहा रहे थे।

घोडो के मालिश कर रहे थे कई खाना बना रहे थे। बाजीराव का डेरा सेना से कुछ दूर लगा हुआ था।

दो घडी पहले ही सेना ने यहा आकर डेरा डाला था। बाजीराव अभी तक पहुँचा नही था। एक प्रहर रात तक पहुँचने की आशा थी। आकाश दीप जला दिया गया था। मशालची मशालें जलाकर खडे थे। आग जल रही थी। सर्दी का प्रकोप धीरे-धीरे बढ रहा था। सतारे से आया हुआ हरकारा कई रक्षको के साथ बातचीत कर रहा था। सभी हंसी के मूड मे थे। बसई की विजय ने मराठो को खुशी के पारावार मे धकेल दिया था। सभी रक्षक बसई के अभियान के समय किए गये अपने-अपने गौरवपूर्ण कार्यों का बखान कर रहे थे। रात प्रहर एक चली गई थी। शुक्ल पक्ष था। चन्द्रमा पहाडी की टेकरी के पीछे होता जा रहा था ऐसा मालुम पडता था कि शुक्ल पक्ष की पचमी है। हरकारे ने आकर सजग किया कि पेशवा महाराज पधार गये है। रक्षक जागरूक हो गये और बैठक मे जाकर शमऐ जला दी। सब सुरक्षा की लिखापढी की सदूक ठीक की। थोडे समय के पश्चात् बाजीराव अपने अमले सहित पधार गये।

बाजीराव थोडी देर विश्राम करके बैठक मे आकर बैठ गये। तब तक राव सुमन्त भी आ गया। तन्नरी मे से पान चबाते हुए बाजीराव खरीता सुन रहा था शाहू महाराज ने लिखा था कि भोपाल के युद्ध के समय निजाम के लडके नासिर जग ने जो सेना की भर्ती की थी उसको पराजय के बाद भी कम नही किया था। वह मौके की तलाश मे था। पुर्तगालियो ने बेसिन के घेरे का समाचार नासिर जग के पास भिजवाया कि मराठी सेना ने बाजीराव के नेतृत्व मे वसिन पर घेरा डाल रखा था। इस खबर की तहकीकात करके बाजीराव को पुणे से दूर मानकर नासिर जग ने पुणे पर आक्रमण की तयारी की है। इसलिए तुम जैसी भी स्थिति मे हो पुणे की ओर रवाना होकर उसकी सुरक्षा की व्यवस्था करो।

नासिर जग चुपचाप औरगाबाद मे रवाना होकर गोदावरी नदी पार करके मराठा राज्य की सीमा म प्रवेश करेगा । उसकी गतिविधियो के समाचारो का भुगतान समय-समय पर होता रहेगा ।

बाजीराव कुछ समय तक सोचता रहा । फिर धीरे से कुछ कहा-- राव सुमन्त ने ताली बजाकर रक्षक को बुलाया और राव तुकोजी अनन्त को इसी समय बुलाकर लाने का कहा । तब तक बाजीराव ने पुणे के लिये चिमाजी अप्पा के लिए खरीता लिखवाया कि अभी की अभी सेना लेकर मेरे पीछे आवें । मैं बुरहानपुर होता हुआ नासिर जग के पीछे से होता हुआ औरगाबाद पर धावा करूगा । सेना म यह खबर कर दो कि बाजीराव औरगाबाद पर धावा मारने चल पडा है । मील करके यह खरीता इसी समय पुणे के लिए रवाना कर दिया गया । तब तक विश्वासी सामन्त तुकोजी अनन्त आ गये । उन्होने मुजरा किया । बाजीराव ने पान का बीडा लेने का इशारा किया । वे बीडा लेकर पास म बैठ गये । बाजीराव ने सुमन्त की ओर ईशारा किया राव सुमन्त ने सतारा से आया खरीता पढकर सुनाया । सामन्त तुकोजी चिन्ता म आ गये ललाट पर चिन्ता की गहराई आ गई ।

बाजीराव ने धीरज बधाते हुए कहा-- 'आप चिन्ता न करें । कल सुबह आप सेना लेकर औरगाबाद के उत्तर-पश्चिम से निजाम के राज्य पर तेजी से धावा मार। सुमन्त की ओर देखकर बाजीराव ने कहा-- अपनी सेना कल सुबह तेजी से राव माधो घोरपडे के नेतृत्व म पुणे की दाहिनी ओर छोडकर बुरहानपुर के बायी ओर छोडकर औरगाबाद के मार्ग पर लावें और गोदावरी नदी को पार करने की व्यवस्था करें। मैं पीछे पीछे आ रहा हूँ । सामन्त तुकोजी अनन्त के जाने के बाद राव माधो घोडपडे को बुलाया और सारी बात समझकर विदा किया ।

नासिर जग तेजी से गोदावरी नदी को पार करके पुणे की तरफ आगे बढने लगा तो उसे सूचना मिली कि मराठी सेना औरगाबाद की ओर

बुरहानपुर हाती हुई नमना पार करके धावा मारने के लिए तजी मे बढ़ रही है श्री तुकाजी भ्रनत श्रौरगाबाद पर उत्तर–पश्चिम से धावा मारने के लिए रवाना हो गय हैं। खोजी स यह समाचार नासिर जग को गोदावरी नदी पार करके मराठा राज्य के गावो को, कस्बो को तहस–नहस करता हुआ पुणे की भ्रोर तजी स बढ रहा था तब मिला। यह समाचार सुनत ही नासिर जग के होश उड गय और भ्रपनी सना के भारी भरकम सामान को पीछे छोड तेजी स वापस औरगाबाद की भ्रोर लपका। गोदावरी नदी को पार करत ही मराठा का हरावल दस्ता सना के आग पीछे घूमने लगा। लगा उठन लगा कि मराठा का घरा तेजी से चारो भ्रोर कस रहा है। मुश्किल स एक दिन निकला होगा कि नासिर जग की सेना मराठा स घिर गइ। टिडडी दल की तरह बढ़ती हुई मराठी सना को देखकर नासिर जग के सनिक मैदान छोडकर भागन लग। नासिर जग की सना का माग अवरुद्ध होते ही खाद्य सामग्री घास व पानी का भ्रभाव हो गया। पशु और भ्रादमी भूख व प्यास स मरन लग। हारकर नासिर जग न सफद झडा फहरा दिया। सधि की बात के लिए हरकारा खरीता लेकर भ्राया।

बाजीराव न दरबार लगा रखा था। सभी सामत बठे थ। हरकार न खरीता देकर अज की कि सना व पशु भ्रौर सनिक पिछल चौबीस घट स प्यासे ह। प्यास स मरने लग हैं। इसलिए कृपया भ्राप उनके लिए रसद पानी की व्यवस्था करावें। हम सब भ्रापके भ्राभारी होंगे। पान चबा I हुआ बाजीराव मुस्कुराया। सभी सामन्त मुस्कुराय। बाजीराव न इसकी स्वीकृति प्रदान की हरकारा खुशी को रोक नहा सका भ्रौर बोला– भ्रापन परवरदिगार की तरह हम सबको जीवनदान दिया इसलिए हम भ्रापके शुक्रगुजार है।

इस खबर के साथ ही नासिर जग के हजारो सनिक युद्ध का सामान छोडकर भ्रपन घोडा को लेकर नदी की भ्रार जाने लगे। नासिर जग

क वफादार मामन्त ही अन्त म रह गये। सन्धि की वाता कई दिनो तक चलती रही। अन्त म बाजीराव न जो शर्तें लगाई उन्हे नासिर जग न मानली।

नासिर जग भर दरबार म बाजीराव से मिला। सन्धि की शर्तों पर हस्ताक्षर करके औरंगाबाद की तरफ चल पडा। नासिर जग की हालत मानमपुर्सी म जाते हुए लोगा सी थी।

उन दिना म दिल्ली की हालत काफी खराब थी। दिल्ली दरबार म इरानी तुरानी, अफगानी और हिन्दुस्तानी मुसलमान आपस म लडत थ। गृह-कलह जो फर्रुखसियर से शुरु हुई थी वह अब तक बन्द नही हुयी। बार-बार वजीर पलटत और गृह कलह कभी सुनकर कभी दबी चलती रहती। प्रशासन की हालत बहुत खराब थी। सेना का प्रभाव वजीर क अनुसार घटता बढता रहता। सेना के स्वार्थी अफसर मनसबदारो क साथ जुडे हुए थे। इसी स्थिति मे दिल्ली पर नादिर शाह का आक्रमण हुआ। मुगल मनसबदारो न तीममारखा बनकर उसके साथ युद्ध किया परतु बुरी तरह हार गय। लाखो सैनिको की हत्या हो गई। नादिरशाह के सनिको ने दिल्ली के बाशिन्दों को खूब लूटा बेईज्जती की और सडको को लाशो स भर दिया, नालियो म खून बहने लगा। दिल्ली का बूचडखाना बना दिया। नादिरशाह ने लाल किले को खूब लूटा और धन लेकर मुगलो को दिल्ली वापस लौटाकर चला गया। अपने पीछ हत्या अकाल छोड गया।

शाहू महाराज को नादिरशाह क आक्रमण की सूचना मिली तब उन्होन बाजीराव को दिल्ली की सुरक्षा करन के लिए लिखा परतु तब तक नादिर शाह मुगलो के साथ सन्धि करके वापस जान की तयारी मे था। नादिरशाह वात्याचक्र की तरह आया और तूफान की तरह चला गया।

मौत की छाया

नासिर जग के साथ हुई संधि के अनुसार पेशवा को हडिया और खरगान के जिले मिले थे। बाजीराव इन पर अधिकार करने के लिए चल पड़ा। राजीराव नर्मदा नदी के रावेर घाट के पास आकर ठहरा।

रावेर घाट नर्मदा के दक्षिण तट पर था। बाजीराव इस लम्बे प्रयाण में काफी थक गया था। घुन लगी हुई लकड़ी के समान था। फाल्गुन उतर रहा था। जग पर धमाल गाई जाने लगी थी। वसन्त ने अपने चरण धरती पर रखने शुरू कर दिये थे। आम के पेड़ बौर से लदालूम हो उठे थे। उस पर कोयल बैठकर बोलने लगी थी। बौर की मधुर सुगन्ध हवा के साथ फैलने लगी थी। ऋषियों के मन भी चंचल होने लगे थे। प्रकृति का अनवृत सौंदर्य मुखर हो उठा था। बसन्त के आने के साथ प्रकृति झाला देने लगी थी। नर्मदा का जल शीतल व साफ-सुथरा था। बरसात की गन्दगी बह कर चली गई थी या तल में बैठ गई थी। उसके तटों पर ऋषियों की तरह मस्त सुबह शाम पाठ करते रहते थे। मौसम सुहावनी ठंड लिए हुए था।

सूर्यास्त के पूर्व ही बाजीराव नर्मदा के तट पर आकर बैठ जाता और एक प्रहर रात तक वहां बैठा रहता। एक गहरी उदासी के साथ नर्मदा को देखता रहता था। नदी में उठती लहरें झाला देकर बाजीराव को

बुलाती रहती थी। आओ हमारी तरह सभी दुखो को छोडकर वतमान के आनन्द को मत भूला। परन्तु बाजीराव का आनन्द लम्बे समय से उसका दामन छोड चुका है। वह दिन को काम में गुजारता है और रात को माधवी म। इस कारण स्वास्थ्य धीरे–धीरे खराब होता जा रहा था। पीला पडता चेहरा मस्तानी के उबटन सा लगता था।

बाजीराव गहरी निराशा से घिरा गुमसुम रहता। बहुत ही कम बोलने लगा। सारी सेना पुणे के लिए रवाना हो चुकी थी। कुछ अगरक्षको को उसने अपने पास रोक रखा था विपदाओ से घिरा बाजीराव सुमन्त व दासी के अलावा किसी से बात नही करता था। हल्का बुखार भी रहने लगा था। छाती मे नासूर था जो रात दिन बढता जा रहा था।

दिन ढल चुका था। बाजीराव बठा–बठा नदी की ओर देख रहा था। नदी का पानी शान्ति के साथ तटो से टकराता बह रहा था। मेढक टर–टर करके पाठ कर रहे थे। खद्योत तट के पास उडते हुए गहन अन्धकार म आशा की किरण की तरह प्रकाश फला रहे थे। बढती ठड को ध्यान मे रखकर सुमन्त ने ऊनी चादर बाजीराव को ओढा दी। तब बाजीराव को ध्यान आया कि कोई पास म है। अग रक्षक थोडी दूर पर खडे थे। आकाश मे झिलमिलाते हुए तारे स्मृतियो को ताजा कर रहे थे। आखे अन्दर धँसती जा रही थी। होठो पर पपडिया जमने लगी थी। पलको पर जीवन की गहरी वदना छाई हुई थी। बाजीराव ने कहा– आओ सुमन्त चलें।" कहकर खडा हो गया और धीरे धीरे डेरे की ओर चलने लगा। सुमन्त भी साथ–साथ चलने लगा। बठक जो सूनी थी उसमे होता हुआ जनानखाने के तम्बू म चला गया। दासी को सकेत किया। दासी मदिरा का प्याला भरकर देने लगी। बाजीराव पाता रहा जब तक प्याला हाथ से गिर नही गया।

गोदव के सहारे लेट गया दासी ने मुह पोंछ कर साफ किया। बाजीराव स्वप्न दखने लगा। कब सुबह हुई और दिन चढा कुछ पता नही चला। दासी ने राजवैद्य को बुलाकर दिखाया। बाजीराव का शरीर बुखार से तप रहा था। कुछ होश म था। वैद्यराज ने मात्रा घसकर मुह म सीपी मे डाली बाजीराव को थाडा होश आया। बुखार कम हुआ। वैद्यराज पूरे दिन भर दखते रहे दवाई देते रहे। शाम तक बुखार कम हुआ तब वैद्यजी का मन खुश हुआ और सुमन्त से कहा चिन्ता की कोई बात नही है। 2-4 दिनो म बुखार उतर जायगा। सुबह बाजीराव थाडा आराम महसूस करन लगा। दवाई दी और कुल्थी की कढी दी। बाजीराव सोचने लगा 'जीवन के सफे कितने छोटे है और अनुभव बहुत। अगर उनको लिखने बैठो ना सफे खत्म हो जायगे और अनुभव पूरे नही होगे। आज मुझे किसी की मेहरबानी पर जिन्दा रहना पड रहा है। मैं इनसे माग नही करूगा। मेरी कृपा के सभी मोहताज थे मैं आज किसी का भी मोहताज नही होना चाहता। मैं उऋण हू। वैद्यराज और सुमन्त ने मना किया परन्तु उसने सुरा पीना कम नही किया। इससे स्वास्थ्य दिन-प्रतिदिन गिरने लगा। आज थाडा आराम था। इस कारण तम्बू के बाहर शाम को खुले म बैठा। बाजीराव कभी नदी की ओर देखता तो कभी तम्बू पर उड रहे भगवे झंडे को कभी आकाश की ओर। कभी अपने पगो की ओर। निराशा भरे शब्दो म बाजीराव कहने लगा सुमन्त इतिहास की पुनरावृत्ति होती है। परन्तु नायक पलटा हुआ होता है। धरती कभी भी नही पलटती है।

नही महाराज।' यह ध्रुव सत्य है। पीछे आने वाली सन्तान कहेगी कि उनके पूर्वजो ने क्या किया है। मेरी इच्छा है कि आने वाले कहे कि पेशवा के घोडो की टापें यहा तक सुनाई दी हैं। समय पर मेरा हस्ताक्षर रहे। परन्तु अब मैं थक गया हू। नर्मदा के तट पर मुझे शान्ति मिलती है। मैं अब इसके पास ही रहू। नायक ने आकर मुजरा किया। सुमन्त ने सकेत से पूछा-कोई खास बात है ? पण्डित अप्पा का सदेश लेकर हरकारा आया है।'

"भेज दो'।

दरबार ने आकर मुजरा किया और कहा कि पण्डितजी नासिर जग म मिलकर आपकी सेवा म उपस्थित होना चाहते हैं और कोई आदेश हो तो सबके ललाट पर चिन्ता की रेखाएं आने लगी और बाजीराव के मुह की ओर देखने लगे। एक गहरा सन्नाटा हो गया। बाजीराव के चेहरे पर एक साथ कितने भाव आते और जाते रहे। परन्तु उसने विचारों को दबाकर मुस्कुराने की चेष्टा करते हुए कहा– आने दो। तब सब राजी हुए'। सुमन्त को खुशी हुई। सबने सोचा अब चिमनाजी अप्पा आग्रह करके बाजीराव को पुणे ले जायेंगे। बाजीराव जनाने तम्बू म चला गया। बाजीराव के तम्बू म विशेष हलचल थी। सारी व्यवस्था नियमानुसार हो रही थी। पिछले कुछ महीनो से व्यवस्था की उपेक्षा थी। उदासी थी। ऊपरी चौकसी थी। परतु आज सारे काम की जाच हो रही थी जैसे सब आनन्द का स्वागत करने जा रहे थे। एक मुस्तदी था। सूर्यास्त के पहले अप्पा के खास पायगे आकर सूचना दी कि अप्पाजी पधार रहे हैं। चिमनाजी अप्पा के आने पर राव सुमन्त ने दरवाजे तक जाकर स्वागत किया और तम्बू म लाये। बाजीराव गोदड के सहारे बैठा-बैठा पान चबा रहा था। शमा जल रहा था। विघ्न-हरण के आगे धूप रखा हुआ था। धूप की हल्की सुगन्ध तम्बू म फैल रही थी।

बाजीराव को देखते ही अप्पाजी के मुह पर बहुत सारे विचार एक साथ आ गये। प्रणाम करके बैठ गया और सुमन्त की ओर देखा। आपका स्वास्थ्य ठीक नही बुखार आ रहा है। इतना सुनते ही चिमनाजी का चेहरा अनेक चिन्ताओं से घिरने लगा। राजवैद्य की ओर देखा।

दवाई चल रही है। पूरा फायदा नही हो रहा है। फिर बाजीराव की ओर देखकर बोला– 'आपका यह हाल और मुझे

बात काटकर बाजीराव बोला– कोई खास बात नहीं है। 5 7 दिनो म सब ठीक हो जायगा केवल हरारत है। तुम्हे सूचना कुछ

नाराजगी जाहिर करते हुए कहा–" तब तक दासी पानी व पान के बीडे लेकर आ गई। सबने पानी पिया और पान के बीडे चबाने लगे। थोडी देर बातें होती रही। सबको विदा कर खाना खाने के लिए जनान खाने जाने के लिए तयार हुए। सुमन ने बाजीराव का सहारा देकर खडा किया और जनानखाने म पहुचाया।

खाना खाने के बाद बाजीराव अपने मान के तम्बू म गया। प्याला और मदिरा रखी हुई थी। बाजीराव चुस्किया लेने लगा और कहने लगा– बीमारी की क्या सूचना देता? तुम्हे सब मालूम हैं। तुम भार नानक यानी तुमने नानक को शिखण्डी बनाकर जो किया। मेरी पीठ म जो छुरी मारी उसको मैं न तो किसी से कह सकता हू और न तुम लोगो के विरोध म जा सकता हू। मेरे जाने के बाद जो घटना घटी वह सब मुझे मालूम हैं। तुम मेरे पर धर्म के नाम इतना सगीन प्रहार करोगे यह मैंने नही सोचा था। मैं मराठा राज्य की साख रखना चाहता था। मेरी दृष्टि मराठा राज्य के निर्माण की थी। मैं खून देकर इसका निर्माण करना चाहता था। मैं इसी प्रयत्न म लगा रहा। यह मेरा लक्ष्य है। जब तक जिन्दा हू यही मेरा आधार है मेरा लक्ष्य रहेगा।

मुझे पता है कि मेरे साथ मेरा साथ छोड चुके हैं तो मैं कायर हो गया हूँ सोच कर फिर बोला– अप्पाजी के साथ जब दिल्ली गया था। सम्राट से रात भर जोर–जोर से बातें होती रही। हुसनअली को पकडने आग बढा तब सम्राट भाग कर जनानखाने म जाना चाहता था। उसने तलवार निकाल कर भागते हुए सम्राट पर वार किया। देहरी पर उसके दो टुकडे होकर बिखर गये। सारा स्थान खून से भर गया। सम्राट के खास–खास मर्जीदान खडे थे परन्तु एक ने भी विरोध नही किया। किसी का भी हाथ तलवार की मूठ पर नही गया। सम्राट की आखें दया की भीख माग रही थी। परन्तु वहा सब निर्दयी थे। आज मेरी यही दशा है। मेरे हाथ मेरा साथ छोड चुके हैं। झूठे धार्मिक दम्भ के पीछे

मेरी हत्या की योजना है। ' चुस्किया साथ-साथ लेता जा रहा था। क्या मुझे पाप और पुण्य के फल का पता नही। थोडी देर ठहर कर फिर बोला " अगर मैं तुम लोगो जैसा होता तो पुणे को खाक मे मिला देता। परन्तु मैंने इसके निर्माण का बीडा उठाया और उसको पूरा किया। "बाजीराव ने दासी की ओर देखा उसने फिर प्याला भर दिया। चुस्कियां लेकर फिर कहने लगा-" जीवन एक प्याले के समान है। नह से होठो से लगाता है परन्तु उपयोगिता के बाद फक दिया जाता है। थोडा ठहर चुस्की ली और बोला- मैं भी तुम लोगो जैसा स्वार्थी होता तो आज पुणे का नामो निशान नही मिलता। तुम लोगो का पता नही होता। सेना मेरे साथ थी। परन्तु मैं मेरे घर को नही उजाडना चाहता था। मेरे सामने एक अहम् सवाल था- गर्व से सीना फुलाकर कहा- छत्रपति शिवाजी महाराज के स्वप्न को साकार करू। जो काम वे करना चाहते थे परन्तु गृह कलह के कारण नही कर सके और अकाल मृत्यु को प्राप्त हो गये।' बाजीराव हाफने लगा। चिमनाजी उठकर सहारा देने की कोशिश की तो बाजीराव ने हाथ से ईशारा करके रोक दिया। दासी पीठ पर हाथ फेरने लगी। प्याला खाली करके दासी की ओर देखा। उसने फिर भर दिया चुस्की लेकर फिर बोला- औरंगजेब सारे मराठवाडे को शमशान बनाकर चला गया। आज मैं भी अधूरा स्वप्न लेकर चला जाऊँगा। मैं मेरे एक हाथ से दूसरा हाथ नही काटना चाहता।

मेरी छाती और पीठ घावो से भरी है और सारा शरीर मवाद से सड रहा हैं। उस पर अब तुम लोगो का हाथ नही लगना है। मेरी शान्ति नमदा के तट पर है। तुम जाओ। अपना काम सभालो। चिमनाजी अप्पा इतने समय तक जमीन कुरेदता रहा आखें। पानी से भरी थी। होठ सिले हुए थे। प्रणाम करके पश्चाताप की आग मे जलता हुआ बाहर निकला। बैठक मे सुमन्त और राज वैद्य बैठे थे। दोनो बैठक के बाहर छोडने आये। जिज्ञासा दोनो की आखो मे थी। घोडे पर चढते हुए चिमनाजी अप्पा ने

कहा– "मैं जल्दी वापिस आ रहा हूं। आप लोगों के भरोसे छोड़ कर जा रहा हूं। गला भरा हुआ था। आंखें सजल थीं। आत्मग्लानि से जल रहा था। घोड़ा धीरे धीरे पड़ाव से बाहर हो गया। सवार पीछे-पीछे चल गये।

दासी की चिल्लाहट सुनकर दोनों भागते हुए अन्दर गये। बाजीराव बेहोश हो गया था। प्याला गिर गया था। मदिरा चारों ओर बिखर गई थी। मुंह से झाग निकल रहे थे। दोनों ने संकेत किया कि अप्पा को वापस बुलावें। दासी ने बताया कि मना कर गये हैं। सरदार सुमन्त की ओर देखकर कहा– आपको ध्यान है।

वैद्यराज ने सीपी से मात्रा दी जिसका थोड़ा असर हुआ। नाड़ी साधारण चलने लगी। थोड़ी देर बाद बाजीराव आंखें खोलीं। चारों देखकर बड़ा सन्तोष हुआ। उसने हाथ से इशारा किया, सभी लोग वहां बैठ गये। शारीरिक दुबलता बढ़ती गई। चेतना क्षीण होती गई और शनिवार के दिन अर्द्धरात्रि को बाजीराव इस संसार को छोड़कर चला गया। सभी रोने लगे।

× × × ×

मस्तानी! मुझे पहचाना? मैं वही पगला हूँ जो एक रोज बुंदेलखण्ड में तुम्हें लेने आया था। आज फिर इस संसार के परिभ्रमण से मुक्त करने आया हूँ। 'आलीजा।' मुझे

मुझे सब मालूम है। अब वक्त नहीं है जल्दी करो। बहुत देरी कर दी।"

"नहीं। मेरी लाश नर्मदा के दक्षिणी तट पर पड़ी है। जल्दी करो जलाने की तैयारी है।"

मस्तानी के शरीर में से एक प्रकाश की किरण निकलकर दूसरी किरण में मिल गई। दो आत्माएं अनन्त में मिल रही थीं।

शनिवार बाड़े पर मौत का मातम छा गया। औरत जोर-जोर से दहाड़ मार कर रो रही थी। राधाबाई का स्वर सबसे ऊंचा था। वह रोती हुई कह रही थी कि मेरे बेटा मैंने किसके काले चाबे हैं कि आज तू मुझे छोड़कर चला गया।

रामनिवास शर्मा

जन्म तिथि 1–1–1931

शिक्षा एम० ए०, बी० एड० प्रभाकर।

पुस्तक व पुरस्कार –

हल्दी रात (कहानी संग्रह) पुरस्कृत सन् 1972–73

काळ भैरवी (तान्त्रिक उपन्यास) श्री विष्णुहरि डालमिया
नई दिल्ली पुरस्कार से पुरस्कृत सन् 1982

मासल (ऐतिहासिक उपन्यास) राजस्थानी भाषा साहित्य एवं
संस्कृति अकादमी, बीकानेर से सर्वोच्च पिरथीराज
राठोड़ पुरस्कार से पुरस्कृत सन् 1983–84

चाद चढयो गिगनार (कहानी संग्रह) सन् 1992

बाजीराव पेशवा मराठाकालीन ऐतिहासिक उपन्यास)
सन् 1992

साहित्य अकादमी नई, दिल्ली से प्रकाश्य –

1 राजस्थानी लोकगाथा

2 श्री अगरचन्द नाहटा

विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में शोधपूर्ण निबन्ध निकलते रहते हैं।

आकाश वाणी से कहानियाँ व वार्ताएं प्रसारित होती रहती है।

संयुक्त सम्पादक 'वचारिकी त्रैमासिक शोध पत्रिका बीकानेर

उप निदेशक भारतीय विद्या मन्दिर शोध प्रतिष्ठान, बीकानेर

पता पारीक चौक बीकानेर (राजस्थान)